शुक्ल पक्ष, 23 वर्ष, अंक 166 पृष्ठ 08 मूल्य 3.00

अखंड भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज | शुक्रवार 12 जुलाई 2024 | विश्व निर्माण एवं मानव विकास को दुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

चारधाम तीर्थयात्री अब ई-स्वास्थ्य धाम पोर्टल पर अपना आयुष्मान भारत स्वास्थ्य खाता खोल सकेंगे

नई दिल्ली

चारधाम तीर्थयात्री अब ई-स्वास्थ्य धाम पोर्टल पर अपना आयुष्मान भारत स्वास्थ्य खाता (आभा) बना सकेंगे। गुरुवार को ई-स्वास्थ्य धाम पोर्टल अब आयुष्मान भारत डिजिटल मिशन (एबीडीएम) के साथ एकीकृत कर दिया गया है। उत्तराखंड सरकार के स्वास्थ्य और परिवार कल्याण विभाग ने ई-स्वास्थ्य धाम नामक एक पोर्टल लॉन्च किया है। ई-स्वास्थ्य धाम पोर्टल एक पोर्टल है जो चार धाम यात्रा तीर्थयात्री के स्वास्थ्य मापदंडों की निगरानी में मदद करता है। नतीजतन यह यमुनोत्री, गंगोत्री, केदारनाथ और बद्रीनाथ जाने वाले तीर्थयात्रियों की सुगम यात्रा सुनिश्चित करता है। एबीडीएम सितंबर 2021 में शुरू की गई एक "केंद्रीय क्षेत्र योजना" का उद्देश्य देश का एक एकीकृत डिजिटल स्वास्थ्य बुनियादी ढांचा बनाना है। केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने बताया कि ई-स्वास्थ्य धाम पोर्टल से तीर्थयात्रियों को कई प्रकार के लाभ मिल सकते हैं, जिसमें आभा नंबर बनाना शामिल है। तीर्थयात्री आसानी से केवल 1-2 मिनट में ई-स्वास्थ्य धाम पोर्टल पर अपना आभा 14-अंकीय नंबर बना सकते हैं।

लाइट हाउस पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए योजनाओं को दिया जा रहा है आकार : सबार्नंद सोनोवाल

नई दिल्ली

केंद्रीय पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्री सबार्नंद सोनोवाल ने गुरूवार को केरल के विझनजाम में लाइट हाउस पर्यटन को प्रोत्साहित करने के लिए आयोजित एक बैठक की अध्यक्षता की। इस मौके पर सबार्नंद सोनोवाल ने कहा कि बैठक का उद्देश्य लाइट हाउस की अद्वितीय पर्यटन क्षमता को प्रदर्शित करना और उनके ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और दर्शनीय मूल्य पर जोर देना था।

नीट परीक्षा: सीबीआई ने सुप्रीम कोर्ट को सौंपी रिपोर्ट

सुप्रीम कोर्ट ने सभी पक्षों के वकीलों की सहमति से मामले की अगली सुनवाई 18 जुलाई को करने का आदेश दिया

सिर्फ बिहार-झारखंड में पेपर लीक, जांच के घेरे में एनटीए

नई दिल्ली

नीट परीक्षा में हुई अनियमितताओं पर सीबीआई ने सुप्रीम कोर्ट में सीलबंद लिफाफे में अपनी रिपोर्ट सौंप दी है। इस अति गोपनीय रिपोर्ट में सीबीआई ने अभी तक दर्ज सात केस और उनकी जांच में हुई प्रगति का विस्तृत विवरण दिया है। इन मामलों की जांच के नाजुक मोड़ पर होने का हवाला देते हुए सीबीआई रिपोर्ट के बारे में विस्तृत जानकारी देने से बच रही है, लेकिन सूत्रों के अनुसार सीबीआई ने अपनी रिपोर्ट में नीट पेपर लीक को सिर्फ बिहार-झारखंड तक सीमित बताया है। महाराष्ट्र के लातूर, गुजरात के गोधरा और राजस्थान में कुल तीन स्थानों पर अलग-अलग तरह से गड़बड़ी के सुबूत मिले हैं, लेकिन इन जगहों पर पेपर लीक नहीं हुआ था।

बड़े पैमाने पर लीक के सबूत नहीं

सीबीआई के उच्च पदस्थ सूत्रों के अनुसार सुप्रीम कोर्ट को सौंपी रिपोर्ट में बताया गया है कि जांच के दौरान अभी तक नीट परीक्षा के बड़े पैमाने पर पेपर लीक होने के सबूत नहीं मिले हैं। इसके अनुसार झारखंड के हजारीबाग से लीक हुआ पेपर सीमित बच्चों तक पहुंचा है और उनकी पहचान कर कानूनी कार्रवाई की जा रही है। इसके साथ ही हजारीबाग में पेपर लीक करने वाले और पटना तक पहुंचाने वाले गिरोह की पहचान कर ली गई है और इसकी कड़ियों को जोड़ा जा रहा है।

पूरी साजिश में शामिल कुछ अन्य लोगों की पहचान की गई है, उनकी गिरफ्तारी की कोशिश भी जारी है। सूत्रों के अनुसार सीबीआई ने अपनी रिपोर्ट में सातों केस की जांच की प्रगति और परीक्षा की शुचिता पर उसके असर के बारे में जानकारी दी है। रिपोर्ट के अनुसार बिहार-झारखंड में जहां पेपर लीक कर परीक्षा के एक दिन पहले छात्रों को उत्तर रटाया गया था, वहीं गोधरा में परीक्षा देने वाले छात्रों को सिर्फ सही उत्तर लिखने और बाकी को खाली छोड़ने को कहा गया था, ताकि बाद में सही उत्तर भरा जा सके।

धोखाधड़ी के लाभार्थियों की पहचान करने के लिए क्या किया जा रहा

कोर्ट ने कहा कि अगर एक बार के लिए हम यह मान लें कि हम परीक्षा रद्द नहीं करते हैं तो धोखाधड़ी के लाभार्थियों की पहचान करने के लिए क्या किया जा रहा है। चीफ जस्टिस ने मेहता से कहा कि आप सरकार से पूछ कर बताइए क्या हम साइबर फोरेंसिक विभाग में डेटा एनालिटिक्स प्रोग्राम के माध्यम से यह पता नहीं लगा सकते हैं क्योंकि हमें यह पहचानना है कि क्या पूरी परीक्षा प्रभावित हुई है। क्या गलत करने वालों की पहचान करना संभव है। उस स्थिति में केवल उन छात्रों के लिए दोबारा परीक्षा का आदेश दिया जा सकता है।

आरोपियों पर की जा रही कार्रवाई

इस गिरोह के सदस्यों और इसका लाभ लेने वाले छात्रों की पहचान कर उनके खिलाफ कार्रवाई की जा रही है। वहीं राजस्थान में तीन स्थानों पर असली छात्र की जगह किसी दूसरे के परीक्षा में बैठने का मामला सामने आया है और उनके खिलाफ तीन अलग-अलग केस दर्ज किये गए हैं।

सबसे रोचक मामला लातूर का है। यहां छात्रों को सफलता की गारंटी दी गई, लेकिन उन्हें परीक्षा में सवालों का जवाब खुद देने को कहा गया।

नीट परीक्षा निरस्त करने के समर्थन में नहीं: केंद्र

नई दिल्ली

सुप्रीम कोर्ट ने नीट परीक्षा के मामले पर गुरुवार को सुनवाई टाल दी। चीफ जस्टिस डीवाई चंद्रचूड़ की अध्यक्षता वाली बेंच ने कहा कि केंद्र सरकार और एनटीए के जवाब कुछ पक्षकारों को नहीं मिले हैं और उन्हें जवाब देखने के लिए वक्त चाहिए। सुप्रीम कोर्ट ने सभी पक्षों के वकीलों की सहमति से मामले की अगली सुनवाई 18 जुलाई को करने का आदेश दिया। इस मामले में केंद्र सरकार ने मद्रास आईआईटी के आंकड़ों का हवाला देते हुए कहा है कि परीक्षा में बड़े पैमाने पर गड़बड़ी के सबूत नहीं हैं और वह नीट परीक्षा निरस्त करने के समर्थन में नहीं है। एनटीए ने भी सुप्रीम कोर्ट में हलफनामा दायर कर कहा है कि टेलीग्राम ऐप पर नीट पेपर लीक का जो वीडियो चलाया जा रहा था।

पीएम ने बजट से पहले नीति आयोग के सदस्यों और अर्थशास्त्रियों से की मुलाकात

नई दिल्ली

रूस और ऑस्ट्रिया की यात्रा से लौटने के बाद प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने गुरुवार को नई दिल्ली में नीति आयोग के सदस्यों और शीर्ष अर्थशास्त्रियों के साथ मुलाकात की। प्रधानमंत्री ने राजकोषीय रणनीतियों पर उनसे चर्चा की और आम बजट 2024-25 को लेकर उनके विचार और सुझाव जाने। नीति आयोग में आयोजित बैठक में केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण, नीति आयोग के उपाध्यक्ष सुमन बेरी, प्रधानमंत्री के प्रधान सचिव पीके मिश्रा और थिंक टैंक के अन्य सदस्य आर्थिक मुद्दों पर वार्ता में शामिल हुए और और उन्होंने प्रधानमंत्री को अपनीसिफारिशें प्रस्तुत कीं। बैठक में केंद्रीय मंत्री राव इंद्रजीत सिंह, मुख्य आर्थिक सलाहकार वी. अनंथा नागेश्वरन, अर्थशास्त्री सुरजीत भल्ला और अशोक गुलाटी तथा वरिष्ठ बैंकर के वी कामथ भी मौजूद रहे। मोदी सरकार के तीसरे कार्यकाल का पहला बजट वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण 23 जुलाई को लोकसभा में पेश करेंगी। संसद का बजट सत्र 22 जुलाई से शुरू होगा।

फिर शुरू होगा किसान आंदोलन: संयुक्त किसान मोर्चा

नई दिल्ली

संयुक्त किसान मोर्चा ने एक बार फिर विभिन्न मांगो को लेकर आंदोलन शुरू करने का एलान किया है। किसान संगठन ने कहा है कि एमएसपी की कानूनी गारंटी और ऋण माफी सहित अपनी लंबित मांगों को लेकर आंदोलन फिर से शुरू किया जाएगा। साथ ही संगठन ने कहा है कि इन मांगो को रखते हुए प्रधानमंत्री और लोकसभा में विपक्ष के नेता को एक ज्ञापन सौंपा जाएगा। संयुक्त किसान मोर्चा (एसकेएम) ने अपनी आम सभा की बैठक के एक दिन बाद यह घोषणा की। संगठन ने कहा, 'आम सभा ने 9 दिसंबर, 2021 के समझौते को लागू करने की मांग को लेकर आंदोलन फिर से शुरू करने का फैसला किया है, जो केंद्र सरकार ने एसकेएम के साथ किया है और जिस पर भारत सरकार के कृषि विभाग के सचिव ने हस्ताक्षर किए हैं। साथ ही किसानों की आजीविका प्रभावित करने वाली अन्य प्रमुख मांगें रखी जाएंगी।'

संगठन ने अपने बयान में कहा है कि सभी सांसदों को मांगों का एक चार्टर सौंपा जाएगा। संगठन ने कहा कि 9 अगस्त को एसकेएम अपनी मांगों के समर्थन में देश भर में प्रदर्शन करके "भारत छोड़ो दिवस" को "कॉर्पोरेट भारत छोड़ो दिवस" के रूप में मनाएगा।

भगवान बुद्ध के आदर्श, भारत और थाईलैंड के बीच एक आध्यात्मिक सेतु - गजेन्द्र सिंह शेखावत

नई दिल्ली

केंद्रीय संस्कृति मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने गुरुवार को राष्ट्रीय संग्रहालय में फोटोग्राफिक प्रदर्शनी "थाईलैंड-इंडिया इंटरवॉवन लिगेसीजः स्ट्रीम ऑफ फेथ इन बुद्धिज्म" का उद्घाटन किया। राष्ट्रीय संग्रहालय में यह फोटोग्राफिक प्रदर्शन भगवान बुद्ध और उनके शांति, करुणा के संदेश के प्रति थाई लोगों गहरी भक्ति और श्रद्धा को दशार्ता है। भगवान बुद्ध के आदर्श, भारत और थाईलैंड के बीच एक आध्यात्मिक सेतु के रूप में काम करते हैं।

नया कानून आपराधिक न्याय में परिवर्तनकारी युग की शुरूआत करेगा: हाईकोर्ट

नई दिल्ली

दिल्ली हाई कोर्ट ने कहा है कि नया आपराधिक कानून भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता (बीएनएसएस) एक परिवर्तनकारी युग की शुरूआत करेगा। नारकोटिक ड्रग्स एंड साइकोट्रोपिक सब्सटेंस एक्ट (एनडीपीएस एक्ट) के तहत एक आरोपित को जमानत देते हुए जस्टिस अमित महाजन ने कहा कि बीएनएसएस तकनीक के आधार पर पारदर्शी और जिम्मेदार न्याय सुनिश्चित करता है।

मामला 28 दिसंबर 2019 का है। दिल्ली पुलिस को सूचना मिली कि आरोपित बंतु हिमाचल प्रदेश से लाकर दिल्ली के मजनूं का टीला के पास संजय अखाड़ा में दिन के साढ़े तीन बजे से साढ़े चार बजे के बीच चरस की सप्लाई करने वाला है। इस सूचना को डायरी में दर्ज करने के बाद पुलिस ने शाम करीब चार बजकर 10 मिनट पर छापा मारा और आरोपित को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस के मुताबिक आरोपित के पास से बरामद बैग में 1.1 किलोग्राम चरस बरामद किया गया। चरस की इतनी बड़ी मात्रा में बरामदगी कानून के मुताबिक व्यावसायिक श्रेणी में आता है। पुलिस ने इस मामले में चार्जशीट दाखिल की जिस पर 12 जनवरी 2022 को ट्रायल कोर्ट ने संज्ञान लिया। सुनवाई के दौरान आरोपित की ओर से पेश वकील ने कहा कि उसे झूठे तरीके से फंसाया गया है। उन्होंने कहा कि अभियोजन की ओर से जांच में गंभीर खामियां हैं। आरोपित के वकील ने कहा कि बरामदगी दिन में हुई है उसके बावजूद पुलिस के बाद स्वतंत्र गवाह नहीं है।

आरोपित के वकील ने कहा कि दिल्ली पुलिस ने जो सीडीआर दाखिल की है। उसके मुताबिक आरोपित के नंबर से बरामदगी वाले दिन 6 बजे शाम तक बात हुई है जबकि अभियोजन पक्ष कह रहा है कि आरोपित को करीब सवा चार बजे गिरफ्तार किया गया। उन्होंने कहा कि एनडीपीएस कानून की धारा 50 का पुलिस ने पालन नहीं किया और पहले से सूचना के बावजूद छापे की कार्रवाई की वीडियोग्राफी नहीं की गई। हाई कोर्ट ने कहा कि अब विधायिका ने भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता पारित किया है।

हाथरस भगदड़: सुप्रीम कोर्ट आज करेगा सुनवाई

नई दिल्ली

उत्तर प्रदेश के हाथरस में हुई भगदड़ मामले पर सुप्रीम कोर्ट कल यानि 12 जुलाई को सुनवाई करेगा। चीफ जस्टिस डीवाई चंद्रचूड़ की अध्यक्षता वाली बेंच सुनवाई करेगी।

याचिका में 2 जुलाई को हाथरस में हुई घटना की जांच की मांग करते हुए घटना के लिए जिम्मेदार लोगों और अधिकारियों के खिलाफ कानूनी कार्यवाही किए जाने की मांग की गई है। याचिका वकील विशाल तिवारी ने दायर की है। याचिका में इस घटना की जांच के लिए सुप्रीम कोर्ट के रिटायर्ड जज की अध्यक्षता में पांच सदस्यों की कमेटी बनाए जाने की मांग करते हुए इस मामले में यूपी सरकार से स्टेटस रिपोर्ट दाखिल करने की मांग की गई है। याचिका में ऐसे समारोह के आयोजनों के लिए दिशा-निर्देश जारी करने की मांग की गई है।

खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र में हिमाचल को मिला सर्वश्रेष्ठ राज्य पुरस्कार

शिमला

हिमाचल प्रदेश को खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र में नवोन्मेषी पहल और उल्लेखनीय कार्य के लिए सर्वश्रेष्ठ राज्य पुरस्कार-2024 से सम्मानित किया गया है। यह पुरस्कार एग्रीकल्चर टुडे ग्रुप की ओर से आयोजित एग्रीकल्चर लीडरशिप कॉन्क्लेव में केन्द्रीय सड़क, परिवहन और राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी से हिमाचल प्रदेश की ओर से आवासीय आयुक्त मीरा मोहंती ने प्राप्त किया। गुरुवार को यह जानकारी उद्योग मंत्री हर्षवर्धन चौहान ने दी। उद्योग मंत्री ने कहा कि खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र में विभिन्न कार्यक्रमों व नीतियों के सफल कार्यान्वयन से प्रदेश के लाखों किसानों और ग्रामीणों के जीवन में सकारात्मक बदलाव आए हैं और उनकी आर्थिकी सुदृढ़ हुई है।

उन्होंने कहा कि राज्य ने अपने खाद्य प्रसंस्करण बुनियादी ढांचे को सुदृढ़ किया है, जिसमें 23 नामित खाद्य पार्क, एक समर्पित मेगा फूड पार्क, जिला कांगड़ा और सोलन में 2 कृषि प्रसंस्करण क्लस्टर, 18 कोल्ड चेन परियोजनाएं, जिनमें राज्य खाद्य प्रसंस्करण योजना और प्रधानमंत्री किसान संपदा योजना के तहत खाद्य प्रसंस्करण इकाइयां शामिल हैं। उन्होंने बताया कि गत वर्ष भी प्रदेश को भारत सरकार के खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय की ओर से आयोजित विश्व खाद्य भारत कार्यक्रम में प्रधानमंत्री सूक्ष्म खाद्य प्रसंस्करण उद्यमों के औपचारिकीकरण (पीएमएफएमई) योजना के तहत उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले राज्य के रूप में पुरस्कृत किया था।

सीएम सुक्खू ने ऊना के गगरेट को दी 36 करोड़ की सौगातें

शिमला

मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने गुरूवार ऊना जिले के गगरेट विधानसभा क्षेत्र को 36 करोड़ की सौगातें दीं। उन्होंने गगरेट में 31 करोड़ रुपये से निर्मित होने वाली 5 मेगावाट क्षमता की भंजाल सौर ऊर्जा परियोजना तथा 5.17 करोड़ रुपये की लागत के अत्याधुनिक मत्स्य पालन प्रशिक्षण केन्द्र दियोली का शिलान्यास किया। इस अवसर पर एक जनसभा में सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने कहा कि हिमाचल प्रदेश पावर कॉरपोरेशन लिमिटेड द्वारा स्थापित की जा रही भंजाल सौर ऊर्जा परियोजना का निर्माण 9 हेक्टेयर भूमि में किया जाएगा तथा इसे 8 महीने में पूरा करने का लक्ष्य रखा गया है। इस परियोजना से प्रतिवर्ष 10.54 मिलियन यूनिट विद्युत उत्पादित की जाएगी तथा प्रदेश सरकार को 3.815 करोड़ रुपये वार्षिक राजस्व प्राप्त होगा। इस परियोजना में 13000 सोलर मॉडयूल स्थापित किए जायेंगे और इससे प्रतिवर्ष 396 टन कार्बन उत्सर्जन में कमी आयेगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि जिला ऊना में आने वाले समय में 47 मेगावाट विद्युत का उत्पादन होगा। राज्य सरकार ने आठ माह के रिकॉर्ड समय में ऊना के पेखूबेला में 220 करोड़ रुपये की लागत से 32 मेगावाट क्षमता का सोलर पावर प्रोजेक्ट जनता को समर्पित कर दिया है। उन्होंने कहा कि कुटलैहड़ में 67.82 करोड़ रुपए की लागत 10 मेगावाट क्षमता के सोलर पावर प्रोजेक्ट को बनाने का कार्य शुरू कर दिया है। राज्य सरकार ने अपने पहले बजट में हिमाचल प्रदेश को 31 मार्च, 2026 तक हरित ऊर्जा राज्य के रूप में विकसित करने का लक्ष्य रखा है, ताकि पर्यावरण संरक्षण सुनिश्चित किया जा सके। सौर ऊर्जा परियोजनाएं हिमाचल प्रदेश को हरित ऊर्जा राज्य बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएंगी।

उन्होने कहा कि हिमाचल प्रदेश को आत्मनिर्भर बनाने के लिए राज्य सरकार सौर ऊर्जा दोहन पर विशेष ध्यान दे रही है।

पंजाब के सीमावर्ती जिलों के लिए विशेष प्रोत्साहन और उद्योगों तथा किसानों के लिए प्रोत्साहन की मांग की

केंद्रीय मंत्री बिट्टू ने वित्त मंत्री से पंजाब के उद्योगों और किसानों के मुद्दों पर की चर्चा

नई दिल्ली

रेल और खाद्य प्रसंस्करण राज्य मंत्री रवनीत सिंह बिट्टू ने केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण से मुलाकात की और पंजाब से जुड़े महत्वपूर्ण मुद्दों पर चर्चा की। उन्होंने जम्मू-कश्मीर की तर्ज पर पंजाब के सीमावर्ती जिलों के लिए विशेष प्रोत्साहन और उद्योगों तथा किसानों के लिए प्रोत्साहन की मांग की।

बिट्टू ने गुरुवार को कहा कि वित्त मंत्री ने उनकी बात धैर्य से सुनी और आश्वासन दिया कि आने वाले बजट में पंजाब को बहुत अच्छा प्रतिनिधित्व मिलेगा। नई दिल्ली में बुधवार देर रात आयोजित एक मैराथन बैठक में पंजाब के मुद्दों को उठाते हुए बिट्टू ने वित्त मंत्री से सीमावर्ती राज्य होने के नाते पंजाब की मांगों पर प्राथमिकता के आधार पर विचार करने का आग्रह किया। बिट्टू ने कहा कि उन्होंने जम्मू-कश्मीर और पूर्वोत्तर राज्यों की तर्ज पर राज्य में निवेश और रोजगार के अवसरों को बढ़ावा देने के लिए पंजाब के सीमावर्ती जिलों अमृतसर, फिरोजपुर, गुरदासपुर और तरनतारन के लिए विशेष प्रोत्साहन की मांग की।

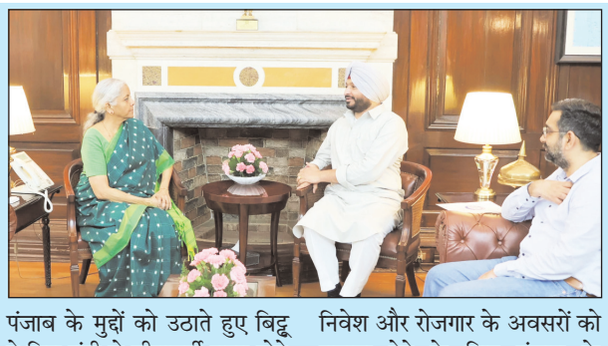

मंत्री ने वित्त मंत्री को बताया कि प्रमुख क्रेडिट लिंक्ड कैपिटल सब्सिडी स्कीम (सीएलसीएसएस) को एक करोड़ रुपए की सीमा के साथ फिर से शुरू किया जाना चाहिए, क्योंकि तकनीकी प्रगति हासिल करने में एमएसएमई का समर्थन करने वाली प्रभावी योजनाओं की कमी है। पूंजीगत लागत में हाल ही में हुई वृद्धि के मद्देनजर, यह वांछित है कि प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम (पीएमईजीपी) के तहत सीमा बढ़ाकर एक करोड़ रुपए कर दी जाए।

पंजाब में एमएसएमई को कवर करने के लिए माल ढुलाई सब्सिडी मानदंड में संशोधन का सुझाव देते हुए, बिट्टू ने वित्त मंत्री से अनुरोध किया कि भारत में निकटतम बंदरगाह तक माल पहुंचाने की परिवहन लागत पंजाब जैसे भूमि से घिरे राज्यों के लिए तटीय राज्यों की तुलना में बहुत अधिक है। बिट्टू ने अमृतसर के अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे के पास रेफ्रिजरेशन यूनिट का संचालन शुरू करने की भी मांग की। उन्होंने 5 एकड़ तक की जमीन वाले किसानों के लिए छूट, पंजाब के माझा, दोआबा और मालवा क्षेत्रों के लिए मिट्टी परीक्षण प्रयोगशालाएं, पंजाब कृषि विश्वविद्यालय लुधियाना में अनुसंधान एवं विकास के लिए विशेष पैकेज की भी मांग की।

रेल राज्य मंत्री ने उत्तर रेलवे की कार्य-प्रगति की समीक्षा की

नई दिल्ली

रेल राज्य मंत्री रवनीत सिंह बिट्टू ने गुरुवार को नई दिल्ली के बड़ौदा हाउस में उत्तर रेलवे की कार्य प्रगति की समीक्षा की। उन्होंने संरक्षा, समयपालनबद्धता के साथ-साथ अमृत भारत योजना के तहत स्टेशन पुनर्विकास कार्यक्रम और एक स्टेशन एक उत्पाद (ओएसओपी) योजना का विश्लेषण किया। रेल राज्य मंत्री ने रेल अधिकारियों को निर्देश दिया कि संरक्षा, समयपालनबद्धता, स्वच्छता और बुनियादी ढांचागत परियोजनाएं रेलवे की मुख्य प्राथमिकता होनी चाहिए।

ऑनलाइन उपस्थिति के आदेश से शिक्षको में भारी आक्रोश : मनीष तिवारी

अखंड भारत संदेश

मेजा। बृहस्पतिवार को बीआरसी मेजा में सैकड़ों की संख्या में शिक्षक और शिक्षिकाओं ने विभाग द्वारा प्रेषित डिजिटाइजेशन के आदेश का विरोध जताया है। इस मौके पर उत्तर प्रदेशीय प्राथमिक शिक्षक संघ के जिला कोषाध्यक्ष व ब्लॉक अध्यक्ष मेजा मनीष तिवारी ने कहा कि टैबलेट डिजिटलाइजेशन के मुद्दे पर कुछ दिन पहले शिक्षको ने एक प्रस्ताव पास किया गया था कि टैबलेट डिजिटलाइजेशन से पूर्व शिक्षक समस्याओं का निराकरण करते हुए इस व्यवस्था में संशोधन किया जाय। जिसके लेकर पूर्व में शिक्षक समस्याओं के निराकरण हेतु शासन द्वारा नियुक्त प्रमुख सचिव बेसिक शिक्षा उत्तर प्रदेश शासन लखनऊ के नेतृत्व में बनाई गई कमेटी एवं शिक्षक महासंघ के प्रांतीय पदाधिकारियों के प्रतिनिधिमंडल की बीते 30 अक्टूबर 2023 एवं 9 नवंबर 2023 की दो चक्र में हुई वार्ता के बाद भी शिक्षको की विभिन्न समस्याओं का निराकरण अभी तक नहीं किया गया। इस आशय का शिक्षको के हस्ताक्षर युक्त ज्ञापन खंड शिक्षा अधिकारियों के माध्यम से महानिदेशक स्कूल शिक्षा उत्तर प्रदेश को भेजा भी गया था और संगठन के पदाधिकारियों द्वारा रजिस्ट्री भी की गई थी परंतु उस पर कोई भी कारवाई करने की बजाय हड़बड़ी में बिना शिक्षक समस्याओं का बिना संज्ञान लिए बेसिक शिक्षा विभाग में सिर्फ शिक्षको के लिए ऑनलाइन अटेंडेंस का आदेश निर्गत किया गया है। इसी कारण से इस जबरदस्ती थोपे गए आदेश से शिक्षको ने अपना विरोध ब्लॉक मुख्यालय पर इकठ्ठा होकर किया है और उन्होंने कहा कि शिक्षको ने फोन द्वारा, सोशल मीडिया एवं ट्विटर के माध्यम से अपनी जायज मांगों को सरकार से व्यक्त भी किया। जब सरकार द्वारा अपने ही कर्मचारियों की मांग को लगातार अनसुना किया जा रहा है तब शिक्षक आज ऑनलाइन उपस्थिति का विरोध कर रहे हैं और संबंधित प्रस्ताव पर अपनी असहमति पर हस्ताक्षर भी किया। संघ के मंत्री हसीब सिद्दीकी ने कहा कि शिक्षको की जायज मांग हैं कि उन्हें भी राज्य कर्मचारियों की भांति उपार्जित अवकाश, द्वितीय शनिवार और परिस्थितिजन्य विलंब होने पर हाफ डे अवकाश की व्यवस्था दिया जाय परन्तु लगभग 8 महीने बीत जाने के बाद भी शासन द्वारा कोई ठोस करवाई नहीं हुई बल्कि जबरदस्ती उनके ऊपर ऑनलाइन अटेंडेंस थोपा जा रहा है। जिससे शिक्षक समाज दुखी है। शिक्षको को आज भी यदि अन्य कार्यक्रमों के साथ साथ अगर खुद उनकी या उनके घर में शादी हो या उनके घर में कोई कैजुअल्टी ही हो और उन्हें अवकाश की आवश्यकता हो, तो भी वे उसके लिए मेडिकल लीव लेने को बाध्य है। साथ ही विद्यालय पहुंचकर ऑनलाइन उपस्थित देने के बाद किसी शिक्षक के घर से फोन आ जाए कि माता पिता /बच्चे कि तबियत खराब हो गयी तब हॉफ डे लीव स्वीकार्यता न होने के कारण कौन सा अवकाश ले ? उन्होंने बेसिक शिक्षा विभाग के उच्चाधिकारियों से आग्रह किया है कि शिक्षक को रोबोट समझने के बजाय उन्हें भी मनुष्य समझे और उनकी जायज मांगो का अविलंब निराकरण करें। इस मौके पर प्रभारी बी.के.मिश्र, मंत्री मो हसीब सिद्दीकी, अनुराग पांडेय, संजय पटेल, संतोष अहिरवार, वीना सिंह, रामराज, अशोक तिवारी, सरिता मिश्रा, रागिनी वर्मा, संगीता चौधरी, प्रवीण दुबे, विकास पांडेय, सुरेश पटेल, प्रवीण श्रीवास्तव, सविता, वर्षा साहू, शिवानी, प्रेमशीला, प्रीति, बृजेश सिंह, सुरेश तिवारी, जगदीश मिश्र, रामशंकर पांडेय, बालाजी, सुरेंद्र कुमार, मुदित, विशाल, विनय दुबे, आशीष श्रीवास्तव, शिवभान, अखिलेश मिश्र, संतोष व अखिलेश चौधरी के अलावा बड़ी संख्या में शिक्षक एवं शिक्षिकाएं उपस्थित रहीं।

न्यूज झरोखा

आनलाइन उपस्थिति का शिक्षकों ने किया विरोध

उतरांव। सैदाबाद स्थित बी आर सी में उत्तर प्रदेश प्रा. शिक्षक संघ के ब्लॉक इकाई के आवाहन पर गुरुवार को भारी मात्रा में शिक्षक शिक्षिकायें उपस्थित होकर आन लाइन शिक्षकों की उपस्थिति देने का विरोध किया है। इस प्रदर्शन को सम्बोधित करते हुए ब्लॉक अध्यक्ष राकेश मिश्र ने कहा कि जब तक 31 प्रतिकर अवकाश, द्वितीय शनिवार अवकाश उपार्जित अवकाश, अर्द्ध आकस्मिक अवकाश आदि मांगे नहीं मानी जाती तब तक सभी शिक्षक ऑनलाइन उपस्थिति नहीं देंगे। वही मंत्री सूबेदार सिंह ने कहा कि पूर्व में शासन को सौंपी गई मांगों को पूरा होने तक सभी शिक्षक ऑनलाइन उपस्थिति का विरोध करते रहेंगे। शिक्षकों के साथ अन्याय सरकार कर रही है। शिक्षकों की मांग को पूरा हो।इस अवसर पर प्रदीप पाण्डेय, अरुण त्रिपाठी मान्धाता, देवेन्द सिंह, रंजनाराय, शैलजा झी, अपनीश?? नरेन्द्र द्विवेदी, कल्पना मालवीया, अशोक मौर्य, बालकदार अंजू त्रिपाठी, प्रेमाराय, दीपा शर्मा, संगीता हुने, अनीतारामा आदि शिक्षक शिक्षिका उपस्थित रही।

मांडा बीआरसी में ऑनलाइन हाजिरी के विरोध में धरना प्रदर्शन

मांडा। विकास खण्ड मांडा क्षेत्र अंतर्गत सभी शिक्षक /शिक्षिकाए लामबंद होकर ऑनलाइन हाजिरी के विरोध में गुरुवार को खण्ड शिक्षा अधिकारी मांडा कार्यालय में धरना प्रदर्शन किया। और नारे बाजी करते हुए कहा कि शिक्षकों की लंबित मांगों को सरकार जब तक मान नही लेती तब तक हम ऑनलाईन हाजिरी का विरोध करते रहेंगे। धरने में अध्यक्ष मुचकुंद मिश्र ,मंत्री राजेश सिंह यादव,जिला सयुक्त मंत्री अभिनव प्रताप सिंह एवं विकास खण्ड के सैकड़ो शिक्षक/शिक्षिकाए उपस्थित रहे। धरने का संचालन मंत्री मनोज सिंह पटेल ने किया।

पत्रकार दिलीप पांडेय के चाचाजी का निधन, परिजन शोकाकुल

जंघई। प्रयागपुर गांव निवासी दिलीप कुमार पांडेय पत्रकार के चाचाजी कुंजलाल पांडेय का निधन हो गया है। उनके निधन की सूचना से परिजनों एवं रिश्तेदारों तथा गांव एवं क्षेत्र में शोक का माहौल है। कुंजलाल पांडेय बहुत सीधे, सरल, मिलनसार एवं उदार व्यक्तित्व के इंसान थे। सभी ने शोक संवेदना व्यक्त करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित किया एवं दिवंगत पुण्य आत्मा की शांति हेतु ईश्वर से प्रार्थना किया। शोक संतप्त परिवार में राजेंद्र प्रसाद पांडेय चुनमुन, विजय पांडेय, संजय पांडेय, पंकज पांडेय, संतोष पांडेय, रवि पांडेय, कैलाश पांडेय, विवेक पांडेय, सुमित पांडेय, अमित पांडेय, राकेश पांडेय, मयूर, कृष्णा, ऋषभ एवं रुद्रांश आदि लोग मौजूद रहे।

आकाशीय बिजली के कहर से किसान की दर्दनाक मौत

करछना तहसील क्षेत्र के हिनौता महोरी गाँव के त्रिशूल नाथ पटेल उम्र 50 वर्ष पुत्र स्वर्गीय छोटकू पटेल की आकाशीय विजली गिरने से मौत हो गई! त्रिशूल नाथ पटेल खेत में गये हुए थे, तेज गरज बरज की बारिश शुरू हो गई और बादलों की गड़गड़ाहट से विजली गिर गई जिससे वह चपेट में आ गये, जिससे उनकी मौत हो गई! परिजनों को सूचना मिलने पर करछना सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र ले गये,जहाँ डाक्टरों ने बताया कि मौत हो चुकी है! परिजनों को मौत की सूचना मिलने पर परिवार में कोहराम मच गया है! मौके पर पहुंचे प्रधान राजकुमार पटेल ने परिजनों को मदद का भरोसा दिलाया और पुलिस को सूचना दी मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया,

मांडा सीएचसी में सर्प दंश का इंजेक्शन उपलब्ध : डॉ अजीत सिंह

मांडा। मौसम के बिगड़ते मिजाज से बरसात में बढ़ते सर्प दंश की संभावनाओं से निबटने के लिए मांडा सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र में 17 एंपल यानी 170 मरीजों के लिए सर्प दंश का इंजेक्शन उपलब्ध है।जानकारी सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र मांडा के अधीक्षक डॉ अजीत सिंह ने बताया कि अभी तक मांडा सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में सर्प दंश का एक भी मरीज नहीं आया है। उनका कहना है कि सर्प दंश के बाद परिजन पीड़ित को झाड़ फूंक के चक्कर में बिल्कुल नहीं पड़े। बल्कि सीधे सरकारी अस्पताल लेकर भागे। झाड़ फूंक से मरीज को कोई आराम नहीं मिलता बल्कि बिलंब की दशा में सर्प का जहर शरीर में फैल जाता है और इलाज असंभव हो जाता है।

फिनिक्स लाइब्रेरी में शहर जैसी सुविधाएं छात्रों को अब गांवों में मिलेगी : मिथिलेश द्विवेदी

प्रमुख प्रतिनिधि ने किया उद्घाटन, प्रतियोगी छात्रों को नहीं जाना पड़ेगा शहर

करछना। प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करने के लिए ग्रामीण क्षेत्र में रहने वाले छात्रों को शहर में रहकर पढ़ाई करना पड़ रहा था। लेकिन जो छात्र पैसे के अभाव में शहर तक नहीं पहुंच पा रहे थे। अब उन्हें शहर जैसी सुविधा गांव में ही मिलेगी। इससे ग्रामीण क्षेत्र में रहने वाले छात्रों को काफी सहूलियत मिलेगी। गुरुवार को करछना क्षेत्र के कचरी मोरी के सामने फिनिक्स लाइब्रेरी का उद्घाटन मुख्य अतिथि प्रमुख प्रतिनिधि मिथिलेश कुमार द्विवेदी एवं विशिष्ट अतिथि चौकी प्रभारी भीरपुर अमित सिंह ने फीता काट कर किया। प्रमुख प्रतिनिधि ने कहा शिक्षा के माध्यम से ही समाज में आत्म सम्मान और समानता का दर्जा मिलता है। युवा वर्ग अपनी ऊर्जा को अनावश्यक नष्ट न करें, बल्कि शिक्षा ग्रहण करने में उनका उपयोग करें। आधुनिक सुविधा वाई-फाई, प्रतियोगिता परीक्षाओं की पुस्तके, साप्ताहिक पत्रिका, एवं समाचार पत्रों से लैस फिनिक्स लाइब्रेरी ग्रामीणांचल क्षेत्र में खुलने से छात्रों की स्वर्णिम विकास में कारगर साबित होगी। इस मौके पर ग्राम प्रधान धर्मराज सिंह पटेल, रवि गुप्ता,रंगबाली, अशोक पटेल, राज बहादुर पटेल, इंद्र बहादुर, संजय कुमार सिंह, ज्ञानेंद्र कुमार, विजय कुमार आदि मौजूद रहे।

जमीनी विवाद में पत्रकारिता की धौंस दिखाना पड़ा मंहगा, गए जेल

नवाबगंज। स्थानीय तहसील क्षेत्र के चार व्यक्ति जनपद प्रतापगढ़ के थाना बाघराय अंतर्गत लोसना पुर गांव में जमीन के विवाद सुलझाने के लिए गए हुए थे।आरोप है कि जमीन के विवाद में गाली गलौज होने पर अवैध तमंचे से फायरिंग की गई। जिसमें पीड़ित पन्ना लाल पाल पुत्र श्री नाथ पाल निवासी लोसनापुर थाना बाघराय के गर्दन में गोली के छर्रे लगने से वह बेहोश होकर जमीन पर गिर गया। सूचना पर पहुंची बाघराय पुलिस ने सभी लोगों को हिरासत में लेकर थाने ले गई। देर रात्रि संगीत धाराओं में मुकदमा लिखकर वृहस्पतिवार को जेल भेज दिया। जानकारी के अनुसार लोसना पुर थाना बाघराय जनपद प्रतापगढ़ निवासी पन्ने लाल पुत्र श्रीनाथ पाल का आरोप है कि उसने अपनी भूमि धरी जमीन की पैमाइश के किए न्यायालय में वाद दाखिल किया था। जिसको लेकर बुधवार दोपहर लगभग 4 बजे जमीन की माप हो गई। जिसमें विपक्षी शिवमंगल पाल, विजय पाल, राम लोचन पाल निवासीगण लोसनपुर भी मौजूद रहे। पैमाइश होने के बाद सभी लोग अपने-अपने घर चले आए। जिसको लेकर शाम लगभग 6 बजे पीड़ित के पुत्र सचिन कुमार को गांव के बाहर आरोपी शिवमंगल पाल, विजय पाल व राम लोचन पाल गाली गुप्ता देकर मारने पीटने लगे। शोर सुनकर पन्ने लाल पाल भी बीच बचाव करने के लिए मौके पर पहुंचा तो आरोप है कि प्रयागराज के नवाबगंज थाना क्षेत्र के बुदौना गांव के कुछ युवक पैसे लेकर जमीन पर कब्जा दिलवाने पहुंचे अनिल कुमार पाल पुत्र छोटेलाल पाल, विजय पाल, रवि पाल, नकुल पाल एक स्कॉर्पियो गाड़ी से नशे में धुत होकर पहुंचे और सचिन को मारने पीटने लगे। तभी आरोपी रामलोचन पाल अवैध तमंचे से फायर कर दिया। गोली का छर्रा पन्ने लाल पाल के गले में जाकर लग गया। जिससे लहुलुहान होकर मौके पर ही गिर गया। सूचना पर पहुंची पुलिस ने सभी आरोपियों को पकड़कर थाने ले आ रही थी तभी आरोप है कि उसने बैठा नवाबगंज के बुदौना गांव निवासी अनिल पाल अपने को एक दैनिक प्रतिष्ठित समाचार पत्र का रिपोर्टर बताकर पुलिस के ऊपर धौंस दिखाने लगा। घायल पन्ने लाल पाल के शिकायती पत्र पर पुलिस ने संगीन धाराओं में मुकदमा लिखकर गुरुवार की दोपहर जेल भेज दिए। जो आरोपी फरार है पुलिस उन पर काम कर रही है।

उतरांव पुलिस ने वांछित अभियुक्त का किया चालान

उतरांव। उतरांव पुलिस को उसे समय बड़ी सफलता हासिल हुई कि जब पुलिस द्वारा 01 वांछित अभियुक्त रत्नेश प्रकाश हरिजन पुत्र लालचन्द निवासी ग्राम डुढुआ थाना उतरांव कमिश्नरेट प्रयागराज को थाना उतरांव पुलिस टीम द्वारा थाना उतरांव क्षेत्रान्तर्गत ग्राम डुढुआ के पास से गिरफ्तार कर अग्रिम विधिक कार्यवाही की गयी। पुलिस ने बताया कि अभियुक्त एक मुकदमे में वांछित था जिसकी पुलिस तलाश कर रही थी। गिरफ्तारी टीम में मुख्य रूप से उ०नि० इम्तियाज अहमद सिपाही अमरेश यादव ने बहुत ही चालाकी के साथ अभियुक्त को पकड़ कर चालान किया।

आरएसएस कार्यकर्ता को धमकाने पर मुकदमा दर्ज

मऊआइमा। व्हाट्सएप्प पर आयोडियो काल के माध्यम से धमकाया गया आर एस एस कार्यकर्ता ने अज्ञात में मुकदमा दर्ज करा दिया है। मऊआइमा थाना क्षेत्र के ग्राम मरखामऊ निवासी दिनेश कुमार मौर्या पुत्र स्वर्गीय राम सुमेर मौर्य का आरोप है कि दो जुलाई को उसके मोबाइल के व्हाट्सएप्प पर एक आयोडिओ काल आया जिसपर उनको और पूरे परिवार को मार डालने की धमकी दी गई थी। पुलिस ने तमाम छान बीन के बाद अज्ञात में मुकदमा दर्ज कर लिया है।

ज्ञापन सौंप वकीलों ने दिया तीन दिन का अल्टीमेटम

बारा तहसील परिसर में अधिवक्ता संघ ने किया प्रदर्शन

अखंड भारत संदेश

बारा। बिजली विभाग के अवर अभियंता द्वारा बीते दिनों शंकरगढ़ थाने में दर्ज करवाई गई एफआईआर को लेकर बारा तहसील के अधिवक्ताओं ने उग्र प्रदर्शन की चेतावनी दी है। अधिवक्ता संघ बारा का कहना है कि फर्जी सूचना के आधार पर संघ के अधिवक्ता वितेंद्र कुमार पांडेय (निवासी सोनवर्षा, शंकरगढ़) के खिलाफ एससीएसटी समेत अन्य धाराओं में केस दर्ज कर लिया गया है। संघ का आरोप है कि उक्त प्रकरण में पुलिस द्वारा कोई जांच नहीं की गई। इसी तरह का एक अन्य मामला फरवरी, 2024 में बारा थाने में दर्ज किया गया था। पुलिस द्वारा बिना जांच -पड़ताल के मुकदमे दर्ज किए जा रहे हैं, जबकि आरोपी बनाए गए अधिवक्ताओं का इन मामलों से कोई सरोकार नहीं है। अधिवक्ताओं ने कहा, यदि तीन दिन के अंदर अलग-अलग थानों में अधिवक्ताओं के खिलाफ दर्ज केस का सम्यक निस्तारण नहीं किया जाता तो अधिवक्ता आंदोलन को बाध्य होंगे। गुरुवार को अधिवक्ताओं ने बारा तहसील में नारेबाजी करते हुए एसडीएम को अपनी मांगों का ज्ञापन सौंपा। चेताया कि तीन दिन में निस्तारण नहीं हुआ तो न्यायिक कार्य से विरत रहते हुए धरना -प्रदर्शन किया जाएगा।

जसरा में युवक ने फंदे पर लटक कर दी जान

जसरा। जसरा बाजार के एक व्यापारी के पुत्र ने किसी बात से परेशान होकर घर के कमरे में फंदे पर लटक कर जान दे दी। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। घूरपुर थाना क्षेत्र के जसरा बाजार निवासी रामचंद्र केसरवानी उर्फ पप्पू व उनकी पत्नी बेबी केसरवानी बाजार में एक छोटी सी दुकान चलाते हैं। पप्पू केसरवानी के तीन लड़के व एक पुत्री हैं। जिसमें बड़े लड़के अविनाश व इकलौती पुत्री का विवाह हो चुका है। दूसरे नंबर का लड़का अमित केसरवानी उर्फ गोलू बिजली मिस्त्री के साथ ही डीजे संचालन का काम भी करता था। कुछ माह पूर्व जसरा में आयोजित दशहरा के मेले में उसके डीजे की मशीन जनरेटर के कारण जल गई थी। जिससे वह परेशान रहता था। रामचंद्र केसरवानी इन दिनों दुकान से कुछ दूरी पर एक नया घर बनवा लिया था। तथा वहीं पर परिवार सहित रहा करता था। बुधवार की शाम को रामचंद्र केसरवानी व उसकी पत्नी बेबी केसरवानी बाजार स्थित अपने दुकान में थे। जब कि घर पर कोई नहीं था। प्रत्यक्ष दर्शियो ने बताया कि शाम लगभग 7:30 बजे गोलू बाजार से घर आ गया। तथा सूने घर के आगे कमरे में पंखे के चुल्ले में नायलॉन की रस्सी डालकर फंदे पर लटक गया। दुकान बंद कर पप्पू केसरवानी जब 9:30 बजे घर पहुंचा तो मुख्य दरवाजा खोलकर जब अंदर कमरे में गोलू को फंदे पर लटकता देख पांव के नीचे से जमीन खिसक गई। आसपास के लोगों को सूचना दी तथा किसी ने पुलिस को भी सूचना दे दी। सूचना पर पहुंची घूरपुर पुलिस ने शव को फंदे से नीचे उतारा तथा कमरे व गोलू के पहने कपड़े की तलाशी ली। लोगों ने बताया कि पुलिस अपने साथ गोलू का मोबाइल व डायरी उठा ले गई है। पुलिस ने शव का पंचनामा भरकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। थाना प्रभारी केशव वर्मा ने बताया कि गोलू के आत्महत्या के कारणों की जांच पड़ताल की जा रही है गोलू के मोबाइल का कॉल डिटेल व रिकॉर्डिंग का पता किया जा रहा है। पुलिस ने कहा कि जांच के बाद ही कार्रवाई की जाएगी। परिजनों का रो रोकर हुआ बुरा हाल गोलू के मौत पर गोलू की मां और परिजनों का बुरा हाल हो गया है। मां ने कहा हमारा गोलू कैसे इस तरह की आत्मघाती कदम उठाया। उसे कोई भी बात थी तो बताना चाहिए था।

शुआट्स के कृषि विज्ञान केन्द्र में व्यवसायिक प्रशिक्षण का किया गया उदघाटन

नैनी, प्रयागराज। शुआट्स के कृषि विज्ञान केन्द्र, में गृह वाटिका, सब्जी उत्पादन एंव बकरी पालन प्रशिक्षण का उदघाटन मुख्य अतिथि प्रो0डा0 एस.डी.मेकार्टी निदेशक शोध शुआट्स प्रयागराज के कर कमलों द्वारा बृहस्पतिवार को हुआ। उन्होनें कृषक महिलाओं को शुआट्स वैज्ञानिकों द्वारा विकसित विभिन्न प्रजाति के गेंहूँ धान के बारें में विस्तृत जानकारी दी। डा0 मुकेश पी.मसीह प्रभारी कृषि विज्ञान केन्द्र शुआट्स प्रयागराज ने कृषि विज्ञान केन्द्र के कार्यो तथा कृषक महिलाओं को अपने सम्बोधन में बताया कि घर के आस पास जो जगह खाली पडी रहती है उसमे गृह वाटिका बनाकर साल भर सब्जी उत्पादन करके अतिरिक्त लाभ ले सकतें है। डा0सुबोध यादव ने बकरी पालन के बारे में प्रबन्धन प्रजनन, नस्ल संतुलित आहार और बिमारियों से बचाव की जानकारी दी। उन्होनें बताया बकरी पालन को 5 स्टार भी कहते है बकरी पालन से मांस, दूध, चमडा, बाल, गोबर सभी उपयोग में आतें है। डा0 निमिषा नटराजन ने कृषक महिलाओं को रबी, खरीफ जायद मौसम की गृह वाटिका हेंतु सब्जियों की विस्तृत जानकारी दी। डा0 राना प्रताप सिंह ने सब्जी उत्पादन तकनीक की विस्तृत रूप से जानकारी दी। इस प्रशिक्षण में प्रयागराज जिले के 35 महिलाओं ने भाग लिया उनके द्वारा पूछे गये प्रश्नों के सम समायिक उत्तर वैज्ञानिकों द्वारा दिये गयें।

कालेज के बगीचे में लगाए गए मसालों के पौधे

राष्ट्रहित सेवा संस्थान ने पौधरोपण कर किया पर्यावरण संरक्षण का आह्वान

बारा/शंकरगढ़। राष्ट्रहित सेवा संस्थान के बैनर तले गुरुवार को पौधरोपण किया गया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की ह्यएक पौधा मां के नामह्ल की अपील को साकार करते हुए एनएसके इंटर कालेज, पटेलनगर (शंकरगढ़) के बगीचे में पौधरोपण किया गया। संस्था के अध्यक्ष संतोष त्रिपाठी ने कालेज के बगीचे में कई प्रकार के मसालों का पौधा लगाया। उन्होंने कहा, पर्यावरण के बिगड़ते स्वरूप को दुरुस्त करने का एकमात्र माध्यम पौधरोपण है। इसलिए सभी को प्रत्येक वर्ष पौधरोपण करना चाहिए, ताकि हम सभी को भीषण गर्मी, अवर्षण, अतिवृष्टि जैसी समस्याओं से मुक्ति मिले। उन्होंने कहा कि लोग मसालों के पौधे अपने घर के आसपास या फिर किचन गार्डन में लगा सकते हैं। संतोष त्रिपाठी ने कहा कि शंकरगढ़ क्षेत्र अधिकतर पथरीला है। ऐसे में यहां की भौगोलिक स्थितियों को ध्यान में रखते हुए मसालों के पौधों को लगाया गया है। शंकरगढ़ विकास खंड के लोग यदि मसालों का पौधा लगाएंगे तो निश्चित रूप से उन्हे फायदा होगा। इस कार्यक्रम में ज्ञानेंद्र मिश्र, अशोक त्रिपाठी, कुलदीप मिश्र, संदीप सिंह, विनय त्रिपाठी, पुष्पेंद्र पंडित आदि मौजूद रहे।

दलित को मार पीट कर किया लहूलुहान एक नामजद दो अज्ञातों के खिलाफ मुकदमा दर्ज

मऊआइमा। अनायास एक दलित को मार पीट कर लहुलुहान कर दिया गया। पुलिस ने एक नामजद दो अज्ञातों के खिलाफ मार पीट एससी एसटी एक्ट में मुकदमा दर्ज कर लिया है। मऊआइमा थाना क्षेत्र के ग्राम सरनाम का पूरा निवासी विनोद कुमार पुत्र रवि सरोज का आरोप है कि वह जमखुरी से घर आ रहा था तभी अनायास विकास पुत्र पुन्नी लाल तथा दो अन्य अज्ञातों ने उसे मार पीट कर लहुलुहान कर दिए तथा जाति सूचक गालिया दी। पुलिस ने मार पीट व एससी एसटी एक्ट में आरोपी विकास तथा दो अज्ञातों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया है।

अध्यापक कर रहे बच्चों के भविष्य के साथ खिलवाड़ जिम्मेदार अधिकारी नही दे रहे ध्यान

सिरसा। प्रयागराज मेजा विकासखंड उरूवा के खंड शिक्षा अधिकारी के यहां जहां ऑनलाइन हाजिरी को लेकर प्रधानाचार्य और अध्यापकों का धरना और ज्ञापन दिए हैं। अध्यापकों के द्वारा बच्चों के जीवन से खिलवाड़ किया जा रहा है। आखिर क्यों ऑनलाइन उपस्थिति से डरते हैं अध्यापक। जब पत्रकारों की टीम इस समस्या के प्रति जमीनी पड़ताल करने के लिए सुबह 8:00 बजे प्राथमिक विद्यालय बिजौरा पहुंची तो विद्यालय खुला था लेकिन एक भी शिक्षक प्रधानाचार्य, सहायक अध्यापक या ये कहिये कोई जिम्मेदार समय से विद्यालय में मौजूद नहीं रहे। ग्रामीणों ने बताया कि विद्यालय में अध्यापक और प्रधानाध्यापक 8:30 बजे तक आते हैं और विद्यालय में और अपना टाइम पास करके दोपहर 1:30 बजे चले जाते हैं। वहीं जब इस सिलसिले में प्रधानाचार्य से वार्ता किया गया तो उन्होंने बताया कि सुबह दूध लेने के लिए बाजार चले गए थे इसलिए हमको लेट हो गया। वहीं प्रधानाचार्य से जब और अध्यापकों के बारे में पूछा गया तो उन्होंने अपने बचाव और अध्यापकों के बचाव के लिए बहुत सारी बातें बताई। लेकिन जब ग्रामीणों से वार्ता किया गया तो ग्रामीणों ने बताया कि यह अध्यापकों का रोजाना का नियम है 8:30 बजे आते हैं। एक तरफ ऑनलाइन उपस्थिति को लेकर शिक्षकों का खंड शिक्षा अधिकारी उरूवा ब्लॉक पर प्रदर्शन कर ज्ञापन दिया गया । ग्रामीणों ने आरोप लगाया कि ऑनलाइन हाजिरी बंद हो जाएगी तो विद्यालय में बिना समय पहुंचेंगे और अपना कार्य करेंगे। वही जब बिजौरा के ग्राम प्रधान से इस सिलसिले में बात किया गया तो ग्राम प्रधान ने भी अध्यापकों को ऊपर गंभीर आरोप लगाया है। अध्यापको के इस रवैया से अभिवावकों और ग्रामवासियों में आक्रोष बना हुआ है। और बच्चों लोग अध्यापक से डरे सहमे हुए हैं। इस समस्या पर जल्द से जल्द कानूनी कार्यवाही नहीं हुई तो आने वाले समय मे अभिवावक और ग्रामवासिय मिलकर जिला प्रशासन और शासन व सरकार के प्रति धरना प्रदर्शन करने को बाध्य होंगे।

नैनी पुलिस व एसओजी के हत्थे चढ़े अवैध शस्त्र तस्कर

10 पिस्टल, छः कारतूस व दो बाइक बरामद

अखंड भारत संदेश

नैनी। नैनी कोतवाली क्षेत्र में नैनी पुलिस को बड़ी सफलता मिली। सहायक पुलिस आयुक्त करछना संजय कुमार सिंह के निकट पर्यवेक्षण में अपराध एवं अपराधियों पर नियंत्रण के दृष्टिगत अतिरिक्त निरीक्षक साजिद अली, रणजीत सिंह एसओजी प्रभारी यमुनानगर, प्रमोद यादव प्रभारी सर्विलांस सेल यमुनानगर, दरोगा अनिल भगत, दरोगा बृजेश यादव, महिला दरोगा ज्योति सचान सहित थाना नैनी पुलिस व एसओजी की संयुक्त टीम द्वारा गुरुवार को मुखबिर की सूचना पर अन्तर्राज्यीय अवैध शस्त्र तस्कर शिवम पाण्डेय उर्फ कुनाल पाण्डेय पुत्र चन्द्रमा प्रसाद पाण्डेय निवासी ग्राम औरा, बड़ौत थाना हण्डिया, रामप्रसाद पाण्डेय पुत्र स्व. मूलशंकर पाण्डेय निवासी ग्राम सोरांव थाना मेजा, वशी मोहम्मद पुत्र राज मोहम्मद निवासी ग्राम डिघिया थाना माण्डा को गुरुवार को डीपीएस के पूर्वी और गंगा कछार थाना क्षेत्र नैनी से गिरफ्तार किया गया। नैनी थाना प्रभारी यशपाल सिंह ने बताया कि अभियुक्त शिवम पाण्डेय उर्फ कुनाल पाण्डेय उपरोक्त के कब्जे से 8 स्वचालित पिस्टल 32 बोर, दो कारतूस 32 बोर व घटना में प्रयुक्त एक बाइक स्प्लेण्डर प्लस तथा अभियुक्तगण रामप्रसाद पाण्डेय उपरोक्त व वशी मोहम्मद उपरोक्त के कब्जे से एक एक स्वचालित पिस्टल 32 बोर व दो-दो कारतूस 32 बार तथा घटना में प्रयुक्त एक बाइक स्प्लेण्डर प्लस बरामद किया गया। उक्त गिरफ्तारी व बरामदगी के आधार पर थाना नैनी पर आयुध अधिनियम के तहत मुकदमा पंजीकृत किया गया। डीसीपी यमुनानगर श्रध्दा नरेन्द्र पाण्डेय ने बताया कि गुरुवार को मुखबिर की अवैध शस्त्र की खरीद व विक्रय की सूचना पर थाना नैनी पुलिस व एसओजी युमनानगर की संयुक्त टीम द्वारा डीपीएस के पूर्वी ओर गंगा कछार थाना क्षेत्र नैनी में घेराबंदी करके अभियुक्तगण शिवम पाण्डेय उर्फ कुनाल पाण्डेय उपरोक्त, रामप्रसाद पाण्डेय उपरोक्त व वशी मोहम्मद उपरोक्त को गिराफ्तार किया गया। अभियुक्त शिवम पाण्डेय उ्फ कुनाल पाण्डेयि उपरोक्त को मौके से अवैध पिस्टल देकर बदले में पैसे लेते समय तथा अभियुक्तगण रामप्रसाद पाण्डेय उपरोक्त व वशी मोहम्मद उपरोक्त को अवैध पिस्टल खरीदते समय गिरफ्तार किया गया। अभियुक्तगण ने पूछ ताछ में बताया कि शिवम पाण्डेय उर्फ कुनाल पाण्डेय पिस्टल की मांग होने पर बिहार, छत्तीसगढ़ व अन्य राज्यों से अवैध शस्त्र मंगवाता है तथा उन शस्त्रों को हम लोग बेचकर अच्छी खासी रकम की कमाई करते है। हम लोगों द्वारा पूर्व में कई लोगों को शस्त्रों की सप्लाई की जा चुकी है, जिनकी बरामदगी की कार्यवाही जारी है।

15 जुलाई को दिव्यांग शिविर का आयोजन

मांडा। विकास खण्ड मांडा मुख्यालय पर 15 जुलाई को दिव्यांगजनों का शिविर आयोजित किया गया है। उक्त कार्यक्रम में कृत्रिम अंग / सहायक उपकरण योजनान्तर्गत विभिन्न प्रकार के सहायक उपकरण एवं बनावटी हाथ-पैर/कैलीपर्स आदि से लाभान्वित किया जाएगा। उपरोक्त जानकारी समाज कल्याण अधिकारी मांडा रवि प्रकाश यादव ने बताया कि ऐसे दिव्यांगजन जिन्हें 03 वर्ष पूर्व योजना का लाभ प्राप्त हुआ है उन्हें वर्तमान वर्ष में सहायक उपकरण ट्राईसाइकिल, व्हील चेयर, कान की मशीन, ब्रेल किट, स्मार्ट केन, कैलीपर्स एवं बनावटी हाथ-पैर आदि सहायक उपकरण से लाभान्वित करने हेतु पात्र दिव्यांगजनों के चिन्होंकन के साथ ऐसे दिव्यांगजन जिनके दिव्यांगता प्रमाण पत्र अभी तक नहीं बने हुए हैं। उनका दिव्यांगता प्रमाण पत्र एवं यूनिक डिसएबिलिटी कार्ड यूडीआईडी बनाये जाने की कार्यवाही पूर्ण की जायेगी। वहीं समाज कल्याण अधिकारी मांडा ने पात्र दिव्यांग लाभार्थियो को दिव्यांग शिविर में पहुंचकर लाभ उठाने की अपील की है।

डीएम ने उन्मुखीकरण कार्यशाला का दीप प्रज्वलित कर किया शुभारम्भ

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के अन्तर्गत ग्रामीण क्षेत्र के बैंक शाखा प्रबंधकों का सूक्ष्म वित्त एवं वित्तीय समावेशन विषय पर एक दिवसीय उन्मुखीकरण कार्यशाला का आयोजन कलेक्ट्रेट परिसर स्थित संगम सभागार में गुरूवार को आयोजित किया गया, जिसका शुभारम्भ जिलाधिकारी नवनीत सिंह चहल द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया। जिलाधिकारी ने वित्तीय वर्ष 2023-24 में उत्कृष्ट कार्य करने वाले जिला मिशन प्रबंधक, बैंक शाखा प्रबंधक, ब्लाक मिशन प्रबंधक, पटल सहायक, बैंक सखी एवं बी0सी0 सखी को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। उपायुक्त (स्वतः रोजगार) राजीव कुमार सिंह द्वारा जनपद प्रयागराज में राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के अन्तर्गत गठित स्वयं सहायता समूहों एवं उनके संगठनों की महिला सदस्यों के आजीविका संवर्धन हेतु वित्तीय वर्ष 2023-24 में प्रदान किये गये वित्तीय सहयोग की सराहना करते हुए आगामी वित्तीय वर्ष में भी सहयोग की अपेक्षा की गयी। साथ ही उपायुक्त (स्वतः रोजगार) द्वारा अवगत कराया गया कि वर्तमान समय में विभाग का एन0पी0ए0 एक प्रतिशत से भी कम है जिसे शून्य करने हेतु बैंको से सहयोग चाहा गया है। इस कार्यशाला में वित्तीय वर्ष 2024-25 का रिजर्व बैंक ऑफ इण्डिया द्वारा जारी मास्टर सर्कुलर एवं राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन की बैंक से सम्बन्धित प्रक्रियाओं पर विस्तार से जानकारी ली।

केंद्रीय रेल विधुतीकरण संगठन को बंद न किया जाय-उज्जवल

रेल मंत्री को पत्र व रेलवे बोर्ड अध्यक्ष से टेलीफोन वार्ता किया सांसद ने

करछना। प्रयागराज सांसद उज्जवल रमण सिंह ने रेलवे बोर्ड अध्यक्ष जया वर्मा से टेलीफोन वार्ता कर कहा कि केंद्रीय रेल विधुतीकरण संगठन को बंद करने की जगह 225 केवी अपग्रेडेशन का कार्य जो 32 हजार करोड़ का होना हैं विभाग को सौंपा जाय। यह जानकारी देते हुए सपा प्रदेश सचिव विनय कुशवाहा ने बताया कि सांसद उज्जवल रमण सिंह ने पत्र लिखकर केंद्रीय रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव व रेलवे बोर्ड अध्यक्ष जया वर्मा से टेलीफोन पर वार्ता कर मांग किया कि रेल विधुतीकरण संगठन को भंग ना किया जाय क्योंकि संगठन ने 50 साल से उत्कृष्ट कार्य किया है जिससे आज देश के अधिकतर हिस्से में रेल विधुतीकरण हो गया जिससें ट्रेन जो डीजल इंजन से चलती थी और उसमें बहुत अधिक मात्रा में डीजल की खपत होती थी जिससे बहुत ज्यादा विदेशी मुद्रा जाता था उसमें बहुत कमी आयीं जिससे रेलवे को सीधा लाभ दिलाने मे यह विभाग की अग्रणी भूमिका थी तो ऐसे विभाग को और पुरस्कृत करने की जरूरत है। उन्होंने बताया कि रेलवे बोर्ड अध्यक्ष जया वर्मा ने सांसद को जबाब में कहा कि रेलवे का सम्पूर्ण विधुतीकरण हो गया रेल विधुतीकरण संगठन के सभी कर्मचारियों का समायोजन कर रेल विधुतीकरण कार्य को ईसीपी मोड पर आगे भी उत्कृष्ट कार्य निष्पादन होगा।

नोडल अधिकारी ने की जल शक्ति अभियान व कैच द रेन विषयक कार्य की समीक्षा

अखंड भारत संदेश

नोडल अधिकारी ने विभिन्न स्थलों का निरीक्षण कर जल संरक्षण हेतु कराये जा रहे कार्यों के बारे में ली जानकारी, दिए आवश्यक दिशा-निर्देश दिए

प्रयागराज। जल संकटग्रस्त जिलों के नोडल अधिकारी बनाए गए नागरिक उड्डयन मंत्रालय, भारत सरकार के संयुक्त सचिव शोभित गुप्ता तथा उनके साथ आये टेक्नीकल ऑफिसर डा0 रंजीत कुमार प्रसाद द्वारा प्रयागराज में जल शक्ति अभियान ह्यह्यकैच द रेनह्लह्ल विषयक दिशा-निर्देशन हेतु त्रिदिवसीय दौरे के क्रम में गुरूवार को सर्किट हाउस के सभागार में जल संरक्षण से सम्बंधित विषयों की रूपरेखा एवं कार्य की समीक्षा की गयी। सहायक अभियंता लघु सिंचाई कुमार गौरव के द्वारा चेकडैम, तालाब, रेन वाटर हार्वेस्टिंग, मेड़बंदी इत्यादि प्रस्तावित कार्य/कराए गए कार्य तथा अन्य विभागों द्वारा दर योजना के तहत किए गए कार्य का प्रस्तुतीकरण किया गया। जल शक्ति अभियान कैच द रेन-2024 ह्यह्यनारी शक्ति से जल शक्तिह्लह्ल थीम के साथ लागू किया जा रहा है, जिसमें जल संरक्षण के क्षेत्र में घर-घर की महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित करनें तथा आगामी 16 जुलाई से 22 जुलाई 2024 के भूजल सप्ताह में जन जागरूकता अभियान में महिलाओं को ह्यह्यनारी शक्ति से जल शक्तिह्लह्ल के रूप में भागीदारी कराते हुये हर घर से जागरूकता कार्यक्रम चलाने का निर्देश नोडल अधिकारी द्वारा दिया गया। उनके साथ आये टेक्नीकल ऑफिसर डा0 रंजीत कुमार प्रसाद ने भी जनपद के भौगोलिक परिस्थितियों के अनुसार रीचार्जिंग हेतु परियोजनाओं को तैयार करनें हेतु जोर दिया। इस अवसर पर जिलाधिकारी नवनीत सिंह चहल, मुख्य विकास अधिकारी गौरव कुमार, जिला विकास अधिकारी भोला नाथ कनौजिया, परियोजना निदेशक अशोक कुमार मौर्य,डीसी मनरेगा, एनआरएलएम तथा बेसिक शिक्षा अधिकारी श्री प्रवीन कुमार तिवारी, जल जीवन मिशन से डीसी श्री एके श्रीवास्तव एवं भूमि संरक्षण विभाग तथा जल निगम ग्रामीण अधिशासी अभियन्ता श्री प्रवीण कुट्टी सहित प्रयागराज विकास प्राधिकरण, लघु सिंचाई आदि विभागो के अधिकारी एवं कर्मचारीगण उपस्थित रहे।

न्यूज झरोखा

जल जीवन मिशन द्वारा दिलाया गया प्रशिक्षण

प्रयागराज। स्थानीय तहसील क्षेत्र के विकास खंड श्रृंगवेरपुर धाम में गुरुवार को जल जीवन मिशन के तहत प्रत्येक ग्राम पंचायत से नौ लोगों जिसमें आशा, एएनएम, आंगनवाड़ी कार्यकत्री, प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक, समूह सखी महिलाओ को प्रशिक्षण विकास खण्ड श्रृंगवेरपुर के बायो वेद रिसर्च इंस्टीट्यूट भगवतीपुर में दिया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि विष्णु कुमार जिला पंचायत सदस्य द्वारा शुभारंभ किया गया। विष्णु कुमार ने कहा कि यह योजना प्रधानमंत्री की स्वर्णिम योजना है। ग्राम पंचायत स्तर पर सभी लोगों को जागरूक करने के लिए यह प्रशिक्षण कार्यक्रम कराया जा रहा है। मिशन का यह प्रशिक्षण कार्यक्रम मेरा पथ एजुकेशन लिमिटेड द्वारा किया गया। जिसमें मुख्य रूप से अभिषेक शुक्ला, शिवाजी राठौर,ओमप्रकाश, सुभाष चंद्र,पंकज, सुशील कुमार, मोनिका,सिमरन, मयंक यादव आदि लोग मौजूद रहे।

प्रमुख सचिव नगर विकास अमृत अभिजात ने महाकुंभ के दृष्टिगत किया स्थलीय निरीक्षण

प्रयागराज। महाकुंभ 2025 को दिव्य एवं भव्य बनाने के दृष्टिगत विभिन्न विभागों द्वारा कराए जाए रहे कार्यों का निरीक्षण प्रमुख सचिव, नगर विकास अमृत अभिजात द्वारा किया गया। सर्वप्रथम उन्होंने लोक निर्माण विभाग द्वारा बनाई जा रही एयरपोर्ट रोड जाकर वहां कराए जा रहे कार्यों का निरीक्षण किया। वहां पर ग्रीनरी विकसित करने हेतु सीजनल पेड़ लगाने के कार्य को अति शीघ्र प्रारंभ करने तथा चौराहों पर इंस्टॉलेशन इस प्रकार लगाने के निर्देश दिए जिससे कि दोनों तरफ विजिबिलिटी बनी रहे एवं एक्सीडेंट होने की संभावना न हो। तत्पश्चात उन्होंने सिक्स लेन ब्रिज, नागवासुकी मंदिर, दशाश्वमेध घाट, किलाघाट हनुमान मंदिर कॉरिडोर तथा अन्य स्थानों का भी निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने सभी कार्यों में गुणवत्ता सुनिश्चित करने के दृष्टिगत निरन्तर मैटीरियल टेस्टिंग कराते हुए उसका प्रॉपर डॉक्यूमेंटेशन मेंटेन करने तथा सभी मुख्य स्थानों एवं मंदिरों हेतु सुव्यवस्थित ढंग से साइनेज प्लान बनाते हुए साइनेजेज लगाने के निर्देश दिए। प्रमुख सचिव ने लेटे हुए हनुमान मंदिर जा कर वहाँ पर पूजन भी किया।

नैनी में पार्षद ने महापौर को किया सम्मानित

नैनी। नैनी में कार्यक्रम के दौरान महापौर गणेश केसरवानी को वरिष्ठ पार्षद मयंक यादव ने समृद्धि चिन्ह देकर किया सम्मानित। वरिष्ठ पार्षद मयंक यादव के अध्यक्षता में किया गया महापौर को सम्मानित। इस अवसर पर संजय पासवान रणविजय सिंह बलराज पटेल उपाध्यक्ष भाजपा पूर्व कनिष्ठ ब्लॉक प्रमुख संजय श्रीवास्तव प्रदीप तिवारी उमेश सेन सुनील विश्वकर्मा राज सिंह नीरज शर्मा रहे।

जल निगम में भाडे पर चलाने के नाम पर सत्ताइस ट्रैक्टर जालसाजों ने हडपे मुकदमा दर्ज

मऊआइमा। अपने को जल निगम का बडा ठेकेदार बताकर जालसाजों ने सत्ताइस ट्रैक्टर किसानों का हडप लिया। मऊआइमा थाने में फ्राडियों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कराया गया है। मऊआइमा थाना क्षेत्र के ग्राम सकरामऊ निवासी मंजीत कुमार पुत्र चिरौंजी लाल से सोरांव थाना क्षेत्र के ग्राम सराय बाजू गिरधरपुर निवासी मनोज कुमार पुत्र जयकरन ने बताया कि जल निगम का दो बडा ठेकेदार है जो ठेके पर प्रति माह बीस हजार देकर ट्रैक्टर लेता है।और हर महीने ट्रैक्टर मालिक के खाते में आ जाता है। वह भी अपना ट्रैक्टर दिया है और हर महीने बीस हजार रुपए खाते में आ रहा है। बताया गया है कि एक एकरारनामा तहसील सोरांव से बनवाकर राम खेलावन,विजय कुमार, सुभाष चन्द्र आदि कुल सत्ताइस ट्रैक्टर मालिकों ने उक्त कथित जालसाज ठेकेदारों को दे दिया। बताया गया है कि शुरू में बीस हजार आया फिर बंद हो गया। बताया गया है कि बाद में भूल जाने और जान से मारने की धमकी दी गई।जिसपर मंजीत और मनोज कुमार आदि ने मऊआइमा थाने में उमेश कुमार और नौशाद खां पता अज्ञात के खिलाफ मुकदमा दर्ज करा दिया है। उक्त घटना से क्षेत्र के किसानों में हड़कंप मचा हुआ है।

कार्यकरिणी समिति के छः सदस्यो का निर्वाचन सम्पन्न

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। नगर निगम प्रयागराज गुरुवार को कार्यकरिणी समिति के छह सदस्यों का निर्वाचन की कार्यवाही के दौरान नगर आयुक्त नगर निगम प्रयागराज चन्द्र मोहन गर्ग तथा महापौर उमेश चन्द्र गणेश केसरवानी तथा सभी पार्षदगण उपस्थित हुए। महापौर जी द्वारा सदन की अध्यक्षता करते हुये उपस्थित सभी माननीय पार्षदागणो से नाम प्रस्ताव हेतु आमांत्रित किया गया। जिसके फलस्वरूप अजय यादव द्वारा प्रेम शंकर यादव, नीरज गुप्ता द्वारा सुनीता चोपड़ा, सियाराम द्वारा राम मिलन पासी, रमीज हसन द्वारा अब्दुल हसन, अशीष द्विवेद्वी द्वारा ज्ञान चन्द्र मिश्रा, भोला तिवारी द्वारा कमलेश तिवारी, दिगविजय कुशवाहा द्वारा गुलाब पटेल के नामों का प्रस्ताव माननीय सदन में रखा गया। तत्पश्चात माननीय महापौर द्वारा आधे घंटे का समय प्रस्तावित नामों को वापस लेने के लिये दिया गया जिसमें एक भी प्रस्ताव नाम वापसी का नही आया तथा अपराहन 1.30 बजे से 05:00 बजे तक सभी पार्षदों एव लोक सभा सदस्य, विधान सभा सदस्यों एवं विधान परिषद सदस्यों द्वारा अपने मतो का प्रयोग किया। इस निर्वाचन में कुल 100 पार्षदों 12 सदस्य तथा 1 महापौर के मतों का प्रयोग करते हुए कुल 108 मत 7 सदस्यों के पक्ष में डाले गये, जिसमें 6 मत अवैध घोषित हुए तथा 102 वैध मत घोषित हुए। निर्वाचन के दौरान 99 मतो का प्रयोग पार्षदों द्वारा, 8 मत पदेन सदस्य सांसद प्रवीण पटेल, सांसद उज्जवल रमण, विधायक हर्ष वर्धन बाजपेयी , विधायक श्रीमती गीता पासी, विधायक गुरू प्रसाद मौर्या , विधायक पीयूष रंजन निषाद, विधान परिषद सदस्य डा. केपीश्रीवास्तव, विधान परिषद सदस्य डा. मान सिंह जी द्वारा तथा एक मत महापौर उमेश चन्द्र गणेश केसरवानी जी द्वारा अपने मतो का प्रयोग करते हुए अपना-अपना मत दिया गया।

निर्वाचन कमेटी द्वार मतों की गिनती में प्राप्त मतो के अनुसार निम्न सदस्य निर्वाचित हुए

(1) सदस्य ज्ञानेन्द्र मिश्र 22 मत प्राप्त हुए निर्वाचित घोषित हुए । (2) सदस्य गुलाब सिंह 18 मत प्राप्त हुए निर्वाचित घोषित हुए (3) सदस्य श्रीमती सुनीता चोपड़ा 17 मत प्राप्त हुए निर्वाचित घोषित हुए । (4) सदस्य राम मिलन 16 मत प्राप्त हुए निर्वाचित घोषित हुए । (5) सदस्य प्रेम शंकर 12 मत प्राप्त हुए निर्वाचित घोषित हुए । (6) सदस्य अब्दुल समदया 11 मत प्राप्त हुए निर्वाचित घोषित हुए (7) सदस्य कमलेश विवारी 06 मत प्राप्त हुए अनिर्वाचित घोषत हुए। महापौर जी द्वारा सभी निर्वाचित कार्यकारिणी समिति के सभी छः सदस्यों को उनके जीत पर बधाई देते हुए पुष्प गुच्छ देकर सम्मानित किया गया। इस दौरान नगर निगम प्रयागराज समस्त अधिकारीगण व कर्मचारीगण उपस्थित रहे सम्पूर्ण निर्वाचन प्रक्रिया का संचालन सचिव परिषद/मुख्य कर निर्धारण अधिकारी पी0के0द्विवेदी तथा मुख्य नगर लेखा परीक्षक बालेन्दू मिश्र द्वारा किया गया।

ऑनलाइन उपस्थिति के विरोध में जिला अधिकारी के माध्यम से शिक्षकों ने मुख्यमंत्री को संबोधित दिया ज्ञापन

प्रयागराज। आज उत्तर प्रदेशीय प्राथमिक शिक्षक संघ, संबद्ध अखिल भारतीय प्राथमिक शिक्षक संघ, नई दिल्ली, की जनपद इकाई शाखा प्रयागराज शाखा ने प्रदेश सरकार द्वारा डिजिटलाइजेशन के विरोध में माननीय मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश सरकार को संबोधित ज्ञापन जिला अधिकारी महोदय को दिया। माननीय मुख्यमंत्री महोदय को संबोधित इस ज्ञापन में जिलाध्यक्ष अखिलेश कुमार द्विवेदी के नेतृत्व में बेसिक शिक्षा विभाग में शिक्षकों की ऑनलाइन उपस्थिति व समस्त रजिस्टरों के डिजिटाइजेशन की प्रक्रिया का विरोध किया गया। संघ के सदस्यों ने विभाग के इस प्रकार के शिक्षक विरोधी निर्णय को अस्वीकार करने का निर्णय लिया।संघ ने अपने ज्ञापन के माध्यम से शासन को अवगत कराया गया कि शिक्षकों की कई महत्वपूर्ण मांगें अभी तक शासन स्तर पर लंबित हैं, जिनका निराकरण होना आवश्यक है। शिक्षकों की प्रमुख मांग निम्नवत है।शिक्षकों को 30 ई एल की सुविधा प्रदान की जाए। शिक्षकों को अर्ध अवकाश की सुविधा प्रदान की जाए। राज्य कर्मचारियों की भांति शिक्षकों को चिकित्सा सुविधा प्रदान की जाए।समय से शिक्षकों को पदोन्नति प्रदान की जाए।शिक्षकों की वेतन विसंगति को दूर किया जाए। क्त शिक्षक समस्याओं से संबंधित ज्ञापन जिला प्रशासन को दिया गया।

रिटायर प्रोफेसर के घर से लाखों की चारा

प्रयागराज। जार्जटाउन थाने में रिटायर प्रोफेसर के घर में ताला तोड़कर लाखों की चोरी का मुकदमा दर्ज हुआ है। पुलिस सीसीटीवी फुटेज के आधार पर चोरों की तलाश में जुटी है। आशुतोष मिश्र अवकाश प्राप्त प्रोफेसर हैं और वह फेकेल्टी हाउसिंग स्कीम भारतीय विज्ञान एवं शोध संस्थान, पुणे में रहते हैं। तुलारामबाग स्थित घर की देखरेख के लिए केयरटेकर योगेंद्र मिश्र को रखा है। तहरीर दी है कि केयरटेकर ने जानकारी दी कि घर का ताला तोड़कर चोरी हुई है। घर में घुसे चोर आलमारी का ताला तोड़कर नकदी और जेवर उठा ले गए।

कॉल्विन में डॉक्टरों की कमी से दिक्कत

प्रयागराज। कॉल्विन अस्पताल में डॉक्टरों के पद रिक्त होने के कारण चिकित्सा व्यवस्था पटरी से उतर रही है। ओपीडी में पता चलता है संबंधित विभाग के डॉक्टर ही नहीं हैं। बुधवार को मेडिसिन, बाल रोग, हृदय रोग,त्वचा रोग की ओपीडी में सुबह 11 बजे तक मरीज इंतजार करते रहे। वहीं, थायराइड की जांच न होने से दिक्कत है। लगभग 13 डॉक्टरों के पद रिक्त हैं, जिसमें इमरजेंसी मेडिकल ऑफिसर का पद भी शामिल है।

क्रेडिट कार्ड से 98 हजार की ठगी

प्रयागराज। जार्जटाउन थाने में क्रेडिट कार्ड के माध्यम से 98 हजार रुपये की ठगी का मामला सामने आया है। जब पीड़ित के पास बैंक से क्रेडिट कार्ड की सीमा खत्म होने और खाते में रकम जमा करने का फोन आया तो ठगी का पता चला। बैंक से जानकारी करने पर पता चला कि उनके क्रेडिट कार्ड से दो कंपनी में 49,440 और 48,998 रुपये का भुगतान हुआ है। तब उन्होंने क्रेडिट कार्ड बंद कराया और पुलिस को तहरीर दी। अल्लापुर में रामानंद नगर की रहने वाली सुमन शर्मा ने तहरीर दी है कि कुछ दिन पहले उनके मोबाइल पर एक व्हाटसअप मैसेज आया था। उसने खुद एचडीएफसी बैंक की कर्मचारी मीरा बताया।

छुट्टी पर घर जा रहा पीएसी का जवान बेहोश होकर गिरा

प्रयागराज। कर्नलगंज थाने में सरस्वती निवासी जवाहरगंज ढहरिया ने आदित्यवर्धन सहित तीन के खिलाफ जान से मारने की धमकी और एससी- एसटी एक्ट में मुकदमा दर्ज कराया है। सरस्वती देवी का कहना है कि उसने आरोपियों के खिलाफ शिकायत की थी। इससे नाराज आदित्यवर्धन और उनके परिवार ने जातिसूचक गालियां दी और जेल भिजवाने की धमकी भी दी। नैनी। नैनी क्षेत्र के कॉटन मिल इलाके में छुट्टी पर घर जा रहा सिपाही अचानक गश खाकर सड़क पर गिर गया। लोगों की सूचना पर पहुंचे साथी सिपाही को इलाज के लिए ले गए। 42वीं वाहिनी पीएसी में आरक्षी के पद पर तैनात देवेंद्र सिंह गुरुवार को छुट्टी लेकर घर जा रहे थे। कॉटन मिल तिराहे के पास बेहोश होकर गिर गए। लोगों ने पहले पानी का छींटा मारकर होश में लाने का प्रयास किया, लेकिन जब वह होश में नहीं आए तो 42 बटालियन के जवानों को सूचना दी। मौके पर पहुंचे जवानों ने बेहोश सिपाही को साथ ले गए।

35 वर्षों से निरंतर गतिशील सरदार पतविंदर सिंह

नैनी। नैनी भारतीय जनता पार्टी अल्पसंख्यक मोर्चा काशी क्षेत्र, क्षेत्रीय उपाध्यक्ष सरदार पतविंदर सिंह गुरु नानक नगर गुरुद्वारा रोड नैनी प्रयागराज निवासी हैं जिन्होंने जनसंख्या नियंत्रण प्रधानमंत्री के आह्वान पर शादी का परित्याग किया' जिसके लिए समाज से बहुत सारी बातें भी सुननी पड़ती हैं किंतु इन्होंने देश हित, पर्यावरण, वायु प्रदूषण मुक्त रहे का संकल्प ले रखा है। सरदार पतविंदर सिंह गंगा यमुना सरस्वती भूगर्भ में पावन संगम जिसे त्रिवेणी भी कहा जाता है को प्रदूषण मुक्त रखने के लिए मात्र 13 वर्ष की आयु से ही जन जागरूकता का कार्य समाज के बीच में कर रहे हैं। ग्रामीण एवं मलिन बस्तियों में युवा-युवतियों को जागरूक बनाते हेतु राष्ट्र की मुख्यधारा से जोड़ने हेतु युवा शक्ति को रचनात्मक कार्यों में प्रोत्साहित करते हैं कोरोना महामारी के दौरान पूरी तत्परता के साथ मानवता को बचाने के लिए मास्क्स, सेनिटाइजर, दो गज दूरी, बराबर हाथ धोने के लिए प्रेरित दिन प्रतिदिन करते रहे। युवाओं को नशीले पदार्थ, गुटका नशीली दवाओं के सेवन से बचाने के लिए ज्योति जगाने का प्रयास किया कि पूरे भारतवर्ष में पूर्ण नशा बंदी लागू हो पूर्ण नशा बंदी से युवा पीढ़ी की उर्जा देश के विकास में लगेगी बाल श्रम से बचाने के लिए बच्चों के माता-पिता को जन जागरूकता कर समस्या का समाधान करना ताकि समाज के इस कोढ से जल्द से जल्द छुटकारा पाया जा सके। देश में पुरुषों के मुकाबले, महिलाओं की घट रही संख्या से बढ़ते असंतुलन को समाप्त करने के लिए कन्या भ्रूण हत्या बंद करो की आवाज, नव दंपतियों सहित आम महिलाओं, पुरुषों को जागृत किया। पर्यावरण के प्रति जन चेतना जगाते हुए जगह-जगह वृक्षारोपण करना और कराना उनकी परवरिश का पूरा ध्यान रखना जिससे लकरोना काल में हुई ऑक्सीजन की कमी, आने वाली पीढ़ी को ना हो इसके लिए प्रति व्यक्ति को पंचवटी वृक्ष जरूर लगाना चाहिए लगातार प्रेरित कर रहे हैं लोकतंत्र को मजबूत करने के लिए मतदान अवश्य करें का आह्वान ग्राम सभा, नगर निगम, विधानसभा, लोकसभा सभी चुनाव में मतदान अवश्य करें, सुयोग्य प्रत्याशी चुने की चेतना 365 दिन इनकी जन जागरूकता दिन प्रतिदिन चलती रहती है। भारतीय जनता पार्टी अल्पसंख्यक मोर्चा काशी क्षेत्र, क्षेत्रीय उपाध्यक्ष सरदार पतविंदर सिंह ने कहा कि पानी का गहराता संकट बहुत बड़ी समस्या है आने वाले तीसरे विश्व युद्ध से बचना है तो पानी को बचाना होगा घर में जल संरक्षण शुरू करें जल संरक्षण के प्रति चेतना जगाना पानी का दुरुपयोग व पानी की बबार्दी होने से रोकना के प्रति समाज में जागरूकता उत्पन्न कर रहा हैं'

आकाशीय बिजली गिरने से पांच की मौत, दो की हालत गंभीर, घरों में मचा कोहराम

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। इंद्रदेव की गर्जना के साथ कड़ाके के साथ हुई जोरदार वारिश व आकाशीय बिजली के बुधवार व गुरुवार को गिरने से चार लोगो की मौके पर दर्दनाक मौत हो गई और दो की हालत गंभीर होने पर रायबरेली के लिए रिफर कर दिया गया।

मिली जानकारी के अनुसार बुधवार की शाम अचानक हुई जोरदार वारिश व आसमान से आकाशीय बिजली के गिरने से मानिकपुर थाना क्षेत्र के अतौलिया निवासी क्रांती देबी पुत्री रामकुमार विश्कर्मा (20) व गुड्डू सरोज पुत्र बंशीलाल सरोज (35) निवासी असोगी संग्रामगढ़ व नवाबगंज थाना क्षेत्र के सैफू का पुरवा हिनाहु निवासी एडवोकेट पंकज त्रिपाठी पुत्र प्रताप नारायन त्रिपाठी (52) वर्षीय की आकाशीय बिजली गिरने से मौके पर दर्दनाक मौत हो गई सभी मृतको को सी एच सी कालाकांकर लाया गया जंहा चिकित्सकों ने मृत घोषित कर दिया। घटना को लेकर मृतक के परिजनों मे कोहराम मचा हुआ है। आकाशीय बिजली से गंभीर रूप से घायल शिवा पटेल अतौलिया मानिकपुर निवासी को चिकित्सको ने रायबरेली के लिए रिफर कर दिया।

आकाशीय बिजली के गिरने से नया पुरवा लाल पट्टी संग्रामगढ़ निवासी सूर्यकली पत्नी राम स्वरूप पटेल (65) वर्षीय की बुधवार को मौत हो गई। मृतक एडवोकेट पंकज त्रिपाठी कुंडा कचहरी मे एडवोकेट है जो बुधवार को अपनी कार से कुंडा से लौट रहे थे कि पाल ढाबा के पास अचानक जोरदार वारिश व बिजली की तड़तडाहट को देखते हुए अपनी कार को बरमदेव मंदिर के पास खड़ी करके उतर गये और मंदिर के पास पेड़ के नीचे खड़े हो गये कि अचानक बिजली के गिरने से मौके पर मौत हो गई आस पास के लोगो ने नवाबगंज पुलिस को सूचना दी मौके पर पहुंची पुलिस ने घटना की जानकारी परिजनों को दी और शव को सीएचसी ले गये जहां चिकित्सकों ने पंकज को मृत घोषित कर दिया परिजनों मे कोहराम मच गया।

नवाबगंज थाना क्षेत्र के मोगरहन का पुरवा जनवामऊ मे आकाशीय बिजली के गिरने से राजकमल मौर्या (22) वर्षीय की मौके पर मौत हो गयी और वंदना सरोज पत्नी विजय भान सिंह (27) आकाशीय बिजली की चपेट मे आने से गंभीर रूप से झुलस गये, जिनको सी एच सी कालाक़ाकर ले गये जंहा चिकित्सको ने राजकमल को मृत घोषित कर दिया और वंदना सरोज को ऊंचाहार रायबरेली के लिए रिफर कर दिया मृतक के परिजनों मे कोहराम मचा हुआ है।

आकाशीय बिजली से पति-पत्नी सहित तीन की मौत

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। तेज बारिश के दौरान आकाशीय बिजली गिरने से पति-पत्नी सहित तीन की मौत हो गई जिससे परिजनों में कोहराम मच गया। सूचना पर पहुंची पुलिस शव को कब्जे में लेकर शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। कंधई थाना क्षेत्र के जयसिंहगढ़ पुरुषोत्तमपुर गांव निवासी अर्जुन 45 तथा उसकी पत्नी सुमन 43 गांव के एक युवक के यहां धान की रोपाई करके घर वापस लौट रहे थे कि अचानक लगभग साढ़े चार बजे तेज बारिश के कारण वह दोनों बगल पंपिंग सेट के कमरे के पास बैठ गए इसी दौरान अचानक आकाशीय बिजली गिरने से पति-पत्नी बुरी तरह झुलस गए। आनन-फानन में परिजन उन्हें जिला अस्पताल ले गए जहां दोनों की मौत हो गई। घटना की सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंच गई। मृतक के इकलौते बेटे पंकज का रो रोकर बुरा है। इसी तरह कंधई थाना क्षेत्र के ही अमहरा गांव के श्याम लाल यादव की पत्नी राम प्यारी 55 का धान की रोपाई करते हुए आकाशीय बिजली गिरने से मौत हो गई। मौत की सूचना मिलने पर परिजनों में कोहराम मच गया।

सह जिला विद्यालय निरीक्षक को सम्मानित करते प्रधानाचार्यगण।

सह जिला विद्यालय निरीक्षक ने किया कार्यभार ग्रहण

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। पूर्व सह जिला विद्यालय निरीक्षक देवरिया राजेंद्र प्रसाद सरोज ने सह जिला विद्यालय निरीक्षक प्रतापगढ़ के पद पर कार्यभार ग्रहण किया। इस अवसर पर प्रधानाचार्य राजकीय इंटर कालेज रामपुर कांपा प्रतापढ़ डॉ विंध्याचल सिंह, उप प्रधानाचार्य राजकीय बालिका इंटर कालेज प्रतापगढ़ डॉ मो अनीस सहित प्रधानाचार्य पंडीडीयूजीएमआई महुली प्रतापगढ़ राहुल कुमार सिंह, प्रधानाचार्य पंडीडीयूजीएमआई महेवा मलकिया प्रतापगढ़, प्रधानाचार्य राजकीय इंटर कालेज पूरबगांव प्रतापगढ़ रंजन प्रताप, राघवेंद्र शुक्ल, अभिषेक मिश्रा, श्याम शंकर सरोज, रमेश सिंह, अजमत अली आदि ने नवागत सह जिला विद्यालय निरीक्षक प्रतापगढ़ को बधाई दिया और शुभकामना दिया।

विपक्ष झूठ फैलाने में कामयाब हुआः विनोद सोनकर

बाबागंज कुण्डा में आयोजित हुआ मतदाता अभिनन्दन समारोह

अखंड भारत संदेश

कुण्डा, प्रतापगढ़। कौशांबी लोकसभा के कुण्डा बाबागंज विधानसभा में गुरुवार को आयोजित मतदाता अभिनन्दन समारोह में बतौर मुख्य अतिथि पूर्व सांसद विनोद सोनकर ने आये हुए कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कहा कि विपक्ष हमेशा की तरह झूठ इस बार भी बोला। यही नहीं चुनाव के समय बहुत तरह के भ्रम फैलाने वाले 99 सीट पर खुशी मना रहे हैं। उन्होंने कहा कि चुनाव के दौरान संविधान का डर दिखा कर भ्रम फैलाया गया। जबकि संविधान निर्माता बाबा साहब भीम राव अंबेडकर सहित पूरी टीम ने ऐसी व्यवस्था दी है कि जब जब आवश्यकता तो समय के अनुसार संसोधन हो सके। मेरे द्वारा कराए गए विकास कार्यो को लोग हमेशा याद करेंगे। गुरुवार को बाबागंज के हीरागंज चेयरमैन प्रतिनिधि उदय शंकर पाण्डेय के आवास व कुण्डा विधानसभा के मानिकपुर नगर पंचायत कार्यालय में आयोजित कार्यक्रम को सांसद ने सम्बोधित किया। मानिकपुर नगर पंचायत कार्यालय में सांसद ने वृक्षारोपण किया। कार्यक्रम में जिला अध्यक्ष आशीष श्रीवास्तव, भाजपा नेता शिव प्रकाश मिश्र सेनानी, जिला उपाध्यक्ष राजन मिश्र, जिला महामन्त्री पवन गौतम, सतीश चैरसिया, मीडिया प्रभारी भूपेन्द्र पाण्डेय, आशुतोष जायसवाल, पूर्व जिला महामन्त्री अशोक मिश्र आदि मौजूद रहे।

मतदान अभिनंदन समारोह में पूर्व सांसद का स्वागत करते लोग।

आईटीआई भवन का प्रमोद तिवारी ने किया निरीक्षण

आकाशीय बिजली से मौत को लेकर परिजनों के पोंछे आंसू

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। राज्यसभा में विपक्ष के उपनेता प्रमोद तिवारी ने गुरूवार को बेलहा स्थित राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान के पूर्ण हुए निर्माण कार्यो का औचक निरीक्षण किया। बीते वर्ष 2016 में क्षेत्रीय विधायक आराधना मिश्रा मोना द्वारा स्वीकृत कराये गये आईटीआई का निर्माण सात करोड़ उन्तालिस लाख सैंतीस हजार रूपये की लागत से हुआ है।

राज्यसभा सदस्य प्रमोद तिवारी के निरीक्षण के दौरान कार्यदायी संस्था उत्तर प्रदेश आवास एवं विकास परिषद की ओर से उन्हें यह जानकारी दी गयी कि संस्थान के निर्माण कार्य को पूर्ण कर विभाग को हस्तांतरित कर दिया गया है। राज्यसभा सदस्य प्रमोद तिवारी ने नोडल अधिकारी बी.बी. सिंह तथा कार्यदायी संस्था को परिसर में साफ सफाई पर विशेष ध्यान देने को कहा। उन्होनें कहा कि तकनीकी ज्ञान से मेधाविवों को यह संस्थान बहुत जल्द क्रियाशील कराकर उपयोगी बनाया जाएगा। उन्होनें आईटीआई की स्थापना में क्षेत्रीय विधायक मोना की मेहनत की सराहना करते हुए कहा कि इस संस्थान के जरिए रामपुर खास में रोजगारपरक शिक्षा की मजबूती के साथ आत्मनिर्भरता का भी वातावरण बनेगा। इसके बाद सांसद प्रमोद तिवारी रानीगंज कैथौला क्षेत्र के मधुकरपुर भटपुरवा गांव पहुंचे। यहां पिछले मंगलवार को अचानक आकाशीय बिजली में गांव के किसान रामराज वर्मा के निधन पर परिजनों से मिलकर संवेदना जतायी। दौरे में सांसद प्रमोद तिवारी के साथ प्रतिनिधि भगवती प्रसाद तिवारी, चेयरपर्सन प्रतिनिधि संतोष द्विवेदी, मीडिया प्रभारी ज्ञानप्रकाश शुक्ल, केडी मिश्र मौजूद रहे।

आईटीआई प्रशिक्षण संस्थान का निरीक्षण करते राज्यसभा सदस्य प्रमोद तिवारी।

गयासपुर में हुई डकैती व गोलीकाण्ड का पुलिस ने किया खुलासा, दो गिरफ्तार

नगदी और अवैध तमंचा पुलिस ने किया बरामद

अखंड भारत संदेश

कुण्डा, प्रतापगढ़, एक सप्ताह पूर्व कुंडा थाना क्षेत्र के गयासपुर मे हुई डकैती और गोली कांड के मामले का पुलिस ने खुलासा करते हुए दो आरोपिओ को गिरफ्तार करके न्यायालय भेज दिया। बता दें कि 6 जुलाई को गयासपुर मे चोरी की एक बड़ी घटना कारित हुयी थी जिसमे दौराने अपराध गोली भी चलाई गयी थी जिसमे एक लड़की घायल हो गयी थी। घटना के बाद आईजी जोन समेत बड़े अधिकारिओं ने गयासपुर का दौरा करके कुंडा पुलिस को मामले के जल्द खुलासे का आदेश दिया था।

नवनियुक्त पुलिस अधीक्षक डा अनिल कुमार ने घटना के जल्द निस्तारण और खुलासे के लिए स्वाट टीम को भी कुंडा भेजा था जिसके चलते स्वाट टीम और स्थानीय पुलिस के संयुक्त अभियान मे मामले का एक सप्ताह के भीतर खुलासा करते हुए दो अभियुक्तों को गिरफ्तार किया।

पकड़े गये अभियुक्त शुभम दुबे पुत्र कमलेश दुबे निवासी बंतरी रैयापुर थाना कुंडा और चंदिका प्रसाद शुक्ला पुत्र स्व ज्ञान चंद शुक्ला निवासी तिलौरी थाना कुंडा का रहने वाला है। पूछताछ मे उसने गयासपुर और मीरपुर मे हुयी लूट मे शामिल होकर उसे करने की बात कबूल किया। उसने बताया की इस·कार्य मे उसके पिता कमलेश दुबे पुत्र अखिलानंद दुवे, अंशु उर्फ़ कृपा शंकर पांडे निवासी शीतलपुर थाना कुंडा समेत आधा दर्जन लोगो की गैंग है। इनके ही गैंग ने मीरपुर बनोही के रहने वाले कृष्ण कुमार पांडे एडवोकेट के यहाँ डेढ़ माह पहले चोरी की घटना को अंजाम दिया था। घटना का खुलासा करते हुए एडीशनल एसपी पश्चिमी संजय राय ने मीडिआ को बताया की पुलिस ने मुखबिरो के माध्यम से मामले पर निगाह बनाया तो उक्त आरोपी गण निशाने पर आ गये जिन्हे धर दबोचा गया।

इनके पास लुटे गये पैसो मे से नौ हजार रु नगद और एक अवैध तमन्चा और कारतूस भी बरामद किया गया है। गिरफ्तार करने वाली टीम मे स्वाट टीम के उप निरीक्षक सुनील कुमार यादव, के साथ आरक्षी गण धनंजय राय, राजेंद्र कुमार, जागीर सिंह, अरविन्द दुबे, सनोज कुमार, श्रीराम सिंह और आशुतोष पांडे और कुंडा पुलिस के थाना प्रभारी सतेन्द्र सिंह, उप निरीक्षक गोविंद सिंह चैहन, गिरीश धर दुबे, अंकित तिवारी और दुर्गेश सिंह और आरक्षी गण उमा शंकर भारती, सुशील कुमार, मनीष राय आदि शामिल रहे।

पुलिस की गिरफ्त में अभियुक्तगण।

बकुलाही नदी की प्राचीन पुनरोद्धारित धारा का समाज शेखर ने किया भ्रमण

डायवर्जन डैम न बनने से लाखों लोगों के जीवन में बना है जल संकट

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। बकुलाही नदी पुनरोद्धार अभियान के संयोजक सामाजिक कार्यकर्ता समाज शेखर ने बकुलाही नदी की प्राचीन जल धारा का स्थलीय भ्रमण किया। भ्रमण के दौरान प्राचीन धारा पूरी तरह सूखी पडी मिली, आसपास की धरती विरान सी नजर आ रही है।

ग्रामीणों ने कहा कि भयहरणनाथ धाम के सामने 2013 से सरकार द्वारा प्रस्तावित डायवर्जन डैम न बनने से लाखों लोगों के जीवन में घोर जलसंकट बना हुआ। भयहरणनाथ धाम के महासचिव समाज शेखर ने हैंसी, शिवरा, बाबूपुर व सरायदेवराय ग्राम में बकुलाही नदी के किनारे किनारे नदी क्षेत्र का भ्रमण कर स्थलीय जायजा लिया। हैन्सी में कटरा गुलाब सिंह से प्रतापगढ मुख्य मार्ग पर स्थित बकुलाही नदी पर बनी पुलिया के ठीक सामने पूर्व की ओर नदी को में काफी गहरी खुदाई दिखाई पडी, ग्रामीणों से पता करने पर स्पष्ट हुआ कि 3 दिन पहले से बडी जे0सी0बी0 द्वारा निजी खुदाई हुई है। इस अवैध खनन से जनसामान्य में काफी खतरा उत्पन्न हो गया है। उक्त स्थल की बीडियो और फोटो के साथ कार्य की जांच कराके आवश्यक कार्यवाही हेतु जिलाधिकारी व पुलिस अधीक्षक को वाटसअप पर सूचना दी गई है। नगर पंचायत अध्यक्ष मुन्ना यादव से अनुरोध किया कि वार्ड पूरे तोरई में गौरा के सामने गेल की गैस पाइप लाईन के नीचे साइफन की पाइप में सफाई की नितांन्त आवश्यकता है साथ ही आसपास अपेक्षित सफाई से ही प्राचीन जल धारा प्रवाहमान हो सकेगी। जिससे लाखों लोगों व जीव जन्तुओं को इस बरसात पानी मिल सकेगा।

बकुलाही नदी के भ्रमण के दौरान लोगों से बात करते समाज शेखर।

विवाहिता की तहरीर पर दहेज उत्पीड़न का मुकदमा दर्ज

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। दहेज की मांग पूरी न होने पर ससुराल वालों ने विवाहिता को मारपीट कर घर से भगा दिया रानीगंज थाना क्षेत्र के खमपुर दुबे पट्टी दयाल पुर गांव निवासी राम मिलन शुक्ला ने अपनी बेटी पिंकी की शादी 19 जनवरी 2023 को हिंदू रीति-रिवाज के मुताबिक के साथ किया था। दहेज में पांच लाख रुपए व कार की अतिरिक्त मांग होने लगी और ससुराली जनों की तरफ से पिंकी को प्रताड़ित किया जाने लगा फोन द्वारा मामले को सुलझाने का प्रयास रिश्तेदारों के माध्यम से होती रही लेकिन ससुराल वालों ने पिंकी को मायके से लाने को तैयार नहीं थे पिता राममिलन इतनी रकम दहेज में और देने असमर्थता जताई। दहेज की मांग पूरी न होने पर ससुराल वालों ने जान से मारने की धमकी दी पिंकी की तहरीर पर कंधई पुलिस ने पति अजय मिश्रा ससुर पवन मिश्रा सास पूनम मिश्रा ननद रिया मिश्रा के खिलाफ दहेज उत्पीड़न के साथ-साथ अन्य गंभीर धाराओं में पुलिस मुकदमा पंजीकृत कर लिया। इस संबंध में थानाध्यक्ष कधंई अवन कुमार दीक्षित से बात की गई उन्होंने बताया कि पीड़िता पिंकी मिश्रा की तहरीर पर पति ससुर सास ननद के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया गया है मामले की जांच की जा रही है।

पति-पत्नी को घर में घुसकर पीटने के मामले में रिपोर्ट दर्ज

पट्टी, प्रतापगढ़। नाली के विवाद को लेकर पड़ोसियों ने पति-पत्नी को घर में घुसकर लाठी डंडे से पीट कर गंभीर रूप से घायल कर दिया कधंई थाना क्षेत्र के ताला गांव निवासी सुशीला देवी पत्नी संतोष कुमार को 9 जुलाई की शाम 5 नाली के विवाद में कहासुनी होने लगी इसी बीच राजू,दीपक रघुवर घर में घुसकर सुशीला देवी को मारने पीटने लगे बचाने पहुंचे पति को भी आरोपी ने जमकर पीटा सुशीला देवी के कपड़े अस्त-व्यस्त हो गए घसीटकर घर से बाहर लाकर मारपीट कर घायल कर दिया सुशीला देवी की तहरीर पर कधंई पुलिस ने राजू दीपक रघुवर के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया है।

शासन की आनलाइन हाजिरी नहीं मान रहे शिक्षक

विरोध में बीआरसी पर चलाया गया हस्ताक्षर अभियान

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। परिषदीय विद्यालयों में ऑनलाइन हाजिरी शिक्षकों को कतई रास नहीं आ रही है। विरोध में बीआरसी पर बैठक कर शिक्षकों ने हस्ताक्षर अभियान को चलाया। स्थानीय विकास खंड स्थित ब्लॉक संसाधन केंद्र पर शिक्षकों ने बैठक कर ऑनलाइन हाजिरी पर अपनी असहमति जताई।

शिक्षकों ने एक स्वर से कहा की जब तक हमारी जायज़ मांगें स्वीकार नहीं की जाती तब तक ऑनलाइन हाजिरी व्यवस्था का बहिष्कार रहेगा। इसके लिए चलाए गए हस्ताक्षर अभियान के तहत शिक्षकों ने अपनी एकजुटता का परिचय भी दिया। बता दें कि सोमवार से लागू की गई ऑनलाइन हाजिरी का शिक्षकों ने लगभग पूरी तरह बहिष्कार कर रखा है। एक ओर जहां बीते मंगलवार को ब्लॉक कार्यसमिति एवम संघर्ष समिति की संयुक्त बैठक आयोजित कर विभिन्न समस्याओं के निस्तारण किए जाने तक पूरी तरह से ऑनलाइन हाजिरी का बहिष्कार जारी रखने का निर्णय लिया गया वहीं गुरुवार को ब्लॉक के समस्त शिक्षकों की बैठक में कहा गया कि विभाग द्वारा जारी आदेश में व्यावहारिकता का तनिक भी ख्याल नहीं रखा गया है। प्राथमिक शिक्षक संघ अध्यक्ष संतोष कुमार मिश्र ने कहा कि उपार्जित अवकाश, ईएल, सीएल, हाफ लीव और दूसरे शनिवार की छुट्टी की शिक्षकों की मांग को लेकर अभी तक कोई निर्णय नहीं लिया गया है। ऐसे में विभाग को शिक्षकों की मांगों को जल्द से जल्द पूरा करना चाहिए। संघ के मंत्री विष्णु कुमार सिंह ने कहा कि रास्ते में भीषण जाम से लेकर ग्रामीण इलाकों के मुश्किल भरे रास्तों में शिक्षकों को जूझना पड़ता है। कहीं जलभराव है तो कहीं इंटरनेट की सुविधा नहीं है। ऐसे हालात में ऑनलाइन हाजिरी कैसे हो सकती है। ऑनलाइन अटेंडेंस से शिक्षकों के साथ दुर्घटनाएं बढ़ेगी। इस मौके पर हिमांशु ओझा, अंबरीश मिश्रा, सुनील सिंह, ऋषि द्विवेदी, आशीष मिश्रा, संजय गुप्ता, प्रदीप पांडेय, संजीव द्विवेदी, डा.दिनेश तिवारी, संजीव तिवारी, चंद्रभान मौर्या, आशा रानी, साबिरा खातून, इंसान देवी आदि मौजूद रहे।

आनलाइन हाजिरी का विरोध जताते शिक्षकगण।

विरोध जारी, पर रोका जा सकता है वेतन

लालगंज। ऑनलाइन हाजिरी के विरोध पर सरकार झुकने के मूड में दिखाई नही दे रही है। शिक्षकों के विरोध पर सरकार कड़ा एक्शन लेने के लिए तैयारी करती हुई दिखाई दे रही है। सूत्रों की मानें तो शिक्षकों के वेतन को सरकार रोक सकती है, वहीं दोपहर बाद दो बजे से बीएसए व उच्चाधिकारियों की बीच इस संबंध में ऑनलाइन बैठक होने की भी संभावनाएं जताई जा रही है।

सैकड़ों टीचरों ने दर्ज कराई असहमति, भरा विकल्प

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। बेसिक शिक्षा विभाग की ऑन लाइन अटेंडेंस व्यवस्था के विरोध में गुरुवार को पहले दिन सैकड़ों टीचरों ने दर्ज कराई असहमति। सदर ब्लॉक की बीआरसी सुखपालनगर पर पहुंचे शिक्षकों ने असहमति पत्र पर अपने हस्ताक्षर किए। बेसिक के टीचर ऑन लाइन अटेंडेंस का विरोध कर रहे हैं। प्राथमिक शिक्षक संघ उत्तर प्रदेश के आह्वान पर ऑन लाइन अटेंडेंस व्यवस्था पर टीचरों की राय जानने के लिए 11,12 जुलाई दो दिवसीय अभियान चलाया गया है। जिसमें टीचरों से आह्वान किया गया कि वे अपनी राय सहमति और असहमति के रूप में बीआरसी पहुंचकर दर्ज कराए। इसी के परिपेक्ष्य में गुरुवार को स्कूल बंद होने के बाद काफी तादाद में बीआरसी सदर पहुंचे टीचरों ने ऑन लाइन अटेंडेंस की प्रक्रिया का विरोध जताते हुए विकल्प पत्र भरकर असहमति जताई। बीआरसी पर मौजूद प्राथमिक शिक्षक संघ सदर के अध्यक्ष प्रभाकर प्रताप सिंह और मंत्री राजीव गुप्ता ने टीचरों का विकल्प पत्र भरवाया। नेताओं ने कहा कि ऑन लाइन अटेंडेंस की व्यवस्था से टीचरों का हित नहीं होने वाला है। इससे व्यवहारिक दिक्कतें हैं। जो अफसरों को दिखाई नहीं दे रही है। उन्होंने कहा कि 12 जुलाई को भी विकल्प पत्र भरवाया जायेगा। किसी भी टीचर ने सहमति नहीं दी है। सभी विरोध कर रहे हैं। इस मौके पर राजेश सिंह, शैलेंद्र सिंह शैलू समेत काफी संख्या में टीचर मौजूद थे।

डीएम के निरीक्षण में खंड विकास अधिकारी एवं सहायक विकास अधिकारी (पं0) पाए गए अनुपस्थित

जिलाधिकारी ने कारण बताओं नोटिस किया जारी, समस्त कार्यालयाध्यक्ष 10 बजे से 12 बजे तक जनसुनवाई कर आमजन की शिकायतों समस्याओं का निस्तारण सुनिश्चित करें : डीएम

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। जिलाधिकारी मधुसूदन हुल्गी द्वारा खण्ड विकास अधिकारी कार्यालय,मंझनपुर का आकस्मिक निरीक्षण किया गया आकस्मिक निरीक्षण में खंड विकास अधिकारी,मंझनपुर देवेंद्र कुमार ओझा एवं सहायक विकास अधिकारी (पंचायत), मंझनपुर कमलाकांत मिश्र अनुपस्थित पाये गये। शासन द्वारा प्रातः 10 बजे से 12 बजे तक जनसुनवाई का समय निर्धारित किया गया है, जिसमें जनसामान्य की शिकायतों का गुणवत्तपरक निस्तारण किया जाना है। कार्यालय में अनुपस्थित रहना और जनसुनवाई न करना शासन की मंशा के प्रतिकूल है। जिलाधिकारी ने खंड विकास अधिकारी मंझनपुर एवं सहायक विकास अधिकारी (पंचायत), मंझनपुर को निर्देशित किया है कि कार्यालय में जनसुनवाई के दौरान अनुपस्थित पाये जाने के सम्बन्ध में अपना स्पष्टीकरण तत्काल उपलब्ध करायें, कि क्यो न आपके विरुद्ध अनुशासनिक कार्यवाही अमल में लायी जाय। डीएम ने जनपद के समस्त कार्यालयाध्यक्षों को निर्देशित किया है कि शासन की मंशा के अनुरूप कार्यालय दिवस में कार्यालय में उपस्थित रहकर प्रातः 10 बजे से 12 बजे तक जनसुनवाई कर आमजन की शिकायतों/ समस्याओं का निस्तारण करना सुनिश्चित करें।

पूर्व सैनिक सयुक्त संस्था के पदाधिकारियों ने जिलाधिकारी से की मुलाकात

नायब सूबेदार दिलीप कुमार द्विवेदी विद संगिनी को संस्था का कैप एवम बैच पहना कर सदस्यता ग्रहण कराई

कौशांबी जिला के मुख्यालय मंझनपुर कलेक्ट्रेट परिसर कार्यालय में उत्तर प्रदेश पूर्व सैनिक सयुक्त संस्था के पदाधिकारियों ने जिला अधिकारी को बुक्का एवम संस्था का मोमेंटो भेट कर शिष्टाचार मुलाकात करते हुए नवनवागत जिला अधिकारी का स्वागत किया तत्पश्चात एस डी एम मंझनपुर को मोमेंटो भेट कर स्वागत किया दोनो अधिकारी बड़े हर्षोल्लास के साथ पूर्व सैनिकों से मिलकर अश्वासन दिया कि अगर किसी सैनिक को कोई परेशानी होती है तो कभी भी आ कर हमारे से ऑफिस में मिल कर अपनी समस्या बता सकता है जिला अध्यक्ष महेंद्र सिंह ने संस्था के बारे में जिला अधिकारी को पूर्ण रूप से जानकारी देते हुए कहा यह संस्था पूर्व सैनिकों के वेलफेयर के लिए बनाई गई है दोनों अधिकारियों से मिलने के बाद एक बैठक आयोजित हुई जिसकी अध्यक्षता जिला अध्यक्ष महेंद्र सिंह ने किया बैठक में नायब सूबेदार दिलीप कुमार द्विवेदी विद संगिनी को संस्था का कैप एवम बैच पहना कर सदस्यता ग्रहण कराई गई जिला अध्यक्ष महेंद्र सिंह ने सभी पदाधिकारियों एवम सदस्यों से आग्रह किया ककि आप लोग संस्था को बढ़ाने में अपना सहयोग प्रदान करे इस दौरान जिला अध्यक्ष महेंद्र सिंह जिला उपाध्यक्ष मनोज कुमार तोमर मीडिया प्रभारी संजीव कुमार चौरसिया कोडिनेटर नथन पाल महासचिव अजय कुमार त्रिपाठी अवधेश कुमार मिश्रा अश्वनी कुमार पांडे राजेश कुमार यादव रामभवन पाल एवम अन्य लोग उपस्थित रहे।

न्यूज झरोखा

आकाशीय बिजली की चपेट में आने से शिक्षक समेत 6 छात्राएं झुलसी

कौशाम्बी देवी आपदा का कहर कम होता नहीं दिखाई पड़ रहा है 2 दिन पहले भी देवी आपदा से तीन लोगों की मौत और 18 लोग झुलस गए थे गुरुवार को फिर देवी आपदा का प्रकोप दिखाई पड़ा और महेवा घाट थाना क्षेत्र के सरसवा ब्लॉक के अंधावा गांव स्थित कंपोजिट विद्यालय में आकाशीह बिजली गिर गई जिससे विद्यालय के एक शिक्षक समेत 6 छात्राएं झुलस गई हैं आकाशीय बिजली से विद्यालय में लगे इलेक्ट्रिक बोर्ड तारे जलकर राख हो गई है जानकारी मिलते ही गांव के लोगों का मजमा मौके पर लग गया आकाशीय बिजली की चपेट में आने से झुलसी छात्राएं और शिक्षक को इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है। बताया जाता है कि गुरुवार को तेज आवाज गर्जना के साथ स्कूल परिसर में आकाशीय बिजली गिरी आकाशीय बिजली की चपेट में आने से शिक्षक अजीत सिंह झुलस गए हैं और विद्यालय की छात्राएं दिव्यांशी वा दीवांशि वा मुस्कान वा साक्षी वा सेजल वा गौरी झुलस गई है आधा दर्जन छात्राओं के और शिक्षक के झुलस जाने के बाद विद्यालय में कोहराम मच गया मामले की जानकारी मिलते ही छात्र छात्राओं के परिजन स्कूल पहुंच गए झुलसे छात्राओं और शिक्षक को इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है

स्कूल परिसर में गिरी आकाशीय बिजली झुलस गई छात्रा हॉस्पिटल में चल रहा इलाज

कौशांबी। सिराथू तहसील क्षेत्र के मलाक निंदूरा स्थित प्राथमिक विद्यालय परिसर में गुरुवार की दोपहर बारिश के दौरान आकाशीय बिजली गिर गई। विद्यालय परिसर में आकाशीय बिजली गिरने से कक्षा पांच की छात्रा नंदिनी झुलस गई। तेज आवाज के साथ बिजली कड़कने से नंदिनी काफी डरी हुई थी और अपनी टीचर के पास जाकर चिपक गई। घटना दोपहर के समय की है जब सभी बच्चे मिड डे मील का खाना खाने के बाद अपने बर्तन धुलकर वापस लौट रहे थे। तभी बारिश होने लगी और तेज आवाज के साथ आकाशीय बिजली कड़की और स्कूल परिसर में ही गिर गई। स्कूल परिसर में आकाशीय बिजली गिरने के बाद झुलसी हुई छात्रा काफी डर गई थी इसलिए वह अपनी टीचर के पास गई और उनसे चिपक कर रोने लगी। डर के मारे छात्रा जैसे ही टीचर से चिपकी वैसे ही टीचर को भी आकाशीय बिजली के झटके महसूस हुए जिससे छात्रा और टीचर को अस्पताल में भर्ती कराया गया जहां पर दोनो का इलाज चल रहा है।

सल्लहा में गिरी आकाशीय बिजली किशोर की मौत, वृद्ध घायल

कौशाम्बी मंझनपुर तहसील के गुवारा तैयबपुर के मजरा सल्लहा गांव में वृहस्पतिवार की दोपहर आकाशीय बिजली गिरने से एक किशोर व एक वृद्ध गंभीर रूप से झुलस गए। परिजन इलाज के लिए दोनों को जिला अस्पताल ले गए। डाक्टरों ने किशोर की मृत घोषित कर दिया। वृद्ध की हालत को गंभीर देखते हुए प्रयागराज एसआरएन रेफर कर दिया गया। सल्लहा गांव का संजीत सरोज उम्र 12 वर्ष पुत्र चंदन लाल व छोटे लाल उम्र 65 वर्ष वृहस्पतिवार की दोपहर खेत की तरफ बकरी चराने गए थे। करीब दो बजे अचानक बिजली गिरने से संजीत व छोटेलाल बुरी तरह झुलस गए। जानकारी परिजनों को हुई तो तुरंत इलाज के लिए जिला अस्पताल ले गए। डाक्टरों ने संजीत को मृत घोषित कर दिया। जबकि छोटेलाल की हालत गंभीर होने पर प्रयागराज एसआरएन अस्पताल भेज दिया। संजीत की मौत से परिजनों का रो रो कर बुरा हाल है। संजीत छह भाइयों में सबसे छोटा था। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया।

आकाशीय बिजली से मृतकों के परिजनों को मिला चार चार लाख की सहायता राशि

कौशाम्बी तहसील मंझनपुर क्षेत्रान्तर्गत ग्राम पश्चिम शरीरा व धवाड़ा में दिनांक 09.7.2024 को आकाशीय बिजली गिरने से कु० रानी देवी पुत्री अमर सिंह नि० लोधन का पूरा मजरा पश्चिम शरीरा, उम्र लगभग 19 वर्ष व श्री शिवाकान्त पुत्र सदाशिव निवासी लोधन का पूरा, मजरा पश्चिम शरीरा, उम्र लगभग 12 वर्ष व श्रीमती उर्मिला देवी पत्नी लौटन निवासी ग्राम धवाड़ा, उम्र लगभग 40 वर्ष की मृत्यु हो गयी थी। प्रकरण में तहसील प्रशासन के द्वारा जॉचोपरान्त तत्काल कार्यवाही कराते हुये घटित घटना दैवी आपदा के अन्तर्गत होने के कारण घटना के 24 घण्टे के अन्दर अहैतुक सहायता राशि मु० 400000-00 (चार लाख रुपया) प्रत्येक मृतकों के वारिसों को स्वीकृत करते हुये सहायता राशि प्रदान कर दी गयी है।

रेलवे लाइन पर मिला बुजुर्ग का क्षत विक्षत शव, नहीं हुई शिनाख्त

अझुवा कौशांबी सैनी कोतवाली के अटसराय स्टेशन के समीप डीएफसी रेलवे लाइन पर बृहस्पतिवार सुबह एक 70 वर्षीय बुजुर्ग का क्षत-विक्षत शव मिला। राहगीरों की सूचना पर पहुंची पुलिस ने ग्रामीणों को एकत्र कर शव की पहचान कराने का प्रयास किया, खबर लिखे जाने तक शिनाख्त नहीं हो सकी। शव पोस्टमार्टम के लिए भेजकर पुलिस शव की शिनाख्त कराने के प्रयास में जुट गई है

जनपद स्तरीय/तहसील स्तरीय/विकास खण्ड स्तरीय अधिकारी अपने कार्यालय में प्रातः 10-12 तक रहकर करें जनसुनवाई

कौशाम्बी। सनादेशानुसार सरकारी कार्यालयों में प्रत्येक सरकारी कार्यालयों में जनसुनवाई का आयोजन प्रातः 10.00 बजे से 12:00 तक किया जायेगा, जिसमें प्राप्त शिकायतों को आई०जी०आर०एस० पोर्टल पर अपलोड किया जायेगा और उनका गुणवत्तापरक एवं समयबद्ध निस्तारण सुनिश्चित किया जायेगा। जिलाधिकारी मधुसूदन हुल्गी ने जनपद के समस्त जिला स्तरीय/तहसील स्तरीय/विकास खण्ड स्तरीय अधिकारियों को निर्देशित किया है कि अपने कार्यालय में प्रातः 10.00 बजे से 12.00 तक उपस्थित रहकर जनसुनवाई करें और प्राप्त शिकायतों का समयबद्ध एवं गुणवत्तापरक निस्तारण सुनिश्चित करायें। यह कार्य शासन की सर्वोच्च प्राथमिकताओं में से एक है। इस कार्य में किसी प्रकार की शिथिलता न बरती जाय, अन्यथा इसका प्रतिकूल संज्ञान लिया जायेंगा।

दुर्घटना में घायल युवक की इलाज के दौरान मौत

मनौरी कौशाम्बी पिपरी कोतवाली के मनौरी बाजार में रेलवे पुल पर बालू से ओवरलोड डंपर ने बाइक सवार युवक को टक्कर मार दी।हादसे में गंभीर रूप से जख्मी बाइक सवार की अस्पताल में मौत हो गई। दुर्घटना को अंजाम देने के बाद चालक डंपर छोड़ कर भाग निकला। पूरामुफ्ती क्षेत्र टिकरी उपरहार (सबदरगंज) निवासी धर्मेंद्र सिंह यादव उम्र 28 वर्ष किसान थे। बुधवार रात किसी काम के सिलसिले में बाइक से मनौरी बाजार गए थे। रात करीब आठ बजे मनौरी बाजार स्थित पुल पर सामने से आ रहे डंपर ने उनकी बाइक में टक्कर मार दी। गंभीर रूप से घायल बाइक सवार को एंबुलेंस की मदद से नजदीकी अस्पताल पहुंचाया गया। प्राथमिक उपचार के बाद डॉक्टरों ने उसे एसआरएन प्रयागराज रेफर कर दिया। जहां इलाज के दौरान बृहस्पतिवार की भोर उसकी मौत हो गई। युवक की मौत से पीड़ित परिवार की रो-रोकर हालत खराब है। पुलिस ने दुर्घटना को अंजाम देने वाले डंपर को कब्जे में लेकर चालक की तलाश शुरू कर दी है।

नीम के नीचे चर रही बकरियों की मौत

अझुवा कौशांबी आदर्श नगर पंचायत के वार्ड नंबर 4 मढिया मई निवासी राम विशाल की 1 बकरी और 1 बकरा नीम पेड़ के नीचे चर रही थी आज दोपहर गरज चमक के साथ बारिश हो रही थी तभी बकरियों की तड़प कर मौत हो गई राम विशाल के मुताबिक आकाशीय बिजली से बकरियों की मौत हुई है मौके पर अझुवा पशु चिकित्सक ने मौका मुआयना किया है।

राष्ट्रीय अध्यापक पुरस्कार के लिए प्रस्ताव आमंत्रित

कौशाम्बी भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय अध्यापक पुरस्कार 2024 के लिए शिक्षकों द्वारा स्वनामांकन/रजिस्ट्रेशन अपलोड करने के लिए वेब पोर्टल,विकसित की गयी है,जो दिनांक 27.06.2024 से प्रभावी है और इसके लिए अंतिम तिथि 15.07.2024 निर्धारित है। यह जानकारी जिला विद्यालय निरीक्षक डॉ सच्चिदानन्द यादव ने देते हुए प्रधानाचार्य/ प्रधानाचार्या एवं शिक्षकगण, समस्त, राजकीय /अशासकीय सहायता प्राप्त एवं स्ववित्त पोषित माध्यमिक विद्यालय को निर्देशित किया हैं कि राष्ट्रीय अध्यापक पुरस्कार के लिए स्वतः नामांकन/ रजिस्ट्रेशन की कार्यवाही समयबद्ध रूप से किया जाना सुनिश्चित करें।

ट्रक ने बाइक सवारों को रौंदा,भतीजे की मौत, चाचा गंभीर घायल

अझुवा कौशांबी सैनी कोतवाली के अटसराय गांव के समीप राष्ट्रीय राजमार्ग पर अज्ञात ट्रक ने बाइक सवारों को रौंद दिया। घटनाक्रम के मुताबिक बीती देर शाम चंद्रशेखर 44 वर्ष पुत्र रामसिंह निवासी अटसराय थाना सैनी अपने भतीजे प्रियांशु पुत्र इंद्रसेन के साथ कानपुर से आ रही बहन को लेने राष्ट्रीय राजमार्ग पर आया था ।तभी तेज रफ्तार अनियंत्रित अज्ञात ट्रक ने बाइक में टक्कर मार दिया बाइक ट्रक में फंस कर दूर तक घिसट गई जिसमे किशोर और युवक गंभीर जख्मी हो गए। सूचना पर पहुंची पुलिस ने एंबुलेंस से घायलों को अस्पताल भेजा जहां किशोर प्रियांशु के मौत की पुष्टि डॉक्टर ने की है।गंभीर घायल चंद्रशेखर को परिजन फतेहपुर ले गए हैं। दुर्घटना से परिवार में कोहराम मचा है पुलिस कागजी कार्रवाई में जुटी है।

बेकाबू ट्रक ने बाइक सवार दंपती को कुचला, पति की मौत पत्नी घायल

ससुराल से घर लौटते समय बृहस्पतिवार सुबह राजापुर में हुआ हादसा

कौशाम्बी। सरायअकिल कोतवाली के मवई गांव निवासी राम अभिलाष सिंह उर्फ बबली उम्र 45 वर्ष किसान थे। उनकी ससुराल चित्रकूट जनपद के राजापुर कोतवाली अंतर्गत देवरथा गांव में है। बुधवार को ससुराल में वैवाहिक आयोजन होने के कारण राम अभिलाष अपनी पत्नी गीता देवी उम्र 42 वर्ष के साथ बाइक से ससुराल गए थे। पत्नी गीता ने बताया कि बृहस्पतिवार की सुबह घर वापस लौटते समय राजापुर कस्बे में लूप लाइन चौराहे के पास अचानक उनकी बाइक फिसलकर गिर गई। इस दौरान पीछे से आए ट्रक ने उन्हें कुचल दिया। इससे मौके पर ही पति की मौत हो गई। वहीं, साथ रही पत्नी ट्रक की टक्कर लगने से छिटक कर दूर जा गिरी। हादसा देख जुटे स्थानीय लोगों ने दौड़ाकर चालक को ट्रक समेत पकड़ लिया। सूचना के बाद पहुंची पुलिस ने चालक को और ट्रक को कब्जे में लेकर पत्नी की तहरीर पर मुकदमा दर्ज कर लिया है। घायल गीता का स्थानीय अस्पताल में इलाज कराया गया। सूचना मिलते ही बदहवास परिजन रोते-बिलखते हुए मौके पर पहुंच गए। घटना के बाद से पीड़ित परिवार रो-रोकर हालत बेहाल है। मृतक के शव को पुलिस ने पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया।

अध्यक्ष के फजीर्बाड़े का हुआ खुलासा दर्ज हो सकता है मुकदमा

कौशाम्बी। नगर पालिका परिषद मंझनपुर के चेयरमैन बीरेंद्र फौजी का उप जिलाधिकारी कार्यालय मंझनपुर द्वारा 13 दिसम्बर 2022 को जारी किया गया सामान्य निवास प्रमाण पत्र जिला अधिकारी ने दो दिन पहले निरस्त कर दिया है बीरेंद्र फौजी ने मंझनपुर नगर पालिका परिषद क्षेत्र में फर्जी तरीके से निवास प्रमाणपत्र हासिल कर चुनाव लड़ा था चेयरमैन बीरेंद्र फौजी अब नगर पालिका परिषद मंझनपुर क्षेत्र के निवासी नहीं है जिससे उनका निर्वाचन भी अवैध हो जाएगा। निवास प्रमाण पत्र में हेराफेरी कर फर्जी तरीके से नगर पालिका परिषद मंझनपुर में चेयरमैन का चुनाव लड़ने वाले वीरेंद्र कुमार फौजी भले ही नगर पालिका में अध्यक्ष का चुनाव जीत कर कुर्सी पर काबिल हो गए हैं लेकिन उनके द्वारा किए गए हेरा फेरी और धोखाधड़ी का खुलासा अब हो गया है फर्जी तरीके से निवास प्रमाण पत्र हासिल किए जाने के बाद शिकायत की जांच के बाद जिला अधिकारी ने निवास प्रमाणपत्र को अवैध करार दिया है चेयरमैन का निवास प्रमाण पत्र निरस्त कर दिया गया है जिससे बीरेंद्र फौजी की मुसीबत बढ़ गई है एक ओर जहां अब उन्हें अध्यक्ष पद से हटाया जा सकता है वहीं बीरेंद्र फौजी पर धोखाधड़ी फ्राड का मुकदमा भी दर्ज होगा फर्जी निवास प्रमाण पत्र के जरिए अध्यक्ष बने वीरेंद्र फौजी के कार्यकाल में कराए गए करोड़ो रुपए के विकास कार्यो पर भी सवाल खड़े हो गए है।

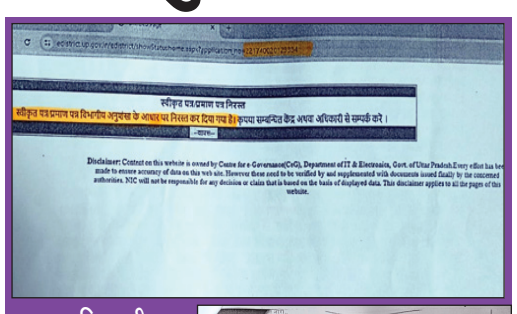

अधिशासी अधिकारी से पंगा लेना चेयरमैन मंझनपुर को पड़ा महंगा, चेयरमैन का निवास प्रमाण पत्र जिला अधिकारी ने दो दिन पहले निरस्त कर दिया

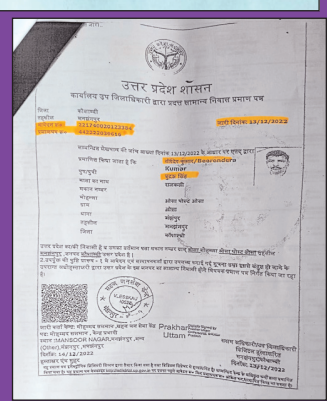

कृषि एवं कृषि संचालित सम्बन्धित योजनाओं की डीएम ने की समीक्षा

किसान ड्रिप एवं स्पिंकलर विधि से सिंचाई कर कम लागत में अच्छी पैदावार कर अपनी उपज का लाभ उठायें

कौशाम्बी जिलाधिकारी मधुसूदन हुल्गी द्वारा उदयन सभागार में कृषि एवं कृषि संचालित सम्बन्धित योजनाओं की समीक्षा बैठक की गई। बैठक में जिलाधिकारी ने किसानां को दिये जा रहें बीज की गुणवत्ता के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करते हुए कहा कि जहॉ भी बीज वितरण किया जा रहा हैं, उन सेन्टरों की जॉच अवश्य करायी जाय। साथ ही साथ उन्होंने कहा कि बीजों का वितरण किन-किन जगहां पर किया जा रहा है, इसकी जानकारी किसानों को दी जाय, ताकि किसान अपने नजदीकी सेन्टर से बीज प्राप्त कर सकें, उनको बीज के लिए इधर-उधर न भटकना पड़ें। उन्हांने अधिकारियों को निर्देशित करते हुए कहा कि शासन द्वारा निर्धारित रेट पर ही बीज का वितरण किया जाय, अधिक रेट पर बीज वितरण की शिकायत प्राप्त होने पर सम्बन्धित के विरूद्ध कड़ी कार्यवाही की जायेंगी। उन्होंने कहा कि जनपद में आवंटित लक्ष्य के सापेक्ष सोलर पंप से किसानां को शत-प्रतिशत लाभान्वित किया जाय तथा इस योजना का व्यापक प्रचार-प्रसार कराया जाय। जिलाधिकारी ने मृदा स्वास्थ्य कार्ड की समीक्षा करते हुए कहा कि यह किसानां की उपज व आमदनी बढ़ानें में कारगर योजना है, किसानां को इसके लिए जागरूक करें एवं जो भी कृषक अपने खेत की मिट्टी का सैम्पल लेकर आये, उसकी गुणवत्ता की जॉच समय से कराते हुए सही जानकारी उपलब्ध करायें। एग्रीजंक्शन योजना की समीक्षा के दौरान उन्होंने कृषि स्नातक बेराजगारों को इस योजना से लाभान्वित करानें के निर्देश दियें। उन्हांने गौ-आश्रय स्थलों में संरक्षित पशुओं के लिए भूसा-चारा सहित अन्य आवश्यक व्यवस्थायें सुनिश्चित रखने के भी निर्देश दियें। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना के तहत किसानां को ड्रिप एवं स्पिंकलर विधि सिंचाई के प्रति जागरूक किया जाय, जिससे किसान कम लागत में अच्छी पैदावार कर अपनी उपज का लाभ प्राप्त कर सकें। उन्होंने सभी सम्बन्धित अधिकारियों से कहा कि थाना दिवस एवं तहसील दिवस में कृषि से सम्बन्धित सभी योजनाओं की जानकारी अवश्य दें।इस अवसर पर उप निदेशक कृषि सतेन्द्र कुमार तिवारी सहित अन्य सम्बन्धित अधिकारीगण उपस्थित रहें।

कौशांबी के युवक से दिल्लगी कर इंग्लैंड की युवती आ गई मुंबई एयरपोर्ट

कौशाम्बी। जिले के एक युवक से इंग्लैंड की एक युवती शोसल मीडिया इंस्ट्राग्राम पर दिल्लगी कर बैठी। युवती ने अचानक से उसे मुंबई आने की बात कही तो युवक परेशान हो गया। युवक से इंग्लैंड की युवती ने अपने पास लगभग 62 लाख इंडियन करेंसी लाने की बात भी कही है और जल्द से जल्द उसके गांव आने की भी बात कही है। करारी थाना क्षेत्र के महेंद्र गांव निवासी आजाद ने बताया कि वह निजी वाहन चालक है और उसकी शादी हो चुकी है उसके दो बच्चे भी हैं। आजाद के मुताबिक एक जुलाई को उसके एक परिचित उसकी मोबाइल लेकर इंस्टाग्राम से एक मैसेज कर दिया। इसके बाद इंग्लैंड के लीवरपूल शहर में रहने वाली ग्रेस मोर्गन नामक युवती उसे मैसेज करने लगी। इंग्लैंड के लीवरपूल शहर में रहने वाली युवती उसके व्हाट्स एप पर चैट करने लगी। युवती ने मुंबई आकर मैसेज किया कि उसके पास भारतीय करेंसी का करीब 62 लाख रुपये है जो पौंड में है। यहां अफसर ने उससे चेक पंजीकृत कराने को कहा है। इसके लिए उसकी मदद की जरूरत है। युवती ने आजाद से रुपये मांगे और उससे मिलने पर वापस कर देने की बात कही। इसे लेकर आजाद बेहद परेशान है। यहां यह तथ्य महत्वपूर्ण है कि आठ पास युवक क्या इंग्लैंड की युवती से अंग्रेजी में चैट कर सकता है। इस पर युवक का कहना है कि उसके इंस्टाग्राम एकाउंट से उसके परिचित युवक ने चैटिंग की है। उसका कोई लेनादेना नहीं। फिलहाल यह जांच का विषय है। प्रभारी निरीक्षक करारी आरएस साहू का कहना है कि प्रकरण अभी तक संज्ञान में नहीं है। पता कराकर प्रकरण की जांच कराई जाएगी।

शादीसुदा युवक रचा रहा था दूसरी शादी मौके पर पहुंचकर पत्नी ने किया हंगामा

कौशांबी। प्रयागराज जिले के पूरामुफ्ती थाना क्षेत्र के मंदरी गांव का एक युवक शादीशुदा होते हुए दूसरी शादी रचा रहा था। मंगलवार की रात वह बारात लेकर कौशाम्बी जिले के सरायअकिल थाना क्षेत्र के मुस्तफाबाद मुंजफ्ता पहुंचा। कन्या पक्ष ने बारात का स्वागत भी किया। जब सात फेरे हो रहे थे उसी वक्त एक महिला पहुंचकर हंगामा करने लगी। उसने दावा किया कि जिस आदमी की शादी हो रही है वह उसकी पत्नी है। इस पर पुलिस शादी करने वाले युवक व उसके भाई को थाने लेकर चली गई जिसके चलते सात फेरा पूरा नहीं हो पाया। दुल्हन के पिता ने युवक सहित चार लोगों के खिलाफ पुलिस को तहरीर दी थी। बाद में दोनों पक्षों ने समझौता कर लिया है। सरायअकिल थाना क्षेत्र के मुस्तफाबाद मुंजफ्ता निवासी रामभवन पुत्र राजकरन ने बताया कि उसने अपनी बेटी की शादी मंदरी गांव में नंदलाल से तय की थी। मंगलवार की रात नंदलाल बारात लेकर पहुंचा। सुबह सात फेरों के समय दूल्हा नंदलाल की पहली पत्नी ने बताया कि नंदलाल से उसका विवाह हो चुका है। मामला कोर्ट में विचाराधीन है। नंदलाल चोरी से दूसरी शादी कर रहा है। सूचना पाकर पहुंची पुलिस नंदलाल के साथ उसके भाई कुंदल को भी लेकर थाने चली गई। इसके बाद थाने में पंचायत हुई। जहां दोनों पक्षों ने इस बात पर समझौता कर लिया कि आरोपी युवक कन्या पक्ष को विवाह में खर्च की गई पूरी रकम देगा।

निर्माणाधीन परियोजनाओ की समीक्षा कर निर्माण कार्यों को तेजी से पूर्ण कराने के डीएम ने दिए निर्देश

कौशाम्बी। जिलाधिकारी मुधसूदन हुल्गी द्वारा उदयन सभागार में सीएमआईएस पोर्टल के अनुसार निमार्णाधीन परियोजनाओ की विस्तृत समीक्षा की गई।बैठक में जिलाधिकारी ने जनपद में निमार्णाधीन विभिन्न परियोजनाओं की समीक्षा के दौरान सम्बन्धित अधिकारियों को निर्देशित किया कि निर्माण कार्य गुणवत्तापूर्ण एवं समय से पूर्ण कराया जाय, यदि किसी परियोजना के निर्माण कार्य में समस्या आ रही है तो सम्बन्धित अधिकारी से समन्वय कर समस्या का निस्तारण कराते हुए निर्माण कार्य तेजी से पूर्ण करायी जाय एवं पूर्ण हुए कार्यों को सम्बन्धित विभाग को तत्काल हैण्डओवर करा दिया जाय। जिलाधिकारी द्वारा जनपद कौशाम्बी के पुलिस लाइन में 01 अदद ट्रांजिट हॉस्टल का निर्माण कार्य, कर्मचारियों के लिए टाइप-ए के 01 ब्लॉक एवं टाइप बी के 2 ब्लॉक के 12-12 आवास के निर्माण कार्यों की प्रगति की समीक्षा के दौरान अधिशासी अभियंता,उ0प्र0 प्रोजेक्ट कापोरेशन लि0 को निर्देशित करते हुए कहा कि सभी कार्य गुणवत्तापूर्ण एवं निर्धारित समय सीमा में पूर्ण करा लिये जाय। उन्होंने कार्यदायी संस्था उ0प्र0 जल निगम (शहरी) की चायल एवं दारानगर में जलापूर्ति परियोजना की प्रगति की समीक्षा के दौरान निर्देशित किया कि समयान्तर्गत परियोजना को पूर्ण किया जाय। उन्होंने पुलिस लाइन में महिलाओं के लिए महिला हॉस्टल बैरक के निर्माण कार्य सहित आदि परियोजनाओं में भी प्रगति लाने के निर्देश दियें। उन्होंने ग्रामीण अभियन्त्रण सेवा द्वारा संपर्क मार्ग की प्रगति की समीक्षा के दौरान निर्देशित किया कि संपर्क मार्ग-हरदुआ से दरियापुर, बेरौंचा एवं पुरखास से केवट का पुरवा आदि कार्यों में तेजी लाते हुए समय से पूर्ण करा लिया जाय। उन्होंने देवीगंज बाईपास में चल रहें निर्माण कार्य को तेजी से पूर्ण कराये जाने के निर्देश लोक निर्माण विभाग को दियें। बैठक में उपस्थित सभी कार्यदायी संस्थाओं एवं अधिकारियों को डीएम ने निर्देशित करते हुए कहा कि सभी विद्यालयों एवं सरकारी भवनों में आकाशीय बिजली से बचाव के लिए कंडक्टर अवश्य लगवाये जाय। इसके साथ उन्होंने यह भी कहा कि जो भी सरकारी भवनों का निर्माण कार्य किया जा रहा है, उनमें यह उपकरण लगाकर ही सम्बन्धित को हैण्डओवर किया जाय।बैठक में मुख्य विकास अधिकारी डॉ0 रवि किशोर त्रिवेदी एवं जिला अर्थ एवं संख्याधिकारी अजीत प्रताप सिंह सहित अन्य सम्बन्धित अधिकारीगण उपस्थित रहे।

परिवार नियोजन जन-जागरूकता रैली को डीएम ने दिखाई हरी झंडी

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। जिलाधिकारी मधुसूदन हुल्गी तथा मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ0 सुप्रेंद्र कुमार ने परिवार नियोजन जन-जागरूकता रैली को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। यह रैली मंझनपुर पीएचसी से प्रारम्भ होकर मंझनपुर चौराहा होते हुए पुनः मंझनपुर पीएचसी पर समाप्त की गई।

मुख्य चिकित्साधिकारी ने बताया कि विश्व जनसंख्या दिवस हर वर्ष 11 जुलाई को मनाया जाता है, यह वैश्विक जनसंख्या और उससे जुड़ी चुनौतियों के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए समर्पित दिन है। यह अभियान 11 जुलाई से 31 जुलाई तक संचालित किया जायेंगा, जिसमें सभी क्लाइंट को सेवा प्रदान किया जायेंगा। परिवार नियोजन पखवाड़ा का स्लोगन-ह्वविकसित भारत की नई पहचान, परिवार नियोजन हर दंपति की शानह्व थीम के तहत मनाया जायेंगा। परिवार नियोजन के लिए सामुदायिक स्तर पर अलख जगाने के लिए वर्ष 1989 से 11 जुलाई को विश्व जनसंख्या दिवस मनाया जा रहा हैं। प्रजनन स्वास्थ्य सेवाओं का प्रावधान न केवल अनचाहे गर्भधारण को रोकने के लिए, बल्कि मातृ और शिशु स्वास्थ्य कल्याण के लिए भी महत्व रखता हैं। इसलिए विश्व जनसंख्या दिवस के अवसर पर इस प्रतिकूल परिदृश्य में पूरे माह जनसंख्या स्थिरता पखवाड़ा को जिला स्तर से लेकर प्रखंड स्तर पर चलाया जा रहा है। परिवार कल्याण के नोडल डॉ0 हिंद प्रकाश मणि ने बताया कि सीमित परिवार हर मायने में खुशहाली का प्रतीक होता हैं, छोटे परिवार में ही बच्चों की बेहतर परवरिश संभव होती है एवं उन्हें जरुरी संसाधन उपलब्ध हो पाता है, इसलिए विश्व जनसंख्या दिवस के माध्यम से आम-लोगों को नियोजित परिवार के विषय में संकल्प दिलाया जाता हैं। उन्होंने कहा कि इस परिप्रेक्ष्य में ही जिले के समस्त ब्लॉक में 2-2 महिला नसबंदी कैंप एवम 1-1 पुरुष नसबंदी कैंप का आयोजन किया गया हैं, जिसमे अधिक से अधिक लोगों को परिवार नियोजन की सेवाएं प्रदान की जायेंगी, इसके तहत पंजीकृत दंपति को परिवार नियोजन का स्थाई एवं अस्थाई साधन उपलब्ध कराया जायेगा। इस दौरान जिला स्तर से लेकर सामुदायिक स्तर तक विभिन्न जागरूकता कार्यक्रम संचालित कियें जायेंगे। उन्होंने बताया कि खुशहाल परिवार, स्वस्थ परिवार के लिए भी परिवार नियोजन जरूरी है, इसके लिए परिवार नियोजन के किसी भी विधि को अपनाया जा सकता है, जो सभी सरकारी स्वास्थ्य केन्द्रों पर निःशुल्क उपलब्ध है, स्वस्थ जच्चा एवं बच्चा के लिए लड़की की शादी 18 साल के बाद एवं लड़के की शादी 21 वर्ष के बाद ही करना चाहिए। 20 साल के बाद ही महिला द्वारा गर्भधारण सुरक्षित होता हैं। 11 जुलाई से 31 जुलाई तक सेवा प्रदान पखवाड़ा मनाया जाएगा। इस अवसर पर प्रभारी चिकित्सा अधिकारी डॉ. नीरज, यू.पी.टी.एस.यू प्रभाकर दूबे, बी.पी.एम अवनीश मिश्र, बी.सी.पी.एम घनश्याम पाल एवं एएनएम, संगिनी, आशा एवं आंगनबाड़ी कार्यकत्री उपस्थित रहीं।

नीम के नीचे चर रही बकरियों की मौत

अझुवा कौशांबी आदर्श नगर पंचायत के वार्ड नंबर 4 मढिया मई निवासी राम विशाल की 1 बकरी और 1 बकरा नीम पेड़ के नीचे चर रही थी आज दोपहर गरज चमक के साथ बारिश हो रही थी तभी बकरियों की तड़प कर मौत हो गई राम विशाल के मुताबिक आकाशीय बिजली से बकरियों की मौत हुई है मौके पर अझुवा पशु चिकित्सक ने मौका मुआयना किया है।

संपादक की कलम से

गांधी के विचारों की अहमियत

समकालीन संदर्भ में यह सोच महात्मा गांधी की सोच के बहुत नजदीक है। यदि भारत इस सोच को सही अर्थों में अपना पाता है तो इससे न केवल देश विकास की बहुत सार्थक समझ के अनुकूल प्रगति कर सकेगा, अपितु विश्व के लिए भी यह एक बहुत महत्वपूर्ण सीख होगी और इस तरह के विकास को विश्व स्तर पर अनुकरणीय माना जाएगा। महात्मा गांधी की सोच और भारत की आजादी की लड़ाई से निकले संदेश की एक बड़ी उपलब्धि है।

अनेक वैश्विक समस्याओं के बीच भारत को अपना मार्ग बहुत सावधानी से खोजना है। इस प्रयास में महात्मा गांधी की सोच आज भी बहुत महत्वपूर्ण मार्ग-दर्शक की भूमिका निभा सकती है। महात्मा गांधी की सोच के मूल सिद्धान्त हैं - सत्य व अहिंसा, सादगी व समता, अन्याय के विरुद्ध दृढ़, पर अहिंसक संघर्ष, सभी धर्मों के प्रति सम्मान, किसी समुदाय के प्रति भेदभाव न करना, अर्थनीति में निर्धन वर्ग की भलाई को उच्चतम प्राथमिकता देना, विकेन्द्रित, आत्मनिर्भर व आपसी सहयोग से हुए ग्रामीण विकास को अधिक महत्व देना। यदि समकालीन संदर्भ में इन सिद्धान्तों को प्रतिष्ठित किया जाए तो देश ही नहीं पूरी दुनिया की बड़ी समस्याओं को सुलझाने की दिशा मिल सकती है।

इसके लिए इन सिद्धान्तों को समकालीन संदर्भ में भली-भांति समझना और प्रतिबद्धता से उन पर चलना होगा। यह एक बहुत रचनात्मक मार्ग है। इसमें तरह-तरह की प्रसन्नता व उत्साह देने वाली उपलब्धियां हैं, पर साथ में शक्तिशाली स्वार्थों का सामना करने की चुनौतियां और कठिनाईयां भी हैं। बड़ी बात यह है कि केवल कहने के स्तर पर या कागजी स्तर पर इस सोच को अपनाने से कुछ प्राप्त नहीं होगा, वास्तविकता और निरंतरता से इसे अपनाना होगा।

यदि एक गांव के स्तर पर ही इस सोच को देखें तो भूमिहीनों के लिए कुछ भूमि की व्यवस्था करनी चाहिए। दबंगों के अवैध कब्जों को हटाकर, सीलिंग की व्यवस्था लागू कर, बंजर भूमि सुधार कर व अन्य उपायों से थोड़ी सी ही सही, पर कुछ भूमि सभी भूमिहीन परिवारों को अवश्य देनी चाहिए। जल-संरक्षण, मिट्टी का प्राकृतिक उपजाऊपन बढ़ाने के उपाय, प्राकृतिक खेती, परंपरागत बीजों की रक्षा, कुंओं व तालाबों की रक्षा, दस्तकारियों की रक्षा, खाद्य प्रसंस्करण, खाद व कीड़ों-बीमारियों से फसल की रक्षा, किसानों के मित्र विभिन्न जीव-जंतुओं, विशेषकर गो वंश की रक्षा, गांववासियों में आपसी सहयोग व भाईचारे को मजबूती, गांव में एकता व आत्म-निर्भरता बढ़ाना, परस्पर सहयोग से गांव का पर्यावरण सुधारना, वनों की रक्षा करना व नए वृक्ष लगाना- ये सब विकास की प्राथमिकता के कार्य हैं जो जलवायु बदलाव के संकट को कम करने व उसकी सहन-क्षमता बढ़ाने से भी जुड़े हैं।

गांधीजी की सोच इन कार्यों के अनुकूल है व ग्रामीण विकेंद्रीकरण तथा पंचायती राज को इस रूप में मजबूत करना चाहती है कि उसके माध्यम से इन प्राथमिकताओं के लिए पर्याप्त संसाधन प्राप्त करते हुए, गांववासी परस्पर सहयोग से इन उद्देश्यों के लिए अपनी क्षमतानुसार अधिकतम प्रयास करते हुए सार्थक व टिकाऊ उपलब्धियों की ओर बढ़ें। परस्पर सहयोग की इसी मजबूती का उपयोग वे सभी तरह के नशे को दूर रखने व जुए, दहेज-प्रथा जैसी अन्य सामाजिक बुराईयों से निपटने में करें। इस सोच में महिला विरोधी हिंसा, अन्य तरह की हिंसा, लंबी व खचीर्ली मुकदमेबाजियों के लिए कोई स्थान नहीं है।

जहां एक ओर यह सहयोग व अमन की सोच है, वहीं दूसरी ओर एक अन्य सोच है जिसमें धर्म व जाति के आधार पर गुटबाजी की जाती है। गांव में कुछ लोग कहते हैं कि जातियों को ऐसे जोड़ो कि अधिक वोट मिल जाएं। दूसरा पक्ष कहता है कि ऐसे जोड़ो कि वोट के अलावा हम अन्य तरह से भी शक्तिशाली हों। कुछ अन्य लोग कहते हैं कि इससे भी अधिक लाभ धर्म के आधार पर बांटने से मिलेगा। इसके जवाब में दूसरा पक्ष कहता है कि हम जाति आधारित जोड़ से तुम्हारा जवाब देंगे। इन सभी तरह की सोच में महात्मा गांधी का यह उद्देश्य तो पूरी तरह पीछे छूट जाता है कि सभी को आपसी सहयोग के रिश्ते में बांधने का प्रयास किया जाना चाहिए। एक गांव का उदाहरण छोड़कर राष्ट्रीय स्तर पर देखें तो यहां भी हमें राष्ट्रीय हित के कार्यों के लिए आपसी सहयोग की बहुत कमी दिखाई देती है। बेशक कुछ हद तक लोकतांत्रिक राजनीति के दौर में विभिन्न राजनीतिक दलों व नेताओं में नोंक-झोंक होती है, पर इसके साथ व्यापक राष्ट्रीय हित के मुद्दों पर सहयोग बढ़ाना भी जरूरी है। लोकतांत्रिक व्यवस्था यह अवसर देती है कि किसी देश के विकास और प्राथमिकताओं पर विभिन्न विचार रखने वाले व्यक्ति, नेता व दल अपने-अपने विचारों को लेकर चुनाव क्षेत्र में जाएं व जिसे जनता का अधिक समर्थन मिले वे सरकार का गठन करें। इसका यह अर्थ नहीं है कि सभी लोगों के हित के महत्वपूर्ण मुद्दों पर सहयोग न हो। सबसे महत्वपूर्ण राष्ट्रीय हित के मुद्दों पर आपसी सहमति बननी चाहिए व सभी दलों, सभी लोगों को इन मुद्दों पर आपसी सहयोग से कार्य करना चाहिए।

सादगी ही जिन्दगी का वास्तविक सौन्दर्य है

-: ललित गर्ग:-

कहते हैं ना लाइफ जितनी सिंपल होगी उतनी ही अच्छी एवं आनन्दमय होगी। हर इंसान सुन्दर एवं आकर्षक दिखना चाहता है, दीखने में बनावटीपन है, प्रदर्शन है, अनुकरण है, जबकि वास्तविक सौन्दर्य सादगी में है। सबसे सुन्दर दिखने की चाह में एक इंसान दूसरे इंसान तक को नहीं छोड़ता। संतुलित, शांत, आनन्दयम एवं सार्थक जिन्दगी के लिये सादगी का बहुत महत्व है, इसलिये 12 जुलाई को राष्ट्रीय सादगी दिवस मनाया जाता है। यह दिवस लेखक और दार्शनिक हेनरी डेविड थोरो के सम्मान में मनाया जाता है। इसी दिन इनका जन्म हुआ था। थोरो को उनकी पुस्तक ह्यवाल्डेनह्ल के लिए जाना जाता था, जो कॉनकॉर्ड, मैसाचुसेट्स में वाल्डेन तालाब के पास एक छोटे से केबिन में एक साधारण जीवन जीने के उनके अनुभवों का वर्णन करती है। उनका मानना था कि लाइफ को केवल पैसे और अनावश्यक चीजों को हासिल करने के लिए ही बस खत्म ना करें। बल्कि हमारा ध्यान नेचर, ज्ञान, सेल्फ डिपेंडेंट और खुद का रास्ता बनाने पर होना चाहिए, जिसके लिए सादगीपूर्ण जीवन जीना बहुत जरूरी है। जैसा कि थोरो ने खुद कहा था- ह्यह्यजैसे-जैसे आप अपने जीवन को सरल बनाते जाएँगे, ब्रह्मांड के नियम सरल होते जाएँगेह्लह्ल हेनरी डेविड थोरो एक ऐसे व्यक्ति थे जो हर काम में माहिर थे, एक लेखक, एक पर्यावरणविद, एक उन्मूलनवादी, एक कवि, लेकिन आप शायद उन्हें अपने हाई स्कूल की अंग्रेजी कक्षा से एक पारलौकिकवादी के रूप में याद करते हों। वह और उनके समकालीन पारलौकिकवादी, सरल शब्दों में मानते थे कि लोगों के पास अपने बारे में ऐसा ज्ञान होता है जो उनके जीवन में सभी बाहरी ताकतों से परे होता है। वे उन भावनाओं से बेहतर तरीके से जुड़ने के लिए एक सरल जीवन जीने की वकालत करते थे।

महान लोगों का मानना है कि प्रतिभा भगवान ने दी है, विनम्र रहें। प्रसिद्धि इंसान ने दी है, कृतज्ञ रहें। अहंकार खुद की देन है, इसलिए सजग रहें। जीवन में सरलता और सादगी बहुत जरूरी है। हमारे सपनों और खुशियों की हर राह शरीर से होकर ही गुजरती है, पर हम इसकी अनदेखी करते रहते हैं। नतीजा, मन के साथ शरीर से भी अस्वस्थ्य बन जाते हैं। बुद्ध कहते हैं, ह्यह्यशरीर को स्वस्थ रखना हमारा कर्तव्य है। तभी मन मजबूत होगा और विचारों में स्पष्टता भी आएगीह्लह्ल बढ़ते कचरे को देखते हुए पश्चिमी देशों में ह्यमिनिमलिज्महृ की बातें हो रही हैं। कम के साथ रहने की इस मिनिमलिस्टिक जीवनशैली का असर कपड़े, पैसे, कला, संगीत, सोच से लेकर इंटीरियर और मेकअप हर जगह अपनाने की कोशिशें बढ़ी हैं। हालांकि भारतीय दर्शन बहुत पहले से ही सादगी से जीने की तरफदारी करता रहा है। जैन दर्शन में बाकायदा इसके लिए ह्यअपरिग्रहह्ल शब्द दिया गया है। यानी जरूरत भर की चीजों के साथ रहना। कम में गुजारा करना। कुल मिलाकर, थोड़े में जीना यानी प्यार, सादगी और सुकून से जीना। जिंदगी भी तो यही है। सफल एवं सार्थक जीवन के सादगी का दर्शन एवं जीवनशैली बहुत जरूरी है। राष्ट्रीय सादगी दिवस हमारी जटिल दैनिक दिनचर्या की भागदौड़ से दूर रहने और जीवन में सरल चीजों की सराहना करने के लिए समर्पित है। हमारा जीवन तेजी से आगे बढ़ रहा है और व्यस्त होता जा रहा है। यह दिवस हमें बाहरी दुनिया से भीतर की ओर ले जाता है, जब हम एक कदम पीछे हटकर यह मूल्यांकन करते हैं कि हम कैसे जीवन को अधिक संतुलन बना सकते हैं, अव्यवस्था को दूर कर सकते हैं और खुद को अलग रख सकते हैं। आज तकनीक ने जितना हमारे जीवन को आसान बनाया है, उतना ही इसने हमें भटकाया भी है और जीवन के सभी क्षेत्रों में प्रतिस्पर्धा पैदा की है। एक साधारण जीवन को सोशल मीडिया पर शायद ही कभी सुर्खियों में लाया जाता है। जापान जैसे कुछ देशों में, लोगों ने यह समझना शुरू कर दिया है कि अगर वे उन वस्तुओं से छुटकारा पा लें जो उनके किसी भी उद्देश्य की पूर्ति नहीं करती हैं, तो उनका जीवन अधिक खुशहाल और कम तनावपूर्ण हो सकता है।

आप सुबह समय पर उठने की आदत डालें और व्यायाम, भ्रमण या योगा करने की आदत डालें। इसके लिए आप 10 मिनट से इसे करने की आदत डालें फिर धीरे धीरे इसे बढ़ाएं। पढ़ना आपके तनाव को कम कर सकता है। साथ ही यह आपकी शब्दावली का विस्तार भी करता है। मानसिक तनाव को दूर कर आपको सकारात्मक बनाता है। जब भी आप खाना लेकर बैठें तो टीवी ना देखें। पूरी तरह से खाने पर ध्यान लगाएं। फोन की आदत को धीरे धीरे कम करें। आज की तेज-रफ्तार दुनिया में, हम अक्सर खुद को ज्यादा की जरूरत में फंसा हुआ पाते हैं। अब समय आ गया है कि हम बुनियादी बातों पर वापस लौटें। जीवन को सरल बनाने का मतलब सिर्फ कम चीजें रखना नहीं है, यह उन चीजों के लिए जगह खोलता है जो हमें वास्तव में हमें खुशी देती हैं। यह धुंध को दूर करता है, दैनिक अव्यवस्था यानी अस्त-व्यस्तता को कम करता है, तनाव को कम करता है और खुशी को बढ़ाता है। थोरो का जन्मदिन हमें सादगी में आनंद खोजने और अपनी जरूरतों और इच्छाओं पर पुनर्विचार करने के लिए प्रोत्साहित करता है। यह जीवन के सरल सुखों का आनंद लेने के लिए एक कदम पीछे हटने के बारे में भी है। लोग तकनीक से दूर रहकर, प्रकृति का आनंद लेते हुए और अपने घरों को साफ करके जश्न मनाते हैं। इसका लक्ष्य उस चीज पर ध्यान केंद्रित करना है जो वास्तव में मायने रखती है, शांति और संतुष्टि को बढ़ावा देना। एक से एक अच्छी छूट का विज्ञापन देखकर मन चीजें खरीदने को आतुर हो उठता है। जरूरत हो या ना हो, बस सस्ती और आकर्षक जानकर हम वस्तुएं खरीद डालते हैं। नतीजा, फालतू वस्तुओं का ढेर लग जाता है। मोटिवेशनल कोच ल्यूमिनिटा कहती हैं, ह्यहम कुछ भी खरीदें, पूरी गंभीरता से खरीदें। कम खरीदना, कम उपयोग करना और खुद को उन वस्तुओं के प्रति समर्पित करना ही सादगी से जीना है ह्ल सादा जीवन यानी आजाद जीवन। वह जीवन, जो आपको उस ओर बढ़ने की राह दिखाता है, जहां जुनून और उपलब्धियां हैं। जहां ऐसा कोई शोर-शराबा या अव्यवस्था नहीं होती, जो आपके रास्ते की बाधा बन जाए। तब आप केवल वही साथ रखते हैं, जो बेहद जरूरी है। कुछ लोगों के लिए सादा जीवन बिताना बहुत कठिन हो सकता है। हमें यही सिखाया गया है कि चीजों का संचय ही सफलता की निशानी है। इससे हम अकसर अत्यंत तनाव में और अपने जीवन की बेतरतीबी में इस तरह फंस जाते हैं कि किसी उद्देश्य, सार्थकता और खुशी के साथ जीना दूभर हो जाता है। सादगी भरा जीवन आपको वैसा जीवन गढ़ने में मदद कर सकता है, जो आपके लिए सबसे महत्वपूर्ण होता है, जो संतोषप्रद और सार्थक होता है। बात चाहे भौतिक पदार्थों की उपलब्धि की हो या आध्यात्मिक उपलब्धि की, जीवन में लक्ष्य तथा संकल्प सबसे जरूरी हैं। सादगीपूर्ण जीवन आपको अपने लक्ष्य, अपनी प्राथमिकताओं को पहचानने में मदद करता है।

सनातन, प्रभु श्रीराम व उनकी अयोध्या

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अपने तीसरे कार्यकाल में विकसित भारत के संकल्प के साथ काम में जुट गए हैं और विपक्ष अभी भी तीसरी पराजय की हताशा में डूबा चुनावी मोड में दिख रहा है। कांग्रेस के नेतृत्व में सम्पूर्ण विपक्ष के नेता सप्ताह में दो बार सरकार गिरने की भविष्यवाणी करके सनसनी फैलाने और मीडिया की फुटेज खाने का प्रयास करते रहते हैं।

वर्तमान लोकसभा में कुछ सीटें अधिक आने से कांग्रेस का दिमाग सातवें आसमान पर है। जब से कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने विपक्ष के नेता के रूप में स्थान मिला है, कांग्रेसी हर दिन मोदी सरकार अब गिरी तब गिरी के सपने देख रहे हैं।

नई सरकार के गठन के बाद पहले संसद सत्र में मोदी सरकार ने जिस कुशलता के साथ विपक्ष के प्रत्येक दांव को ध्वस्त किया उससे विपक्ष बुरी तरह तिलमिला गया है। राहुल गांधी के नेतृत्व में विपक्ष ने पहले लोकसभा अध्यक्ष के चुनाव पर सरकार को घेरने और उसमें मतदान कराकर गिराने का सपना देखा और फिर नीट पेपर लीक घोटाले पर बहस करने को लेकर अड़ गया किंतु दोनों ही जगह वह मात खाया। यानि संसद के पहले सत्र में विपक्ष ने अनावश्यक रूप से सरकार को गिराने व घरेने का प्रयास किया और विफल रहा।

संसद सत्र में कमजोर दिखने के बाद विपक्ष के तेवर और तीखे हो गये हैं वह सच्ची-झूठी बातों को लेकर सरकार आरोप लगा रहा है। सोशल मीडिया स्वयं प्रियंका गाँधी ने ऐसे वीडियो डाले जो फेक थे। वास्तविक मुद्दों से अधिक विपक्ष झूठ फैलाने में सक्रिय है। बारिश में पानी भरने के लिए भी केंद्र सरकार को कोसा जा रहा है और ब्राजील का वीडियो रामपथ के नाम से पोस्ट किया जा रहा है। विपक्ष को लगता है इस तरह झूठ फैलाने से मोदी सरकार की छवि प्रभावित हो जाएगी और उसको गिरना सरल होगा।

राहुल गांधी सक्रियता के नाम पर आवेश दिखा रहे हैं। उन्होंने लोकसभा की 543 में से 99 सीटों पर सफलता प्राप्त की है और उनका अहंकार इतना अधिक बढ़ गया है कि वह जितनी बार मुंह खोलते हैं उतनी बार हिंदू समाज व उसकी आस्था के प्रतीकों का अपमान करते हैं फिर चाहे वो संसद के अंदर हो या बाहर। जहां जहां कोई दुर्घटना या सामाजिक समस्या है वहां वहां राहुल गांधी का काफिला अपनी राजनीति चमकाने जा रहा है। राहुल अभी तक हाथरस, मणिपुर और असम जाकर अपनी मोहब्बत की दुकान का प्रचार कर चुके हैं। समस्या कोई भी हो, स्थान कोई भी हो राहुल चर्चा केवल मोहब्बत की दुकान की ही करते हैं, इस बीच कोई पत्रकार प्रश्न पूछ ले तो उनके तेवर बदल जाते हैं और वो गुस्से में पैर पटक कर चल देते हैं।

सोनिया के समय हिन्दुओं के प्रति कांग्रेस दबी ढकी नफरत राहुल के समय खुल कर सामने आ गई है। राहुल गांधी ने संसद में अपने पहले ही भाषण में सम्पूर्ण हिंदू समाज को हिंसक कहने का दुस्साहस किया। नेता प्रतिपक्ष के रूप में राहुल गांधी ने जोर देकर इस बात को दोहराया कि- जो अपने को हिन्दू कहते हैं वो हिंसक होते हैं। सदन में प्रधानमंत्री जी ने इसका तत्क्षण इसका प्रतिवाद किया और बाद में अपने संबोधन में भी इस पर विस्तार से चर्चा की तो कांग्रेस और इंडी गठबंधन के लोग हंगामा करते रहे। राहुल गांधी ने अपमानजनक तरीके से भगवन शिव का चित्र लहराया और उनके स्वरुप की गलत विवेचना करी। सदन के बाहर विरोध होने पर कांग्रेस ने एक बार झूठ का सहारा लेकर मामले पर लीपा पोती करने का प्रयास किया।

अब थोड़ी बात सनातन, प्रभु श्रीराम व उनकी अयोध्या की कर ली जाए। "अयोध्या अपराजिता है" विधर्मी उस पर आक्रमण कर सकते हैं जीत नहीं सकते, अयोध्या यश से परिपूर्ण है, दुःखों का हरण करने वाली है और श्रीराम के तेज से प्रकाशित है, आसुरी भावनाओं द्वारा ये कभी पराजित नहीं होगी। इस अयोध्या को इक्ष्वाकुवंश के राजाओं ने अपनी राजधानी बनाया और भगवान राम ने यहीं जन्म लिया यह शाश्वत सत्य है। भगवान राम को सृष्टि पर्यंत कोई नहीं हरा सकता।

विकास और आत्मविश्वास के ट्रेलर का सच

- सर्वमित्रा सुरजन

अच्छी नौकरी, बेहतर जीवन स्तर, सामाजिक सुरक्षा और सम्मान, व्यवसाय की सुविधा, पढ़ाई, इलाज बहुत से कारण हैं, जिनकी वजह से भारतीयों के देश छोड़कर जाने का सिलसिला बढ़ रहा है। एनआरआई का दर्जा पाकर अपनी ऊंची हैसियत पर इठलाने वाले ये भारतीय विदेशों में 15 अगस्त या क्रिकेट में जीत के मौकों पर गाहे-बगाहे तिरंगा लहराकर अपनी देशभक्ति के प्रदर्शन से पीछे नहीं रहते हैं। 2014 से पहले हम निराशा की गर्त में डूबे हुए थे। हर तरफ हताशा और निराशा का माहौल था, लेकिन आज देश आत्मविश्वास से भरा हुआ है।

नरेन्द्र मोदी के भाषण की ये पंक्तियां किसी चुनावी मंच से नहीं कही गई हैं, बल्कि रूस में भारतीय समुदाय के बीच श्री मोदी ने बतौर भारत के प्रधानमंत्री ने जो भाषण दिया, उसमें इस तरह की बात कही। श्री मोदी ने ये भी कहा कि 'चुनावों के दौरान मैंने कहा था कि- पिछले 10 सालों में भारत ने जो विकास किया है, वह तो सिर्फ एक ट्रेलर है। आने वाले 10 साल और भी तेजी से विकास के होने वाले हैं। भारत की नयी गति, दुनिया के विकास का नया अध्याय लिखेगी। रस्सी जल गई बल नहीं गए, इसी को कहते हैं। 2024 के चुनाव परिणाम ने बता दिया कि भाजपा जनता के जिस विश्वास और समर्थन के दावे किया करती थी, वो गलत साबित हुए। भाजपा सत्ता में आ तो गई है, लेकिन जदयू और तेदेपा के समर्थन के कारण आई है और अगर किसी वजह से इन दोनों दलों में से किसी एक ने भी अपना हाथ सरकार से वापस खींच लिया, उसी दिन सरकार संकट में आ जाएगी। लेकिन नरेन्द्र मोदी देश से लेकर विदेश तक अपनी जीत को असलियत से बड़ा बताने में लगे हुए हैं। देश में विकास के दावे भी कुछ इसी अंदाज में श्री मोदी कर रहे हैं। 10 सालों के विकास को वे ट्रेलर बता रहे हैं, और आने वाले दस सालों के विकास की बात कर रहे हैं। इस तरह नरेन्द्र मोदी ये मानकर चल रहे हैं कि 2029 के चुनावों में भी उन्हें ही प्रधानमंत्री बनने का मौका मिलेगा। हालांकि उन्हें पहले अपने शासन में विकास के ट्रेलर को देख लेना चाहिए। ट्रेलर में तो यही नजर आ रहा है कि 2016 में हुई नोटबंदी, फिर जीएसटी के लागू होने और उसके बाद 2020 में कोविड के कारण देश के अनौपचारिक क्षेत्र को 11.3 लाख करोड़ रुपए का नुकसान हुआ है। साथ ही 1.6 करोड़ नौकरियां खत्म हुई हैं। देश में बेरोजगारी फिर से बढ़ गई है और महंगाई भी चुनावों के बाद से लगातार बढ़ ही रही है। आने वाली 23 जुलाई को जब एनडीए सरकार का पहला बजट पेश होगा, तब सरकारी खजाने से लेकर सरकार की नीयत तक सबका खुलासा हो ही जाएगा।

गुजारा भत्ता और गुजरे जमाने की राजनीति

@ राकेश अचल

तलाकशुदा मुस्लिम महिलाओं को गुजारा भत्ता देने के सुप्रीम कोर्ट के फैसले का स्वागत करने के साथ ही देश में कांग्रेस विरोधी सियासत भी शुरू हो गयी है। लेकिन उन लोगों का क्या होगा जो देश में मुस्लिम आबादी बढ़ने से बेहद परेशान नजर आ रहे हैं। सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि सीआरपीसी की धारा 125 के तहत किसी भी महिला को गुजरा भत्ता देने की मांग कर सकती है, इसमें धर्म कहीं भी आड़े नहीं आता।

माननीय सुप्रीम कोर्ट का फैसला ऐतिहासिक है या नहीं, ये प्रमाणपत्र देने की जरूरत किसी राजनीतिक दल को नहीं है , क्योंकि सुप्रीम कोर्ट किसी राजनितिक दल का अनुषांगिक संगठन नहीं है। ,लेकिन इस बात पर गौर जरूर की जाना चाहिए कि दस साल सत्ता में रहने के बाद भी भाजपा इस फैसले के बाद विपक्ष जैसी बयानबाजी कर रही है। भाजपा को एक बार फिर शाहबानो और राजीव गांधी याद आ गए हैं। इस फैसले के बहाने भाजपा एक बार फिर से कांग्रेस से सवाल करने लगी है। वजह सिर्फ एक है कि भाजपा इस फैसले को अपनी बैशाखी सरकार के खाते में दर्ज करना चाहती है। भाजपा भूल जाती है कि सुप्रीम कोर्ट के फैसले किसी दल विशेष के फायदे या नुक्सान के लिए नहीं होते। वे व्यक्तियों से जुड़े होते हैं ,खासकर उन व्यक्तियों से जो माननीय अदालत की शरण में खड़े होने का साहस जुटाते हैं।

भला हो अब्दुल समद की पत्नी का जो उसने गुजारा भत्ता देने के तेलंगाना हाई कोर्ट के आदेश को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी। तलाकशुदा महिला ने दंड प्रक्रिया संहिता (सीआरपीसी) की धारा 125 के तहत फैमिली कोर्ट में याचिका दायर की थी, जिसमें कहा गया था कि समद ने उसे तीन तलाक दिया है. फैमिली कोर्ट ने 20 हजार रुपये प्रति महीने गुजारा भत्ता देने का आदेश दिया। माननीय सुप्रीम कोर्ट के जस्टिस बीवी नागरत्ना और जस्टिस ऑगस्टीन जॉर्ज मसीह की बेंच ने दो अलग-अलग लेकिन एकमत फैसलों में यह बात कही। जस्टिस नागरत्ना ने कहा कि सीआरपीसी की धारा 125 सिर्फ शादीशुदा महिलाओं पर ही नहीं बल्कि सभी महिलाओं पर लागू होगी।

सुप्रीम कोर्ट के फैसले राजनीतिक दलों के लिए 'सिलेक्टिव्ह' हो सकते हैं लेकिन कानून के लिहाज से वे हमेशा उचित माने जाते हैं। तलाकशुदा महिलाओं को गुजारा भत्ता देने के माले में 10 जुलाई का फैसला इसलिए महत्वपूर्ण माना जा रहा है क्योंकि 1985 में भी शाहबानो के मामले सुप्रीम कोर्ट ने फैसला सुनाया था कि सीआरपीसी की धारा 125 सभी पर लागू होती है, चाहे उनका धर्म कुछ भी हो। हालांकि इस फैसले को तत्कालीन राजीव गाँधी सरकार ने , मुस्लिम महिला (तलाक पर अधिकारों का संरक्षण) अधिनियम, 1986 लाकर इसे कमजोर कर दिया था जिसमें कहा गया कि मुस्लिम महिला केवल इद्दत के दौरान (तलाक के 90 दिन बाद) ही गुजारा भत्ता मांग सकती है।

मुझे याद आता है कि साल 2001 में सुप्रीम कोर्ट ने 1986 के अधिनियम की संवैधानिक वैधता को बरकरार रखा, लेकिन फैसला सुनाया कि तलाकशुदा पत्नी को गुजारा भत्ता देने का पुरुष का दायित्व तब तक जारी रहेगा जब तक वह दोबारा शादी नहीं कर लेती या खुद का भरण-पोषण करने में सक्षम नहीं हो जाती। बात 34 साल पुरानी है लेकिन गड़े मुर्दे उखाड़ने में दक्ष भाजपा सुप्रीम कोर्ट के ताजा फैसले का भी राजनीतिक लाभ लेने पर आमादा है। भाजपा की मजबूरी भी है कि वो इस फैसले का राजनीतिक इस्तेमाल करे क्योंकि हाल के लोकसभा चुनाव में मुस्लिम मतदाताओं ने भाजपा को सिरे से खारिज करते हुए उसे बैशाखियों के सहारे चलने के लिए विवश कर दिया।

सवाल सुप्रीम कोर्ट के फैसले का नहीं है । सुप्रीम कोर्ट का फैसला 34 साल पहले के फैसले से भिन्न थोड़े ही है। फैसला तब भी सही था और आज भी सही है । गलत तो ये है कि मुस्लिमों को देश में दो नंबर का ही नहीं बल्कि संदिग्ध नागरिक मानने वाली भाजपा इस फैसले का सियासी इस्तेमाल कर रही है। भाजपा यदि सचमुच मुसलमानों की हितैषी है तो उसने लोकसभा चुनाव में मुसलमानों का हौवा खड़ा कर ध्रुवीकरण करने का दुस्साहस क्यों किया ?

क्यों नहीं एक भी मुस्लिम को संसद का टिकिट दिया ? क्या आज के केंद्रीय मंत्रिमंडल में मुस्लिम समाज का कोई प्रतिनिधि है ? माननीय सुप्रीम कोर्ट के फैसले पर भाजपा को बल्लियों उछलते देख कर मुझे तो हंसी आती है। आपकी आप जानें। क्योंकि मै किसी भी दल के दोहरे चरित्र पर केवल हंसने का साहस कर सकता हूँ फिर चाहे वो कांग्रेस हो या भाजपा। कांग्रेस की तत्कालीन राजीव गांधी सरकार ने 1986 में जो गलती की उसकी सजा कांग्रेस को देश की जनता और मुस्लिम समाज दे चुका है। अब कांग्रेस को एक बार से ज्यादा बार कैसे दी जा सकती है ?

देश के अवाम को ये जान लेना चाहिए कईकोर्ट का निर्णय कोर्ट का है किसी सत्तारूढ़ दल का नहीं। इस फैसले में भाजपा की कोई भूमिका नहीं है। इसलिए उसे इस फैसले पर सवाल करने का भी कोई हक नहीं बनता।भाजपा के साथ ही गोदी मीडिया भी सुप्रीम कोर्ट के फैसले को लेकर उसी तरह नुक्ताचीनी कर रहा है जैसा कि भाजपा कर रही है।इस मामले में क्या कोई ये बता सकता है की तीसरी बार सत्ता में आयी भाजपा ने तलाकशुदा महिलाओं को गुजाराभत्ता देने के लिए क्या कुछ किया ? भाजपा ने तो पिछले दस साल में मुसलमानों के खिलाफ जितना मुमकिन था उतना बुलडोजर संहिता का इस्तेमाल किया , भारतीय दंड संहिता का नहीं। ।मुस्लिम आरक्षण का विरोध किया। आज भी भाजपा शासित राजयों में मुसलमान निशाने पर है। भाजपा कभी मुसलमानों की रसोई में झांकती है तो कभी उनके हिजाब को लेकर वितण्डावात खड़ा करती है।

बहरहाल में मुस्लिम समाज की तमाम तलाकशुदा महिलाओं के हक में आये इस फैसले का तहेदिल से इस्तकबाल करता हूँ और भाजपा को भी इस बात के लिए शुक्रिया अदा करता हूँ कि उसकी सरकार ने सीआरपीसीमें धारा १२५ बनी रहने दी,अन्यथा उसका क्या ,वो तो आईपीसी को बीएनएस [भारतीय न्याय संहिता] बना ही चुकी है।

डीएम बोलेः रोड सेफ्टी एक्शन प्लान करें तैयार

मोहरवा पुल की करें मरम्मत

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। जिलाधिकारी शिवशरणप्पा जीएन ने जिला स्तरीय सड़क सुरक्षा समिति की बैठक में सीओ सिटी से कहा कि प्रमुख चैराहों पर सिगनल व्यवस्था, जेब्रा क्रॉसिंग, फुटपाथ चिन्हांकन की व्यवस्था की सूची बनाकर दें। हेलमेट, सीटबेल्ट, मोबाइल फोन, रांग साइड ड्राइविंग, ओवर स्पीडिंग, ओवरलोडिंग, रेट्रो रिफ्लेक्टिव टेप के विरुद्ध पुलिस व परिवहन विभाग प्रभावी कार्यवाही करे।

सडक सुरक्षा बैठक में निर्देश देते डीएम।

गुरुवार को कलेक्टेट्रट सभागार में बैठक की अध्यक्षता करते हुए डीएम शिवशरणप्पा जीएन ने कहा कि एक्सईएन लोनिवि प्रांतीय खंड सत्येंद्रनाथ से कहा कि ब्लैक स्पॉट की लिस्ट दें। सड़कों पर लेन व्यवस्था निर्धारण के कार्य बतायें। एआरटीओ को निर्देश दिये कि जिला स्तरीय रोड सेफ्टी एक्शन प्लान 2023 तैयार कराने को शासन को पत्र भेजें। गुड सेमेरिटन में अच्छे कार्य करने वाले लोगों को सम्मानित किया जाये। पब्लिक सिटी वैन से सड़क सुरक्षा के प्रति जागरूक करें। अधिक से अधिक प्रचार गांव व शहरों में करायें। जिला विद्यालय निरीक्षक व बीएसए से कहा कि इंटर कॉलेजों में सड़क सुरक्षा नियमों बाबत भाषण, लेखन प्रतियोगिता करायें। बच्चों को जागरूक करें। एक्सईएन लोनिवि से कहा कि 14 ब्लैक स्पॉट चिन्हित हैं, उन्हें विवरण समेत अगली बैठक में रखें। डीएम ने एआरटीओ व एक्सईएन लोनिवि से कहा कि हॉटस्पॉट के कार्य में कौन-कौन विभाग हैं, अगली बैठक में इन विभागों को बुलायें। अन्ना पशुओं बाबत बैठक में एजेंडा रखें। मुख्य चैराहों पर रेड लाइट लगायें। डीएम ने राष्ट्रीय राजमार्ग के अधिकारियों से कहा कि राष्ट्रीय राजमार्ग पर जहां हादसे ज्यादा हो रहे हैं, वहां रंबल स्टेप व साइन बोर्ड लगवायें। मोहरवा पुल के जर्जर होने बाबत राष्ट्रीय राजमार्ग प्रयागराज के अधिकारियों को निर्देश दिये कि जब तक पुल का नया निर्माण नहीं होता, तब तक पुल की मरम्मत करायें, ताकि वाहनों का आवागमन जारी रहे। पुलिस विभाग से कहा कि पुल से भारी वाहनों पर रोक लगायें। बैठक में सीएमओ डॉ भूपेश द्विवेदी, सीओ सिटी राजकमल, एआरटीओ विवेक शुक्ला, एक्सईएन विद्युत दीपक सिंह, डीएसओ आनंद कुमार सिंह, बीएसए बीके शर्मा, ईओ नगर पालिका लालजी यादव समेत डिस्ट्रिक कोऑपरेटिव बैंक अध्यक्ष पंकज

इंदिरा गांधी के साथ रहे गल्ला व्यापारी का निधन

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। इंटरनेशनल पायनियर्स क्लब के राष्ट्रीय अध्यक्ष केशव शिवहरे के पिता/जिले के बयोवृद्ध गल्ला व्यापारी हनुमानदीन शिवहरे सौ वर्ष बिताने के बाद गुरुवार को निधन हो गया। अंतिम संस्कार सुंदर घाट स्थित मुक्तिधाम में हुआ। छोटे पुत्र सेवा भारती के जिला महामंत्री राज किशोर शिवहरे ने मुखाग्नि दी। गुरुवार को अंतिम यात्रा में पूर्व सांसद आरके सिंह पटेल, सपा नेता रामनरेश अग्रहरी उर्फ बवाली भाई, अशोक द्विवेदी, राजेश सोनी, कमलेश कुमार, शंकर यादव, प्रमोद अग्रहरी, भाजपा नेता शक्ति प्रताप सिंह तोमर, डॉ सीताराम गुप्ता, डॉ प्रबोध अग्रवाल समेत हजारों लोग शामिल रहे। इसी क्रम में एआईसीसी सदस्य/पूर्व जिलाध्यक्ष कांग्रेस पंकज मिश्र ने बताया कि कांग्रेस की धुरी रहे व इंदिरा गांधी के साथ तमाम संस्मरण हनुमानदीन शिवहरे से जुडे हैं। उन्होंने इंदिरा गांधी के लिए कई बार जेल गये। जिले के वरिष्ठ कांग्रेसी हनुमानदीन शिवहरे की मृत्यु पर पूरा कांग्रेस परिवार शोकमग्न है। मृतात्मा की शान्ति को परम पिता परमात्मा श्री चरणों में स्थान दें। दुख की घड़ी में केशव शिवहरे व समस्त शोकाकुल परिवार के प्रति

कर्वी-मऊ पुलिस ने दबोचे दो वांछित

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक अरुण कुमार सिंह के निर्देश पर वांछित/वारंटी की गिरफ्तारी को जारी अभियान में कर्वी कोतवाल उपेन्द्र प्रताप सिंह की अगुवाई में दरोगा गजबे आलम ने धारा 87/137(2) आईपीसी के वांछित राजकुमार पुत्र देवराज सिकरिया को गिरफ्तार किया। टीम में दरोगा गजबे आलम व सिपाही राहुल देव शामिल रहे।

इसी क्रम में प्रभारी निरीक्षक मऊ विनोद कुमार राय की अगुवाई में दरोगा इन्द्रजीत गौतम ने छेडछाड व पॉक्सो एक्ट के वांछित सुनील कुमार निषाद पुत्र राजेन्द्र प्रसाद बौसड़ा को गिरफ्तार किया। टीम में दरोगा इन्द्रजीत गौतम, सिपाही प्रवीण पाण्डेय शामिल रहे।

पर्यटन अधिकारी व डीएफओ ने खाया है कमीशनः विधायक

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। सदर विधायक अनिल प्रधान ने पर्यटन विभाग के जिले में दो सौ करोड़ रुपये के जारी प्रोजेक्ट पर भ्रष्टाचार के आरोप लगाये। विधायक ने कहा कि चित्रकूट में प्रभु श्रीराम के नाम पर पर्यटन विभाग लूट मचाये है।

गुरुवार को सदर विधायक अनिल प्रधान ने आरोप लगाया कि पर्यटन विभाग ने 80 फीसदी प्रोजेक्ट पर सरकारी धन का बंदरबांट किया है। मानकों को ताक में रखकर पर्यटन विभाग ने गुणवत्ता विहीन कार्य कराये हैं। सभी प्रोजेक्ट की जांच उच्च स्तरीय अधिकारियों से कराई जाये तो भ्रष्टाचार का खुलासा हो जायेगा।

सदर विधायक अनिल प्रधान।

उन्होंने यूपी के पहले स्काई ग्लास ब्रिज में दरार आने बाबत कहा कि स्काई ग्लास ब्रिज निर्माणकर्ता कम्पनी के कार्य पूरा होने से पहले भुगतान करना खुद में सवाल खडे करता है। विधायक ने वन विभाग के अधिकारियों पर भ्रष्टाचार का आरोप लगाया। मानकों को ताक में रखकर स्काई ब्रिज का निर्माण किया गया है। कंपनी से कमीशनखोरी कर पुल का कार्य अधूरा होने पर भी पूरा भुगतान कर दिया है। स्काई ब्रिज में भ्रष्टाचार की उच्च स्तरीय जांच कराई जाये। रानीपुर टाइगर रिजर्व के उप निदेशक/डीएफओ एनके सिंह पर सदर विधायक ने गंभीर आरोप लगाये। उन्होंने कहा कि डीएफओ एनके सिंह मानिकपुर तहसील के तुलसी जलप्रपात पर बने स्काई ग्लास ब्रिज में कम्पनी से भारी कमीशनखोरी की है। इन्हें यहां से हटाकर कायदे से जांच कराई जाये।

दम्पति को ट्रक ने पीछे से मारी ठोकर पति की मौत, पत्नी बाल-बाल बची

अखंड भारत संदेश

राजापुर/चित्रकूट। राजापुर कस्बे के यमुना रोड जायसवाल ढाबे के पास एक दम्पति को ट्रक ने जोरदार ठोकर मार दी। मौके पर पति की मृत्यु हो गई व पत्नी बाल-बाल बची। हादसा होते ही घटना स्थल पर यात्रियों व कस्बे के लोगों का हुजूम उमड पडा। दबाव बनाकर ट्रक रोकने के प्रयास हुए। चालक ट्रक छोड़कर फरार हो गया।

ये हादसा गुरुवार को सवेरे साढे आठ बजे कस्बे के यमुना रोड पर हुआ। बताया गया कि घटना की सूचना मिलते ही पुलिस ने ट्रक के नीचे फंसी मोटरबाइक व शव को

रोती-बिलखती पत्नी को संभालते परिजन।

मशक्कत से निकालकर पंचनामा कर पोस्टमार्टम को मर्चरी भेजा। बताया गया कि राम अभिलाष सिंह उर्फ बबलू सिंह पटेल (50) पुत्र स्व रामादीन सिंह मवई मजरा कनैली थाना सराय अकिल जिला कौशाम्बी पत्नी गीता को लेकर ससुराल बबेरू से शादी समारोह से घर लौट रहा था। कस्बे के यमुना रोड जायसवाल ढाबे के पास पीछे से तेज रफ्तार ट्रक ने जोरदार ठोकर मार दी। पत्नी गीता देवी बाल-बाल बच गई। पति राम अभिलाष सिंह उर्फ बबलू मोटरबाइक समेत ट्रक के नीचे आ गया। मौके पर उसकी मृत्यु हो गई। पति गीता देवी के हाल-बेहाल हैं। पत्नी गीता देवी ने ट्रक चालक के खिलाफ भारतीय न्याय संहिता के तहत धारा 281, 125बी, 106(1) मामला दर्ज कराया। रोते-बिलखते बताया कि दो पुत्र व दो पुत्री हैं। घटना की सूचना पर परिजन मौके पर आ गये थे। प्रभारी इंचार्ज इमरान खान पुलिस बल समेत घटना स्थल पहुंचे। ट्रक के अंदर फंसी मोटरबाइक व शव को बाहर निकाला।

गोल्डन कार्ड धारकों को मिलेगी किसान निधिः राजकुमार

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। उपकृषि निदेशक राजकुमार ने बताया कि भारत सरकार की परियोजना एग्रीस्टैक के तहत आठ जुलाई से सभी राजस्व गांवों में कैम्प में भूमिधर किसानों की फार्मर रजिस्ट्री हो रही है। फार्मर रजिस्ट्री बाद किसानों को गोल्डन कार्ड दिये जायेंगे। किसानों को आधार लिंक मोबाइल नम्बर, खतौनी की छायाप्रति, आधार कार्ड कैम्प में लाना होगा।

गुरुवार को उपकृषि निदेशक

उप कृषि निदेशक राजकुमार।

राजकुमार ने बताया कि कैम्प से पहले जिन किसानों का मोबाइल नम्बर आधार से लिंक नहीं है, वे जल्द नजदीकी आधार सेन्टर/जनसेवा केन्द्र से मोबाइल नम्बर आधार से लिंक करायें, ताकि किसानों के गोल्डन कार्ड बनाने में समस्या न हो। फार्मर रजिस्ट्री गोल्डन कार्ड से किसानों को पीएम किसान योजना की 19वीं किस्त मिलेगी।

किसानों को फसली ऋण को किसान क्रेडिट कार्ड लेने में सुगमता, फसल बीमा लाभ लेने में सुगमता, आपदा प्रबंधन में क्षतिपूर्ति लेने में सुगमता, न्यूनतम समर्थन मूल्य पर खरीद में सुगमता, किसानों को विभिन्न योजनाओं आंकड़ो के आधार पर योजनाओं का लाभ, वितरण में सुगमता होगी। लाभार्थी के बार-बार सत्यापन की जरूरत नहीं होगी। किसानों को समय से परामर्श मिल सकेगा। उन्होंने कहा कि जिले के के सभी किसान अपने गांव में लगने वाले कैम्प में अनिवार्य रूप से फार्मर रजिस्ट्री गोल्डन कार्ड बनवायें। आगामी पीएम किसान की 19वीं किस्त उन्हीं किसानों को मिलेगी, जिनका फार्मर रजिस्ट्री गोल्डन कार्ड बना होगा। कैम्प से पहले नजदीकी आधार सेन्टर/जनसेवा केन्द्र में मोबाइल नम्बर आधार से लिंक करायें।

दो के कब्जे से 71 क्वार्टर शराब बरामद

चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक अरुण कुमार सिंह के निर्देश पर अवैध शराब निर्माण व बिक्री की रोकथाम को जारी अभियान में कर्वी कोतवाल उपेन्द्र प्रताप सिंह की अगुवाई में चैकी प्रभारी शिवरामपुर सत्यमपति त्रिपाठी ने सोनू कुमार पुत्र फूलचन्द्र कुशवाहा खुटहा के कब्जे से 44 क्वार्टर देशी शराब व दरोगा यूटी कुवंर प्रखर सिंह ने संतोष कुमार पुत्र श्यामलाल रेहुटा जिला बांदा के कब्जे से 27 क्वार्टर देशी शराब समेत गिरफ्तार किया। दोनों पर आबकारी अधिनियम के तहत मामला दर्ज किया। टीम में चैकी प्रभारी शिवरामपुर सत्यमपति त्रिपाठी व दरोगा यूटी कुवंर प्रखर सिंह, सिपाही नरेन्द्र कुमार, विपिन, श्यामू तथा विवेक शामिल रहे।

नालियों की सफाई न होने से रास्ते में भरा रहता गंदा पानी, ग्रामीण बीमारियों से त्रस्त

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। पहाडी ब्लॉक के अशोह गांव की दलित बस्ती से जाने वाले मुख्य मार्ग में बरसाती नालियों की सफाई न होने से रास्ते में पानी बह रहा है। गंदा पानी बहने से मच्छरों के प्रकोप से मलेरिया, बुखार, खांसी, जुकाम से ग्रामीण बीमार हो रहे हैं।

गुरुवार को ग्रामीणों ने बताया कि बीडीओ से कई बार शिकायत की गई है। सिवाय आश्वासन के कुछ नहीं मिला। सफाई कर्मी महीनों से गायब है। पास में गोरधइया तालाब में बरसात का पानी जाता था। दोनों तरफ नालियों की सफाई

रास्ते में भरा गन्दा पानी।

न होने से तालाब में पानी न जाकर आम रास्ते में बह रहा है। गंदे पानी से ग्रामीण बीमारियों से त्रस्त हैं। गांव के नथूलाल, रामकेश, रिंकू, सुरेश, हरी, बुद्धराज, भूपत, रामजी ने बताया कि तालाब में पानी नालियों की सफाई न होने से नहीं पहुंच रहा।

बिना स्टीमेट के जेई भदेहदू बेंच रहा उपकरण, कई लाख के सरकारी उपकरण बेंचने का आरोप

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। राजापुर डिवीजन के भदेहदू उप केंद्र में तैनात जेई करण सिंह सरकारी सामान को गुपचुप ढंग से बेंच रहा है। स्थलीय सर्वे बाद स्टीमेट बनता है। सरकारी खाते में पैसा जमा के बाद पीआर से सामान जारी होता है।

गुरुवार को जेई की हरकतों का खुलासा हुआ। बताया गया कि उपकेन्द्र में तैनात कर्मचारियों ने जेई की शिकायत उच्चाधिकारियों से की तो कमेटी बनाकर जांच हुई, जांच में सही मिलने पर कमेटी के एक्सईएन राजापुर मुकेश कुमार व एसडीओ ने जांच में हीला-हवाली की तो दोनों को राजापुर डिवीजन से हटा दिया गया। अधीक्षण अभियंता के तबादला होने से नये एसई ने चार्ज ग्रहण कर एक सप्ताह की छुट्टी पर चले गये, जबकि सरकार के जीरो टॉलरेंस नीति को ताक में रखकर जेई पावर हाउस के उपकरण बेंचकर विभाग को क्षति पहुंचा रहा है। पूर्व में पहाड़ी पावर हाउस में तैनाती दौरान जांच में अवैध वसूली में लिप्त होने पर कस्बावासियों व ग्रामीणों के विरोध पर राजापुर डिवीजन के भदेहदू पावर हाउस में तैनात किये गये थे। वहां भी मनमानी ढंग से बिजली उपकरण बेंचकर विभाग को क्षति पहुंचा रहा है। मामले की उच्च स्तरीय जांच की मांग ग्रामीणों ने की है। बिना स्टीमेट के चोरी से सामान बेंचने के विरोध पर तैनात कर्मियों का वेतन काटने व नौकरी से निकालने की धमकी दे रहा है। उच्चाधिकारियों ने मामले की जांच नहीं की। कई लाख रुपये के सामान बेंच चुका है। अस्थाई मीटर विभाग के अधिशासी अभियंता का चार्ज भी मिला है।

व्यापारियों को दें ऋण, निपटायें समस्यायेंः डीएम

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। जिलाधिकारी शिवशरणप्पा जीएन ने जिला स्तरीय उद्योग बन्धु समिति की बैठक में नितेश मित्र पोर्टल, मुख्यमंत्री युवा स्वरोजगार योजना, एक जनपद एक उत्पाद, ऋण सहायता योजना, प्रधानमंत्री रोजगार सृजन आदि बिन्दुओं की समीक्षा कर बैंक अधिकारियों से कहा कि योजनाओं में उद्यमियों के उद्योग लगाने को लम्बित आवेदन तत्काल निस्तारित करें।

गुरुवार को कलेक्टेट्रट सभागार में हुई बैठक की

उद्यमियों की बैठक में निर्देश देते डीएम।

अध्यक्षता करते हुए डीएम शिवशरणप्पा जीएन ने कहा कि लोगों को रोजगार मिल सके। जिन उद्यमियों ने विभिन्न विभागों में एमओयू हस्ताक्षर किये हैं, उनके आवेदन बैंकों में लंबित हैं। उपायुक्त जिला उद्योग केंद्र को निर्देश दिये कि संबंधित उद्यमियों व बैंकों से वार्ताकर कमियां दूर कर ऋण दिलायें। यहां के बेरोजगारों को रोजगार दिलाने को विभिन्न विभागों में उद्योग स्थापित करने को एमओयू हस्ताक्षरित किये है। उनसे संपर्क कर अधिक से अधिक उद्योग लगवायें। जिन उद्यमियों के धारा 80, बैंकों बाबत अन्य समस्याये हैं, अगली बैठक में संबंधित अधिकारियों को बुलाकर निस्तारित करायें। व्यापार मंडल पदाधिकारियों ने शहर में विद्युत समस्या बताई। जिलाधिकारी ने एक्सईएन विद्युत दीपक सिंह को निर्देश दिये कि तत्काल विद्युत व्यवस्था में सुधार करें। शहर की विद्युत तारें नीचे हैं तो ठीक करायें। बैठक में सीएमओ डॉ भूपेश द्विवेदी, सीबीओ डॉ सुभाष चन्द्र, डीसी एनआरएलएम ओम प्रकाश मिश्रा, सीओ सिटी राजकमल, उपायुक्त राज्य कर अवनीश कुमार चैधरी, एआईजी स्टांप श्याम सुंदर, जिला खनिज अधिकारी सुधाकर सिंह, एक्सईएन विद्युत दीपक सिंह, बंदोबस्त अधिकारी चकबंदी एमएल धर्मान, उद्यमी मित्र सुधा सिंह समेत डिस्ट्रिक कोऑपरेटिव बैंक अध्यक्ष पंकज अग्रवाल, व्यापार मंडल जिलाध्यक्ष ओम केसरवानी, महामंत्री गुलाबचंद गुप्ता, सुनील द्विवेदी, ऋषि आर्य, राहुल गुप्ता, अंकित पहारिया, फूलचंद आदि व्यापारी मौजूद रहे।

एसपी के निर्देशः केन्द्र प्रभारी ने दम्पति में कराई सुलह

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक अरुण कुमार सिंह के निर्देश पर सामाजिक रिश्तों को बचाने के प्रयास में पुलिस कार्यालय स्थित परिवार परामर्श केन्द्र ने आपसी पारिवारिक विवाद को समाप्त कराकर दम्पति में सुलह कराई।

गुरुवार को भरतकूप थाने के रौली कल्याणपुर की हीराकामिनी पत्नी रजोला ने पुलिस अधीक्षक को सौंपे पत्र में कहा कि पति रजोला प्रसाद पुत्र बलवंता रौली कल्याणपुर आये दिन शराब पीकर मारपीट, लड़ाई-झगड़ा कर प्रताड़ित करते हैं। एसपी ने पत्र निस्तारण को प्रभारी परिवार परामर्श केन्द्र भेजा। केन्द्र प्रभारी श्रीमती गुड्डी देवी, महिला

सुलह कराती पुलिस।

सिपाही शिवांगनी श्रीवास्तव, महिला सिपाही मंजूलता ने शिकायत को विस्तार से सुन-समझकर दूसरे पक्ष को पुलिस कार्यालय बुलाया। दोनों पक्षों को भविष्य में विवाद न करने व पारिवारिक कर्तव्यों का पालन करने को कहा। आपसी सुलह होने पर दम्पति ने एक-दूसरे से तालमेल से रहने का भरोसा दिया।

पाक्सो एक्ट वांछित गिरफ्तार

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक अरुण कुमार सिंह के निर्देश पर वांछित/वारंटी की गिरफ्तारी को जारी अभियान में प्रभारी निरीक्षक मानिकपुर विनोद कुमार शुक्ला की अगुवाई में निरीक्षक अपराध प्रभुनाथ यादव ने पाक्सो एक्ट वांछित रामकुमार उर्फ विट्ठल रैदास पुत्र भइयालाल गोरहा पुरवा मजरा गढचपा को गिरफ्तार किया। टीम में निरीक्षक अपराध प्रभुनाथ यादव, दरोगा यदुवीर सिंह, सिपाही मनोज कुमार शामिल रहे।

तीन बजे ही बन्द हो जाता है ब्लाक

अखंड भारत संदेश

मानिकपुर/चित्रकूट। मानिकपुर ब्लाक में तीन बजे से सभी कार्यालय में ताले लटकने लगते हैं। समय से पहले ब्लाक कर्मचारी ताला लगाकर गायब हो जाते हैं।

गुरुवार को मानिकपुर ब्लाक में कर्मचारियों के गायब होने का खुलासा हुआ। बताया गया कि मानिकपुर ब्लाक में तीन बजे से सभी कर्मचारी ताला लगाकर चले जाते हैं। ये नजारा आये दिन देखने को मिलता है। जीता-जागता उदाहरण गुरुवार को तीन बजे मानिकपुर ब्लाक के सभी कार्यालय में ताला लटकता दिखा। फरियादी अपने काम के

ब्लाक में लटक रहा ताला।

लिए चक्कर काटते देखे गये। ये नजारा ब्लाक में हमेशा देखने को मिलता है। ब्लाक के अकर्मण्डय लिपिक किसी फरियादी के बिना सुविधा शुल्क लिये कोई कार्य नहीं करते।

काठमांडू से जयपुर, अहमदाबाद और कोलकाता की सीधी उड़ान का प्रस्ताव

काठमांडू। नेपाल की एक निजी विमान कंपनी ने काठमांडू से भारत के कुछ प्रमुख शहरों में सीधी उड़ान भरने की अनुमति के लिए अनुरोध किया है। नेपाल की दूसरी बड़ी निजी कंपनी ने अपने बेड़े में नए विमानों को समावेश करने के बाद यह अनुरोध किया है।

श्री एयर ने नेपाल के नागरिक उड्डयन मंत्रालय में भारत के कुछ शहरों में काठमांडू से सीधी व्यवसायिक उड़ान भरने की अनुमति के लिए निवेदन दिया है। श्री एयर के कॉरपोरेट मैनेजर अनिल माननन्धर ने बताया कि श्री एयर की तरफ से भारत के अहमदाबाद, जयपुर और कोलकाता के लिए सीधी उड़ान भरने के लिए प्रस्ताव किया गया है।

माननन्धर ने बताया कि अब तक एयर एम्बुलेंस और चार्टर्ड फ्लाइट के रूप में भारत के विभिन्न शहरों में सकुशल उड़ान भरने का अनुभव होने के कारण अब नियमित व्यवसायिक उड़ान की अनुमति मांगी गई है। उन्होंने बताया कि यदि जल्द ही अनुमति मिल जाती है तो अगस्त से ही उड़ान भरने के लिए सभी तैयारियां पूरी कर ली गई हैं।

श्री एयर के अलावा नेपाल की सबसे बड़ी निजी विमान कंपनी बुद्धा एयर की तरफ से काठमांडू से भारत के लखनऊ, देहरादून और पटना सहित जनकपुर से अयोध्या, नेपालगंज से लखनऊ तक की सीधी उड़ान की अनुमति मांगी गई है। भारत की एक निजी कंपनी ने सिक्किम के गंगटोक से काठमांडू तक सीधी उड़ान की अनुमति मांगी है, जो अभी लम्बित है।

हिन्दुस्थान समाचार

दक्षिण अफ्रीका: 'आतंकवादी हमले' में निशाना बनायी गई मस्जिद खुली रहेगी -

जोहान्सबर्ग: दक्षिण अफ्रीका के तटीय शहर डरबन में एक मस्जिद के ट्रस्टियों ने बुधवार को वहां नमाज जारी रखने की बात कही. इस मस्जिद को एक नाकाम बम विस्फोट के प्रयास में निशाना बनाया गया था. मस्जिद के ट्रस्टियों ने कहा कि यह हमला मुस्लिम समुदाय को उनके धर्म का पालन करने से नहीं रोक सकेगा.

डरबन नॉर्थ के उपनगर में मस्जिदुर रहमान के ट्रस्टी यूसुफ देसाई ने बुधवार को स्थानीय मीडिया को बताया कि सोमवार को पुलिस को बुलाया गया, जब मस्जिद के सुरक्षा गार्ड ने मस्जिद के ड्राइववे में घुसे एक वाहन से बाहर निकलने वाले एक व्यक्ति से संपर्क किया.

जैसे ही गार्ड उसके पास पहुंचा, वाहन तेजी से भाग गया, लेकिन उससे पहले व्यक्ति ने मस्जिद में कुछ फेंका. दक्षिण अफ्रीकी पुलिस सेवा के प्रवक्ता ब्रिगेडियर जे नाइकर ने पुष्टि की कि बम निरोधक दस्ते के तकनीशियनों ने मस्जिद स्थल पर वाणिज्यिक विस्फोटकों से बने एक विस्फोटक उपकरण की पहचान की, जिसमें फ्यूज लगाई गई थी. हालांकि इसे विस्फोट करने के लिए सेट नहीं किया गया था.

देसाई ने स्थानीय मीडिया को बताया कि यह हमला मुस्लिम समुदाय को अपने धर्म का पालन करने या अन्य धर्मों के साथ संवाद करने से नहीं रोकेगा. देश में मुस्लिम संगठनों ने बम विस्फोट के प्रयास को इस्लामोफोबिक आतंकवादी हमला करार दिया है.

दक्षिण अफ्रीका के जमीयतुल उलेमा (मुस्लिम धर्मशास्त्रियों की परिषद) के साथ-साथ सुन्नी उलेमा परिषद ने भी इस बम विस्फोट के प्रयास की निंदा की है और इसे एक ऐसे समुदाय पर इस्लामोफोबिक हमला बताया है, जिसने मस्जिद का इस्तेमाल सामुदायिक केंद्र के रूप में किया है और इस क्षेत्र में सभी को लाभ पहुंचाने वाली सामाजिक परियोजनाएं चलायी हैं. डरबन नॉर्थ, जो कभी रंगभेद के दौर में केवल श्वेत अल्पसंख्यक दक्षिण अफ्रीकियों के लिए आरक्षित एक कुलीन उपनगर था, अब बड़ी संख्या में भारतीय मूल के छठी और सातवीं पीढ़ी के नागरिकों का घर है, जिन्होंने वहां अपनी मस्जिद बना ली है.

देश भर में कई अन्य पूर्व श्वेत उपनगरों में भी यही स्थिति रही है, जिसके कारण अक्सर प्रतिदिन पांच बार लाउडस्पीकर पर अजान (प्रार्थना के लिए आह्वान) को लेकर अन्य धर्मों के पड़ोसियों के साथ तनाव पैदा होता है. इससे पहले की घटनाओं में मस्जिदों में सुअर का सिर फेंकना और विरोधियों तथा धर्मावलंबियों के बीच तीखी झड़पें शामिल हैं, लेकिन ऐसा माना जा रहा है कि यह पहली बार है कि किसी मस्जिद पर बम विस्फोट का प्रयास किया गया है.

गवर्नमेंट ई मार्केटप्लेस जेम से खरीद 1.24 लाख करोड़ रुपये के पार

नई दिल्ली। केंद्र सरकार के ई-मार्केटप्लेस जीईएम (जेम) ने चालू वित्त वर्ष 2024-25 की पहली तिमाही (अप्रैल-जून) में शानदार शुरूआत की है। जेम के माध्यम से पहली तिमाही में वस्तुओं एवं सेवाओं की खरीद 1.24 लाख करोड़ रुपये को पार कर गई है। जेम पर खरीद की यही गति कायम रही तो यह चालू वित्त वर्ष के अंत तक दुनिया का सबसे बड़ा मंच बन जाएगा।

ई-खरीद पोर्टल जेम के मुख्य कार्यपालक अधिकारी प्रशांत कुमार सिंह ने गुरुवार को यहां प्रेस कान्फ्रेंस में कहा कि जेम ने अप्रैल-जून तिमाही के अंत में 1,24,761 लाख करोड़ रुपये का सकल व्यापारिक मूल्य दर्ज किया है, जो तिमाही-दर-तिमाही आधार पर पिछले वित्त वर्ष के 52,670 करोड़ रुपये की तुलना में 136 फीसदी अधिक है।

अखंड भारत संदेश
स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक
स्वामी श्री योगी सत्यम् फॉर
योग सत्संग समिति
द्वारा विपिन इण्टरप्राइजेज
1/6C माधव कुंज
कटरा प्रयागराज से मुद्रित
एवं
क्रियायोग आश्रम एण्ड अनुसंधान संस्थान
झूंसी, प्रयागराज उत्तर प्रदेश
से प्रकाशित।
सम्पादक
स्वामी श्री योगी सत्यम्
RNI No: UPHIN/2001/09025
ऑफिस मो.:
9565333000
Email:-
akhandbharatsandesh1@gmail.com
सभी विवादों का न्याय क्षेत्र
प्रयागराज होगा।

नेपाल : दो तिहाई बहुमत के साथ ओली पेश करेंगे सरकार बनाने का दावा

काठमांडू। नेपाल में बनते बिगड़ते राजनीतिक समीकरण के साथ ही प्रधानमंत्री पुष्पकमल दाहाल प्रचण्ड शुक्रवार को जैसे ही अपने पद से इस्तीफा देंगे वैसे ही केपी शर्मा ओली दो तिहाई बहुमत के साथ सरकार बनाने का दावा पेश करने वाले हैं, इसके लिए सभी घटक दलों के सांसदों का हस्ताक्षर करा लिया गया है।

शुक्रवार को प्रतिनिधि सभा की बैठक में प्रधानमंत्री प्रचण्ड की तरफ से विश्वास का मत लेने का प्रस्ताव पेश किए जाने का कार्यक्रम है। माना जा रहा है कि संसद में विश्वास का मत लेने के दौरान अपना संबोधन कर प्रधानमंत्री प्रचण्ड अपने इस्तीफे की घोषणा करने वाले हैं। हालांकि माओवादी पार्टी संसदीय दल के प्रमुख सचेतक हितराज पाण्डे ने दावा किया कि चाहे जितना कम वोट मिले पर प्रचण्ड विश्वास के मत के दौरान मत विभाजन जरूर कराएंगे।

इधर, नए गठबन्धन ने कल प्रधानमंत्री प्रचण्ड द्वारा अपने पद से इस्तीफा देते ही सरकार बनाने के लिए दावा पेश करने की तैयारी की है। नेकपा एमाले के अध्यक्ष केपी शर्मा ओली के नेतृत्व में गठबन्धन सरकार बनाने का दावा पेश किया जाएगा। आज नेपाली कांग्रेस और एमाले के शीर्ष नेताओं के बीच हुई बैठक में प्रचण्ड के इस्तीफा देने के साथ ही दो तिहाई सांसदों के हस्ताक्षर सहित राष्ट्रपति के पास सरकार बनाने का दावा पेश किए जाने की जानकारी दी गई है।

नेपाली कांग्रेस के महामंत्री गगन थापा ने बताया कि आज ही सभी घटक दलों को अपने अपने सांसदों के हस्ताक्षर सहित का समर्थन पत्र तैयार करने को कह दिया गया है। कांग्रेस की तरफ से समर्थन सहित का हस्ताक्षर ओली को सौंप दिया गया है। एमाले के प्रमुख सचेतक महेश बतौर्ला ने कहा कि सभी समर्थक दलों का हस्ताक्षर आज देरशाम तक पहुंचने की जानकारी दी है।

ओली को प्रधानमंत्री बनाने के लिए एमाले के 78 सांसदों के अलावा नेपाली कांग्रेस के 89, राष्ट्रीय प्रजातंत्र पार्टी के 14, जनता समाजवादी पार्टी के 12, जनमत पार्टी के 6, लोकतांत्रिक समाजवादी पार्टी के 4 और नागरिक उन्मुक्ति पार्टी के 4 सांसदों का समर्थन मिलने का निर्णय हो चुका है। 275 सदस्यीय प्रतिनिधिसभा में ओली 207 सांसदों के समर्थन से सरकार बनाने का दावा पेश करने वाले हैं।

नेपाल: पूरे सदन के समर्थन से प्रधानमंत्री बने प्रचण्ड की एक चौथाई सांसदों के साथ हो रही विदाई

काठमांडू। नेपाल में आमचुनाव के बाद दो बड़े राजनीतिक दलों के बीच दूरी बढ़ा कर खुद प्रधानमंत्री बने पुष्पकमल दाहाल को पहली बार पूरे सदन का समर्थन मिला था। शुक्रवार को उनकी विदाई से पहले उनके पक्ष में एक चौथाई से भी कम सांसदों का समर्थन रह गया है।

32 सीटों के साथ तीसरी बड़ी पार्टी के नेता प्रचण्ड की प्रधानमंत्री के रूप में शुक्रवार को विदाई तय है। पहली बार प्रधानमंत्री चुने जाने के बाद जब उन्होंने विश्वास मत हासिल किया था तो उन्हें 275 सदस्यों वाले सदन में 273 सांसदों का समर्थन मिला था। अब जबकि उनकी सरकार अल्पमत में आ गई है और शुक्रवार को वो अपना विश्वास का मत लेने जा रहे हैं तो उनके पक्ष में महज 63 सांसदों का समर्थन रह गया है।

नेपाली राजनीति में हमेशा ही उथलपुथल लाने का दावा करने वाले प्रचण्ड खुद ही इस उथलपुथल के शिकार हो गए हैं। 32 सीटों के साथ कभी सबसे बड़ी पार्टी नेपाली कांग्रेस के 89 सांसदों के साथ मिल कर सरकार चलाया तो कभी अचानक रातों रात पलटी मार कर 78 सांसदों के साथ दूसरी बड़ी पार्टी रहे नेकपा एमाले के साथ सरकार चलाई।

प्रचण्ड खुलेआम यह बात कहते थे कि उनके पास 32 का जादुई नम्बर है जो कभी इधर तो कभी उधर करता रहेगा।

प्रचण्ड ने कई बार दावा किया कि गठबन्धन बदलता रहेगा पर प्रधानमंत्री वो ही रहेंगे और पूरे पांच साल तक रहेंगे लेकिन ऐसा नहीं हो पाया। उनके बड़बोलेपन से आजिज आकर देश की दोनों सबसे बड़ी पार्टियां विपरीत विचारधारा की होने के बावजूद एक हुईं और जल्द ही प्रचण्ड को अपदस्थ कर दो तिहाई की बहुमत वाली सरकार बनाने जा रही हैं।

अब तक प्रचण्ड के साथ रहे नेकपा एमाले के अलावा जनता समाजवादी पार्टी, राष्ट्रीय प्रजातंत्र पार्टी, जनमत पार्टी, लोकतांत्रिक समाजवादी पार्टी, नागरिक उनमुक्ति पार्टी और राष्ट्रीय जनमोर्चा सबने साथ छोड़ दिया।

प्रमुख प्रतिपक्षी दल नेपाली कांग्रेस के अलावा इन सभी दलों ने शुक्रवार को होने वाले विश्वास मत के खिलाफ मतदान करने का फैसला कर लिया है।

प्रचण्ड के पक्ष में अब तक माओवादी के 32, राष्ट्रीय स्वतंत्र पार्टी के 21 और एकीकृत समाजवादी के 10 सांसदों का समर्थन ही दिख रहा है। हालांकि राजनीतिक गलियारों में यह भी अफवाह है कि कल विश्वास मत के दौरान एकीकृत समाजवादी पार्टी के 10 में से 5 सांसद फ्लोर क्रॉस कर सकते हैं। इस दल के दो प्रमुख सांसदों प्रेम आले और किसान श्रेष्ठ ने प्रचण्ड सरकार के विरोध में मतदान करने का ऐलान कर दिया है।

नाटो ने रूस-चीन संबंधों के गहराने पर चिंता व्यक्त की

वाशिंगटन: 32 सदस्यीय नाटो ने बुधवार को रूस और चीन के बीच गहराते संबंधों और चीन के आक्रामक व्यवहार पर चिंता व्यक्त की. वाशिंगटन शिखर सम्मेलन घोषणापत्र में कहा गया है कि पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना (पीआरसी) की घोषित महत्वाकांक्षाएं और दबावपूर्ण नीतियां हमारे हितों, सुरक्षा और मूल्यों को चुनौती देती रहती हैं.

घोषणापत्र में कहा गया है कि रूस और पीआरसी के बीच गहराती रणनीतिक साझेदारी और नियम-आधारित अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था को कमजोर करने और उसे नया आकार देने के उनके परस्पर-मजबूत प्रयास गंभीर चिंता का कारण हैं.

उत्तरी अटलांटिक संधि संगठन (नाटो) की बैठक में भाग लेने वाले राष्ट्राध्यक्षों और सरकार की ओर से जारी घोषणापत्र में कहा गया है कि हम हाइब्रिड, साइबर, अंतरिक्ष और अन्य खतरों और राज्य और गैर-राज्य अभिनेताओं की दुर्भावनापूर्ण गतिविधियों का सामना कर रहे हैं. इस बैठक के दौरान स्वीडन को अपने 32वें सदस्य देश के रूप में स्वागत किया गया.

इसमें कहा गया है कि फिनलैंड और स्वीडन का ऐतिहासिक प्रवेश उन्हें सुरक्षित बनाता है और गठबंधन को मजबूत बनाता है, जिसमें हाई नॉर्थ और बाल्टिक सागर भी शामिल हैं. घोषणापत्र में कहा गया है कि यूक्रेन पर रूस के पूर्ण पैमाने पर आक्रमण ने यूरो-अटलांटिक क्षेत्र में शांति और स्थिरता को नष्ट कर दिया है.

वैश्विक सुरक्षा को गंभीर रूप से कमजोर कर दिया है, साथ ही कहा गया है कि रूस सहयोगियों की सुरक्षा के लिए सबसे महत्वपूर्ण और प्रत्यक्ष खतरा बना हुआ है. इसमें कहा गया है कि आतंकवाद हमारे नागरिकों की सुरक्षा और अंतर्राष्ट्रीय शांति और समृद्धि के लिए सबसे प्रत्यक्ष खतरा है.

75वीं वर्षगांठ शिखर सम्मेलन में, नाटो ने अपनी रोकथाम और रक्षा को मजबूत करने, यूक्रेन को दीर्घकालिक समर्थन बढ़ाने के लिए कदम उठाए ताकि वह स्वतंत्रता के लिए अपनी लड़ाई में जीत हासिल कर सके और नाटो की साझेदारी को गहरा कर सके. घोषणापत्र में कहा गया है कि हम यूक्रेन के राष्ट्रपति (वोलोडिमिर) जेलेंस्की और ऑस्ट्रेलिया, जापान, न्यूजीलैंड, कोरिया गणराज्य और यूरोपीय संघ के नेताओं का गर्मजोशी से स्वागत करते हैं.

इससे पहले दिन में, नाटो महासचिव जेन्स स्टोलटेनबर्ग ने कहा कि गठबंधन रूस, चीन, ईरान और उत्तर कोरिया के बढ़ते गठबंधन के खिलाफ दबाव बनाने के लिए इंडो-पैसिफिक में अपनी साझेदारी को मजबूत करेगा. उन्होंने कहा कि हम यूक्रेन के लिए नाटो समन्वय और सुरक्षा सहायता एवं प्रशिक्षण स्थापित करके तथा दीर्घावधि के लिए सतत समर्थन सुनिश्चित करके यूक्रेन के लिए अपना समर्थन बढ़ाएंगे. यूक्रेन को समर्थन दान नहीं है. यह हमारे अपने सुरक्षा हित में है.

डेमोक्रेट्स को बाइडेन के हारने की आशंका, मैदान से हटने का आह्वान

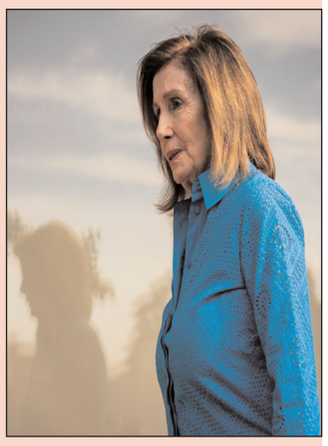

वाशिंगटन। राष्ट्रपति जो बाइडन की पूर्व सहयोगी नैंसी पेलोसी ने कहा है कि बाइडेन को जल्द इस बात पर फैसला लेना चाहिए कि उन्हें व्हाइट हाउस की रेस में रहना है या नहीं। पेलोसी की टिप्पणी से संकेत मिलता है कि बाइडेन को साथी डेमोक्रेट नेताओं की ओर से संदेह की नई लहर का सामना करना पड़ सकता है।

अमेरिका के प्रमुख समाचार पत्र द वाशिंगटन पोस्ट के अनुसार, राष्ट्रपति बाइडेन को कल पद छोड़ने के लिए दबाव की नई लहर का सामना करना पड़ा। डेमोक्रेट्स ने चिंता व्यक्त की है कि वह नवंबर में डोनाल्ड ट्रंप से हार सकते हैं। इस संबंध में कांग्रेस सदस्य और सदन की पूर्व अध्यक्ष नैंसी पेलोसी ने अब तक का सबसे मजबूत सार्वजनिक संकेत दिया कि डेमोक्रेट बाइडेन की उम्मीदवारी पर विभाजित थे। हालांकि उन्होंने कहा कि बाइडेन जो भी निर्णय लेंगे वह उनका समर्थन करेगी।

इस बीच डेमोक्रेट और न्यूयॉर्क के प्रतिनिधि पैट रयान ने भी बाइडेन से देश की भलाई के लिए उम्मीदवारी छोड़ने का आह्वान किया है। वह सार्वजनिक रूप से ऐसा बयान देने वाले आठवें हाउस डेमोक्रेट हैं। जॉर्ज क्लूनी को भी आशंका है कि बाइडेन को चुनाव से हट जाना चाहिए। उल्लेखनीय है कि क्लूनी पिछले महीने राष्ट्रपति के लिए 28 मिलियन डॉलर के फंड रेजर की मेजबानी कर चुके हैं।

इजराइल ने गाजा सिटी खाली करने का दिया आदेश

यरुशलम। इजराइल की सेना ने बुधवार को फिर गाजा सिटी को खाली

करने के आदेश दिया है। इसके साथ युद्ध विराम की पहल के बीच युद्ध भड़कने की आशंका बढ़ गई है। इजराइली सेना ने गाजा सिटी में पर्चे गिराए हैं। इसमें लोगों से दक्षिण की ओर जाने का आह्वान किया गया है। इसमें कहा गया है कि गाजा शहर खतरनाक युद्ध क्षेत्र बना रहेगा।

इस बीच, मध्य गाजा में इजराइल के हवाई हमले में 20 फलस्तीनियों की मौत हो गई। इनमें छह बच्चे और तीन महिलाएं शामिल हैं। इजराइल के गाजा सिटी छोड़ने के ताजा आदेश को घुसपैठ से जोड़कर देखा जा रहा है। यह निकासी आदेश ऐसे समय आया है जब अमेरिका, मिस्र और कतर के मध्यस्थ दोहा में वार्ता कर युद्धविराम समझौते का प्रयास कर रहे हैं।

सऊदी एयरलाइंस के विमान में लगी आग, पेशावर में लैंड हुई फ्लाइट, जानें कैसे बची यात्रियों की जान

रियाद: पाकिस्तान ऑब्जर्वर की रिपोर्ट के अनुसार गुरुवार को पाकिस्तान के पेशावर हवाई अड्डे पर उतरते समय सऊदी एयरलाइंस के विमान में आग

लग गई. विमान में 297 लोग सवार थे. रिपोर्टों के अनुसार लैंडिंग गियर में कुछ समस्या के कारण यह घटना हुई. हालांकि, घटना में किसी के हताहत होने की खबर नहीं है.

यात्रियों और चालक दल के सदस्यों को सुरक्षित बाहर निकाल लिया गया. अभी तक किसी के हताहत होने की सूचना नहीं है. जानकारी के मुताबिक विमान ने रियाद से पेशावर के लिए उड़ान भरी थी. सऊदी एयरलाइंस ने एक बयान जारी कर कहा कि रश792 विमान के पाकिस्तान के पेशावर अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर उतरते समय उसके एक टायर से धुआं निकलने लगा.

एवेक्युएशन स्लाइड से बाहर निकाले लोग

बयान में कहा गया, "विमान को तुरंत रोक दिया गया और संबंधित अधिकारियों को सूचित किया गया. सभी यात्रियों और चालक दल को एवेक्युएशन स्लाइड के माध्यम से सुरक्षित निकाल लिया गया है. विमान का अब विशेषज्ञों द्वारा तकनीकी मूल्यांकन किया जा रहा." एक्स पर एक पोस्ट में ग्लोबल डिफेंस इनसाइट ने विमान के कुछ हिस्सों की तस्वीरें अपलोड कीं, जिसमें विमान से धुआं निकलता दिखाई दे रहा है.

जल्द बुझाई आग

ग्लोबल डिफेंस इनसाइट ने अपनी पोस्ट में लिखा है, "एयर ट्रैफिक कंट्रोलर ने तुरंत पायलट और फायर एंड रेस्क्यू सर्विसेज को घटना की जानकारी दी, जो समय पर पहुंचे और आग को जल्दी से बुझाने और एक बड़ी दुर्घटना को रोक दिया."

इसमें कहा गया है, "सभी 276 यात्रियों और 21 चालक दल के सदस्यों को इन्फ्लेटेबल स्लाइड का उपयोग करके विमान से सुरक्षित रूप से निकाला गया. फ्लाइट रियाद से पेशावर के लिए रवाना हुई थी."

बाइडेन के लिए भारतीय-अमेरिकी समर्थन में 19 प्रतिशत की तीव्र गिरावट

वाशिंगटन: बुधवार को जारी एशियाई-अमेरिकी मतदाताओं के सबसे लंबे समय तक चलने वाले सर्वेक्षण, द्वि-वार्षिक एशियाई अमेरिकी मतदाता सर्वेक्षण (एएवीएस) के अनुसार, 2020 के अंतिम चुनाव और 2024 के चुनाव चक्र के बीच भारतीय अमेरिकियों की ओर से मौजूदा राष्ट्रपति जो बाइडेन का समर्थन करने में 19 प्रतिशत की तीव्र गिरावट आई है.

एशियन एंड पैसिफिक आइलैंडर अमेरिकन वोट (एपीआईएवोट), एएपीआई डेटा, एशियन अमेरिकन एडवांसिंग जस्टिस (एएजेसी) और एएआरपी की ओर से किए गए सर्वेक्षण से पता चलता है कि 2020 में 65 प्रतिशत के मुकाबले इस साल 46 प्रतिशत भारतीय अमेरिकी बाइडेन को वोट देने का इरादा रखते हैं. 19 प्रतिशत की चौंकाने वाली गिरावट सभी एशियाई-अमेरिकी जातीय समुदायों में सबसे बड़ी है.

सर्वेक्षण के अनुसार, जो 27 जून को बाइडेन और उनके रिपब्लिकन प्रतिद्वंद्वी

डोनाल्ड ट्रंप के बीच होने वाली राष्ट्रपति पद की बहस से पहले आयोजित किया गया था, 46 प्रतिशत एशियाई अमेरिकियों के बाइडेन को वोट देने की संभावना है, जो 2020 से आठ प्रतिशत अंक कम है, जबकि 31 प्रतिशत के ट्रंप को वोट देने की संभावना है, जो 2020 से एक अंक बढ़ा है.

हालांकि, ट्रंप की अनुकूलता रेटिंग में केवल 2 प्रतिशत की वृद्धि हुई है (2020 में 28 प्रतिशत से 2024 में 30 प्रतिशत), बावजूद इसके कि भारतीय अमेरिकियों से बाइडेन के समर्थन में रिकॉर्ड 19 प्रतिशत की गिरावट आई है. पिछले दो दशकों में एशियाई अमेरिकी अमेरिका में पात्र मतदाताओं का एक तेजी से बढ़ता समूह रहा है, जो पिछले चार वर्षों में ही 15 प्रतिशत बढ़ा है और 2016 के बाद से हर संघीय चुनाव में रिकॉर्ड संख्या में मतदान कर रहा है. 2020 में, एशियाई अमेरिकी मतदाताओं की संख्या में वृद्धि (विशेष रूप से पहली बार मतदान करने वाले) युद्ध के मैदान वाले राज्यों में बाइडेन की जीत के लिए महत्वपूर्ण थी.